calibre of railwaymen of all ranks. I trust that in my renewed association with them, I shall have opportunity to from a still better opinion of their ability and devotion to duty and that they will continue to give of their best to the Railways and the Country.

Hon'ble Members will share my great concern that the Railways are increasingly becoming the target of attack and violence arising from diverse matters not even remotely connected with the Railways or their operation. This most disconcerting trend seems, if at all, to be on the increase. I need not catalogue the numerous instances of such lawless activities which have been making the task of railwaymen increasingly difficult and hazardous and are becoming a growing impediment to railway operation. Quite often our efforts to improve rail services are thwarted by these activities and by damage done to our rolling stock and installations. In sharing my worries with the Hon'ble Members It would appeal to leaders of public opinion in and outside the House to lend their weight so that the Railways can run smoothly in every corner of the Country.

MR. DEPUTY SPEAKER: The House stands adjourned till 2.15 P.M.

13.20 hours

The Lok Sabha adjourned for Lunch till Fifteen minutes past Fourteen of the clock.

The Lok Sabha re-assembled after Lunch at Twenty Minutes Past Fourteen of the Clock.

[**Shri R. D. Bhandare** *In the Chair*]

MOTION OF NO-CONFIDENCE IN THE COUNCIL OF MINISTERS—*Contd.*

MR. CHAIRMAN: The House will now take up further consideration of the following motion moved by Shri P. Ramamurti on the 18th February, 1969, namely :—

"That this House expresses its want of confidence in the Council of Ministers."

श्री मनुभाई पटेल (डभोई) : सभापति महोदय, यहां पर जो अविश्वास प्रस्ताव साम्यवादी और संयुक्त समाजवादी पक्षों की ओर से रक्खा गया है उसमें दो तीन प्वाइन्ट्स रक्खे गये हैं जिनके बारे में उनका खास तौर पर इल्जाम है कि कांग्रेस और कांग्रेस गवर्नमेंट कोई ठोस कदम नहीं उठा रही है। मुझे लगता है कि उनके इस अविश्वास प्रस्ताव में कोई दम नहीं है क्योंकि उन्होंने तीनों प्रश्न जो रक्खे हैं, अर्थात् शिव सेना, चुनाव परिणाम और रीजनल इम्बैलेंस, उनमें से उन्होंने सबसे ज्यादा वजन शिव सेना के सवाल को दिया है। इस प्रस्ताव को पेश करते हुए श्री राममूर्ति ने सबसे ज्यादा वजन शिव सेना के सवाल पर दिया। कल इस प्रस्ताव का जिक्र करते हुए माननीय सदस्य श्री हीरेन मुकर्जी ने कहा कि यह कोई रिचुअल नहीं है। लोग कहते हैं कि अविश्वास प्रस्ताव रिचुअल की तरह पर नहीं है, लेकिन अविश्वास प्रस्ताव रखने वाले और उनकी पार्टी की तरफ से यहां पर आज कोई हाजिर नहीं है। रख दिया, ठीक है, पेश हो जायेगा। अगर यह उनका रिचुअल नहीं है तो फिर क्या है ?

श्री स० मो० बनर्जी (कानपुर): सब मौजूद हैं। एक-एक पचास-पचास के बराबर है।

श्री मनुभाई पटेल : कहां मौजूद हैं ? सब गैरहाजिर हैं। उनके लिये इसकी कोई गम्भीरता नहीं है क्योंकि उनका साधन में कोई विश्वास नहीं है। एनी स्टिक इज ए गुड स्टिक टु बीट विथ। जो कुछ हाथ में पड़ जाये उसी को लगाओ।

आप शिव सेना के सवाल को लीजिये। बम्बई के बारे में हम सब मानते हैं कि कभी कांग्रेस ने—उसकी पहले से आज तक की

[श्री मनु भाई पटेल]

तवारीख देख लीजिये–फिरकापरस्ती, कौमवाद और जातिवाद को प्रश्रय नहीं दिया। जब भी इस तरह की कोई प्रवृत्ति वहां चली, उसने उसके खिलाफ कदम उठाया है। लेकिन समाजवादी पक्ष और प्रजासमाजवादी पक्ष ने बम्बई में कम्यूनिस्टों के साथ और शिव सेना के साथ हाथ मिलाकर चुनाव को लड़ा। प्रजासमाजवादी नेता श्री नाथ पाई ने जेल में मुलाकात कर कहा कि बाल ठाकरे नेता हैं, उनको सरकार को छोड़ना चाहिये। वह उन की वकालत करने निकले। आज इसको समझना चाहिये कि प्रजा समाजवादी पार्टी कहां है।

जहां तक संयुक्त समाजवादी पार्टी का सवाल है, साफ बात है कि कम्यूनिस्ट पार्टी का जो तरीका है कैरेक्टर असैसिनेशन का, उसी झंडे को लेकर संयुक्त समाजवादी पार्टी ने काम शुरू कर दिया है।

श्री एस० एम० जोशी (पूना) : शिव सेना क्या है ?

श्री मनुभाई पटेल : शिवसेना से कहां साम्य है, मैं बतलाऊंगा कि शिव सेना की जो आइडियोलोजी है उसका मूल स्रोत कहां है। कम्यूनिस्ट पार्टी क्लास स्ट्रगल के जरिये देश में अव्यवस्था पैदा करना चाहती है और क्लास स्ट्रगल का झंडा उठाकर दूसरे जितने संगठन काम करते हैं उन सब संगठनों को साथ लेती है। पिछले सेशन में जब मैंने केरल की लाल सेना के बारे में गृह मंत्री जी से सवाल पूछा था कि उस पर कानूनी पाबन्दी लगाई जायेगी या नहीं, तब उन्होंने जवाब दिया था कि कानूनी पाबन्दी नहीं लगाई जा सकती है। पब्लिक ओपीनियन क्रिएट करने के लिये लोगों को उनकी विचारधारा को समझाना पड़ेगा, लोगों के पास जाना पड़ेगा। उस समय कम्यूनिस्ट पार्टी ने ताली बजाकर हर्ष प्रकट किया था कि लाल सेना पर कोई पाबन्दी नहीं लगाई जा रही है। जैसे लाल सेना का सवाल था उसी तरह से शिव सेना का सवाल है।

शिव सेना ने जो कुछ किया, उसे हम पसन्द नहीं करते, इतना ही नहीं, शिव सेना ने बम्बई के नाम पर बट्टा लगाया क्योंकि भारत में यदि कोई शहर शहरों की मार्फत भारत का प्रतिनिधित्व कर सकता है तो वह बम्बई है। बम्बई कास्मोपोलिटन शहर है, उसमें एक पंचरंगीपन है। हमारे संविधान में सबसे बड़ा जो कांस्टिट्यूशनल प्राविजन है कि हमारे देश का सिटिजेन कहीं जाकर बस सकता है और अपना धन्धा कर सकता है, इस मूल विचार के विरुद्ध शिव सेना है। बम्बई के पंचरंगीपन से उसका विरोध है। हमारे देश में जितने बड़े-बड़े शहर हैं, जैसे कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली, इन सबसे ज्यादा पंचरंगीपन बम्बई में है। शिव सेना को समझना चाहिये कि उसने जो कदम उठाया है उससे वह बम्बई के इस स्वरूप को खत्म कर रही है।

शिव सेना ने जो कुछ काम किया है वह बम्बई के इतिहास में इससे पहले नहीं हुआ है। गुलामी के जमाने में जो आन्दोलन वहां हुए हैं, पिछले पचास साल में जो आन्दोलन वहां हुए हैं, जो कोई भी चीज हिन्दू-मुस्लिम दंगों के स्वरूप में या ट्रेड यूनियन मूवमेंट की प्रवृत्तियों के स्वरूप में, हड़तालों के स्वरूप में और इसके बाद संयुक्त महाराष्ट्र के लिए जो आन्दोलन चला था उसके स्वरूप में हमारे सामने प्रकट हुई थी, और उसके बाद बम्बई बन्द का आन्दोलन करके जो हिंसा का आन्दोलन चलाया गया था, उस सबसे भिन्न शिव सेना का आन्दोलन है, उस सबके स्वरूप से भिन्न शिव सेना के आन्दोलन का स्वरूप है। उसकी जो कार्रवाइयां हैं उनको कभी भी कोई पसन्द नहीं कर सकता है, कोई भी उनको मंजूर नहीं कर सकता है। ये जो चीजें हैं ये भारत के लोगों के सामने आनी चाहियें, इनको प्रकट

किया जाना चाहिये। कभी भी कांग्रेस ने इस तरह की प्रवृत्ति को बरदाश्त नहीं किया है। लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी की मैं बात करता हूं। इन दोनों पार्टीज़ ने हाथ मिलाया है, दोनों एक ही ध्येय को लेकर आगे बढ़ रही हैं। इन दोनों पार्टीज़ की जो विचारधारा है, उसके मूल में एक ही चीज़ काम करती है। कम्युनिस्ट पार्टी के लोग भी कारेक्टर एसेसिनेशन में विश्वास करते हैं। वे समझते हैं कि किसी संस्था को गिराना हो तो उस पार्टी का जो प्रोग्राम है, उस पार्टी की जो पालिसी है, उसको लेकर और उस स्तर पर उससे लड़ कर उसको गिराया नहीं जा सकता है। पालिसी और प्रोग्राम को लेकर ये जनता की आंखों में धूल नहीं डाल सकते हैं। इसलिए इनका विश्वास है कि एक एक उस पार्टी के लीडर को चुनकर, कांग्रेस पार्टी के नैशनल लीडर्ज़ को चुनकर उनका कारेक्टर एसेसिनेशन किया जाए और उस पार्टी को और उन नेताओं को बदनाम किया जाए। इसी कार्यक्रम को एस.एस.पी. ने भी अपनाया है। यही एस.एस.पी. वाले भी करते हैं। एस.एस.पी. वालों ने पहले तो प्रधान मंत्री के मिक कोट के सवाल को उठाया, फिर डायमंड नैक्लेस के सवाल को उठाया और इस सवाल को पिछले सैशनों में उठाते रहे। पिछले सैशन में इन्होंने फाइनेंस मिनिस्टर के लड़के वाली बात को लेकर उनको बदनाम करने की कोशिश की। आज होम मिनिस्टर के लिए इन्होंने कहा है कि ये शिव सेना को प्रश्रय दे रहे हैं और इस आधार पर उनको बदनाम करने की कोशिश की है। इन लोगों का और कम्युनिस्ट पार्टी का भी यह विश्वास है कि कांग्रेस के टाप के चार पांच लीडर्ज़ को लेकर उनका एक एक करके कारेक्टर एसेसिनेशन किया जाए और अगर ऐसा करने में वे सफल हो जाते हैं तो कांग्रेस पार्टी खत्म हो जाएगी। इसी विश्वास को लेकर उन्होंने इस अविश्वास के प्रस्ताव को इस सदन में पेश किया है।

सभापति महोदय, मैं इन दोनों पार्टीज़ को बतलाना चाहता हूं कि इनका जो उद्देश्य है उस उद्देश्य में ये कभी सफल नहीं हो सकते हैं। इसका कारण यह है कि कांग्रेस पार्टी का जहां तक सम्बन्ध है उसकी कभी भी शिव सेना के प्रति सहानुभूति नहीं रही है, उसने कभी भी इस पार्टी को प्रश्रय नहीं दिया है। जहां तक कांग्रेस गवर्नमेंट का सम्बन्ध है उसने शिव सेना के खिलाफ बराबर कदम उठाया है। बम्बई कांग्रेस कमेटी के ऊपर भी इस सम्बन्ध में आरोप लगाया जाता है। उसने भी कभी इसके प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाई है। कांग्रेस संस्था का कभी उसके साथ सम्बन्ध नहीं रहा है। उसने कभी भी इसको प्रश्रय नही दिया है।

जहां तक इस पर पाबन्दी लगाये जाने की बात है, अगर लाल सेना पर कानूनी प्रतिबन्ध लगा दिया गया होता, यदि लश्कर सेना पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया होता, यदि आर.एस.एस. पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया होता, जितनी दूसरी सेनायें हैं उन पर लगा दिया गया होता तो शिव सेना पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया जाना चाहिये था। शिव सेना ने बड़ा खराब काम किया है। उसने कानून अपने हाथ में लिया। रोड सेफ्टी के नियमों को तोड़ा, फुट पाथ्स को क्लीयर करना शुरू किया, बसें जलाईं, और पुलिस ने उसके काम में हस्तक्षेप नहीं किया, यह ठीक नहीं था। जब यहां से होम मिनिस्टर वहां गए तो उनके सामने भी कुछ प्रदर्शन उन्होंने किये और कुछ हिंसात्मक प्रदर्शन भी किये, वह भी ठीक नहीं था। इसके बाद जब फाइनेंस मिनिस्टर श्री मोरारजी देसाई वहां गए तो उनके सामने भी प्रदर्शन किया, वह भी ठीक नहीं किया। ये सब उसने बुरे काम किये। मैं

[श्री मनु भाई पटेल]

होम मिनिस्टर से प्रार्थना करता हूं कि इस सम्बन्ध में जो सी.आई.डी. की रिपोर्ट है उसको तलाश करके, उसको हमारे सामने रखने की कृपा करें ताकि हमें पता चल सके कि उसमें क्या है। क्या यह भी सच नहीं है कि श्री मोरारजी देसाई तथा दूसरे नेताओं पर सलफ्यूरिक एसिड डालने का काम भी वे करना चाहते थे? क्या जो इस तरह के पार्टी के बड़े बड़े लोग हैं उनकी आंखों में सलफ्यूरिक एसिड गिराने का प्रोग्राम भी उनके कार्यक्रम का एक अंग नहीं था? मैं जानना चाहता हूं कि प्रजा सोशलिस्ट पार्टी चुप क्यों है? उसने बम्बई में इलैकशन के दिनों में उसके साथ हाथ मिलाया था, क्या इस वास्ते चुप है? मैं आशा करता हूं कि सभी पार्टीज इन प्रवृत्तियों से अपने को अलग रखेंगी और इनकी निन्दा करेंगी। सबको इस मामले में अपने आपको अलग रखना चाहिए। मैं मानता हूं कि पोलराइजेशन हो रहा है। आइडियोलोजिकल पोलराइजेशन हो जाए तो अच्छा है। लेकिन कुछ लोग हैं जिनका क्लास स्ट्रगल में विश्वास है। सत्ता हासिल वे करना चाहते हैं। ऐसा वे अहिंसा से करें तो ठीक है लेकिन हिंसा से भी वे ऐसा करने को तत्पर हैं। कांस्टीट्यूशनल तरीके से इसको करें तब तो ठीक है लेकिन उनका विश्वास है कि अनकांस्टीट्यूशनल तरीकों से भी सत्ता हासिल की जानी चाहिए। डेमोक्रेसी में उनका नाममात्र के लिए ही विश्वास है। असल में वे डेमोक्रेसी में विश्वास नहीं रखते हैं। एक्सप्लायटेशन करके सत्ता का दुरुपयोग करके कांस्टीट्यूशन को किस तरह खत्म किया जाए, यह उनका एम है। उनके जो तरीके हैं वे आज एक्सपोज्ड हैं। जनता उनको अच्छी तरह से समझ गई है।

हमारे राममूर्ति जी ने इस अविश्वास के प्रस्ताव को पेश किया है। वह कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बन्ध रखते हैं। उसके वह नेता हैं। उन्होंने कहा है कि जो घटनायें घटी हैं, उनका जिक्र राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में नहीं है। मैं उनको राष्ट्रपति जी के भाषण में से इसके बारे में पढ़कर सुनाना चाहता हूं।

> "Last year, I referred in my speech to certain disturbing trends in our national affairs. Parochial, regional, caste and communal movements have caused tension and violence in the country."

आगे उन्होंने कहा है कि नैशनल इंटैग्रेशन कमेटी के सामने यह मसला पेश हुआ था।

> "However, while legal and administrative measures are necessary, the fight against these fissiparous movements has to be carried to the broad masses of our people. The key to success lies in fostering the concept of Indian Nationalism and secularism in the minds and hearts of our people."

यह तरीका है। हम को पब्लिक ओपिनियन क्रियेट करनी होगी। साथ ही साथ हम को लैजिस्लेटिव एकशन भी लेना होगा और उसके बारे में इस सदन को सोचना होगा। देश की एकता, देश की अखंडता और देश में राष्ट्रीयता की भावना पैदा हो और उस में कोई बाधा न डाल सके, इसके बारे में क्या किया जाना चाहिये यह इस सदन को सोचना होगा। ऐसी प्रवृत्तियों का मुकाबला करने के लिए प्रजा को भी तैयार किया जाना चाहिये, ऐसी प्रवृत्तियों के खिलाफ आन्दोलन किया जाना चाहिये।

जहां तक चुनाव रिजल्ट्स का सम्बन्ध है, चार प्रान्त जहां चुनाव हुए हैं उन में से तीन की बात न करके केवल बंगाल की ही बात की जाती है। बंगाल का जहां तक सम्बन्ध है, बंगाल की आज भी क्या हालत

है, आपने इसको समाचार-पत्रों में पढ़ा होगा और रेडियो पर भी सुना होगा। वहां एक मत नहीं हुआ जा सका है कि कौन नेता बने। आपस में झगड़ा चल रहा है। फिर आप देखें कि युनाइटिड फ्रंट का अनुभव क्या रहा है, तजुर्बा क्या रहा है। पिछला तजुर्बा तो यही रहा है कि युनाइटिड फ्रंट आपसी खींचतान के कारण टूट गया था। अब भी वही हालत होने वाली है। जो चौदह पार्टियों का युनाइटिड फ्रंट है उन में आइडियोलोजिकल एकता है ही नहीं। फिर आप देखें कि उत्तर प्रदेश की बात नहीं की जाती है। पंजाब की बात नहीं की जाती है जहां कम्युनिस्टों को उखाड़ फेंका गया है। बिहार की बात नहीं की जाती है जहां कम्युनिस्टों का नामो-निशान मिट गया है। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को क्लीअर मेजोरिटी मिल गई है, उसके बारे में कोई बात नहीं की जाती है। बात करते हैं तो केवल बंगाल की। बंगाल में भी कोई एक पार्टी बहुमत में नहीं आई है। युनाइटिड फ्रंट में वहां चौदह पार्टियां हैं और उसका वहां बहुमत है। हमें सोचना होगा किस पार्टी की क्या विचारधारा है, कौन सी पार्टी लोकतंत्र में विश्वास करती है और कौन सी नहीं करती है। जिन का लोकतंत्र में विश्वास है, समाजवाद में विश्वास है, वे तो मिल कर काम कर सकती हैं लेकिन जिन का लोकतंत्र में विश्वास नहीं है और जिन्होंने इलैक्शन के समय पर इकट्ठे हो कर कांग्रेस का विरोध करना शुरू कर दिया, उनका भी वही हाल होगा जो कि लास्ट यू एफ मिनिस्टरी का हुआ था। तब वहां पर चीफ मिनिस्टर पी. सी. घोष का असैम्बली हाल में ही सिर फोड़ दिया गया था, असैम्बली को बुलाया नहीं गया और जो कम्युनिस्ट पार्टी के वहां स्पीकर थे उन्होंने कांस्टीटयूशन को ताक पर रख कर अपना काम करना शुरू कर दिया था। इसीलिए मैं कहता हूं कि :

If with the constitution, with the help of the Constitution;
If without the Constitution, without it and in spite of it.

सत्ता पर कब्जा करने की जो नीति है इसको कभी बरदाश्त नहीं किया जा सकता है। यह कम्युनिस्टों की नीति है। इस नीति को देश की जनता समझ गई है। कांग्रेस पार्टी ही इस मत की नहीं है कि उसकी यह नीति है बल्कि देश की जनता भी इस मत की है कि उसकी यही नीति है।

मैं श्री राम मूर्ति की सूचना के लिए राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में से पढ़कर सुनाता हूं :

"The country also faces the danger of violence from certain extremist political groups. The doctrines propounded by these groups are clearly subversive of our Constitution and the rule of law and detrimental to orderly government and progress. There is no place in a democratic society for groups which seek to change the social and political structure by armed insurrection."

इसका खयाल भी रखना पड़ेगा। जो वायोलेंस में विश्वास रखते हैं और दिखावे के लिए कहते हैं कि वे संविधान को मानते हैं, जो डिक्टेटरशिप में विश्वास रखते हैं लेकिन दिखावे के लिए कहते हैं कि हमारा लोकतंत्र में विश्वास है, उनके असली स्वरूप को देश की जनता के सामने हम सब को लाना होगा। सभी राष्ट्रवादियों को, सभी देशवासियों को ऐसे लोगों की पहचान हो जानी चाहिये। ये वे लोग हैं जिन्होंने द्वितीय महायुद्ध को पहले तो इम्पीरिल वार कहा और बाद में पीपल्ज वार कहना शुरू कर दिया, जिन्होंने 1942 में देश के साथ गद्दारी की, जिन्होंने चीनी एग्रेशन के समय जब देशवासी देश की सीमाओं की रक्षा करने में लगे हुए थे यह कहा कि हमने चीन का कुछ हिस्सा ले लिया है और चीन आक्रमणकारी नहीं है, जिन का

[श्री मनुभाई पटेल]

विश्वास अहिंसा में न होकर हिंसा में है, जिनका विश्वास डैमोक्रेसी में न होकर डिक्टेटरशिप में है। ये आज शिव सेना का नाम लेकर आगे आए हैं। हम शिव सेना का कतई बचाव नहीं करते हैं, समर्थन नहीं करते हैं। उस के ख़िलाफ़ कड़े से कड़े कदम उठाने चाहिए, लेकिन जिन पार्टियों का मैंने अभी ज़िक्र किया है, उनका ख़याल रख कर उन का ठीक स्थान बता देना चाहिए।

इन शब्दों के साथ मैं इस अविश्वास-प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (बलरामपुर) : सभापति महोदय, कल मेरा दल इस अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष में खड़ा नहीं हुआ था, इस लिए नहीं कि शासन में हमारा अविश्वास नहीं है, इस लिए भी नहीं कि अन्य दलों की तुलना में हम शासन को हटाने के लिए कुछ कम उत्सुक हैं। हमारा मतभेद केवल अविश्वास-प्रस्ताव के स्वरूप और समय को ले कर था। लेकिन कल मैंने जो चर्चा सुनी, उस से मुझे लगा कि जिन मित्रों ने अविश्वास प्रस्ताव की सूचना दी, उन्होंने कोई ज्यादा गलत काम नहीं किया।

1967 के आम चुनावों में पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिमी बंगाल की जनता ने कांग्रेस को ठुकरा दिया था और 1969 के मध्यावधि चुनावों में जनता ने कांग्रेस को ठुकराने के अपने पूर्व निर्णय पर मुहर लगा दी है। आम चुनावों के बाद देश में दो राजनैतिक प्रयोग हुए : एक मिली-जुली सरकारों का प्रयोग और एक अल्पमत की सरकारों का प्रयोग। मिली-जुली सरकारों का प्रयोग हम ने किया और अल्पमत की सरकारों का प्रयोग कांग्रेस ने किया।

मिली-जुली सरकारों का प्रयोग कांग्रेस के दुःशासन से त्रस्त जनता को राहत देने के लिए था। अलग अलग विचार वाले दल एक-साथ आये, किन्तु उन्होंने अपने मतभेदों पर पर्दा नहीं डाला, उन्होंने एकता का नाटक नहीं रचा। उन्होंने एक नेता चुना, एक दल बनाया और एक न्यूनतम कार्यक्रम के आधार पर जनता की सेवा करने की कोशिश की।

लेकिन अल्पमत की सरकारों का गठन करने में कांग्रेस का उद्देश्य क्या था? उस ने सरदार लछमनसिंह गिल या मंडल या घोष के साथ एक दल नहीं बनाया। उनको अपना नेता नहीं चुना और जनता की भलाई का एक न्यूनतम कार्यक्रम तय करने का नाटक तक नहीं रचा। उस ने केवल चोर दरवाजे से सत्ता हथियाने के लिए अल्पमत की सरकारों को ठूंसा। संसदीय लोकतंत्र की किस कसौटी के आधार पर ये अल्पमत की सरकारें उचित सिद्ध की जा सकती हैं?

आज पंजाब में जनसंघ और अकाली दल फिर से सत्तारूढ़ हो गये हैं। लेकिन गिल कहां हैं? कांग्रेस ने जिन की पीठ थपथपाई थी, वह सरदार गिल कहां हैं? आज वह गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के 'एकला चलो' मंत्र का जाप कर रहे हैं, अपने पापों का प्रायश्चित्त कर रहे हैं। बिहार में गैर-कांग्रेसी दल आज भी सरकार बनाने की स्थिति में हैं। लेकिन कांग्रेस ने जिन मंडल महाराज का समर्थन किया था, वह आज कहां हैं? मंडल महाराज आज पटना में नहीं हैं; वह अपना कमंडल ले कर दिल्ली में विराजमान हैं। पश्चिमी बंगाल की जनता ने संयुक्त मोर्चे को फिर से बहुमत दिया है। लेकिन बेचारे पी० पी० घोष पर मुझे दया आती है। उन की देशभक्ति में मुझे सन्देह नहीं है। लेकिन कांग्रेस के कुकर्म उनको भी ले बैठे।

संयुक्त सरकारों ने जनता की अपेक्षाओं को पूरी तरह से पूर्ण नहीं किया। लेकिन फिर भी कांग्रेस किसी प्रदेश में स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं कर सकी। स्पष्ट है कि कांग्रेस

जनता का विश्वास खो चुकी है। अब न तो उस की नीतियां तथा कार्यक्रम जनता को भाते हैं और न उस का संगठन मतदाताओं को अनुप्राणित कर सकता है।

मध्यावधि चुनावों ने कांग्रेस पार्टी के सिद्धान्त-विहीन और अवसरवादी स्वरूप को स्पष्ट कर दिया है। सत्ता हथियाने के लिए कांग्रेस कितना नीचे गिर सकती है, यह बात साफ हो गई है। पंजाब में जनसंघ को हराने के लिए कांग्रेस ने हिन्दुओं के हितों का रक्षक बनने का दावा किया और उन की संकीर्ण भावनाओं को जगाने में किसी झिझक से काम नहीं लिया। उत्तर प्रदेश में कुछ दल-बदलू कांग्रेसियों के द्वारा जगाये गये जातिवाद का सामना करने के लिए राष्ट्रवाद को जगाने के स्थान पर कांग्रेस ने ब्राह्मणों और वैश्यों में भय की भावना पैदा की। बंगाल में कांग्रेस ने गैर-बंगालियों को संगठित करने का प्रयास किया। बिहार में कांग्रेस ने चुनाव जीतने के लिए पृथक झारखंड राज्य स्थापित करने की मांग का समर्थन किया।

सभापति महोदय, मेरे पास ये दो पर्चे हैं, जिन्हें मैं सभा-पटल पर रखना चाहता हूं। एक पर्चे में छपा है : "चाईबासा निर्वाचनक्षेत्र से झारखण्ड अलग राज्य कायम करने के लिए.....कांग्रेस के उम्मीदवार, श्री सनातन सभाड, को विजयी बनावें।" दूसरा पर्चा मनोहरपुर कांग्रेस पार्टी की तरफ से छापा गया है, जिस में कहा गया है : "भारतीय कांग्रेस पार्टी ने ही 'आन्ध्र', 'महाराष्ट्र', 'हरियाणा' आदि राज्यों का गठन एवं निर्माण किया है। यही भारतीय कांग्रेस पार्टी झारखण्ड राज्य की भी निर्माता होगी, इस में कोई शक नहीं है।"

क्या प्रधान मंत्री को इस प्रचार का पता नहीं है? क्या गृह-मंत्री महोदय इस तथ्य को नहीं जानते कि कांग्रेस के उम्मीदवारों ने वोट लेने के लिए पृथक झारखण्ड राज्य की मांग का समर्थन किया? अगर वे इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं, तो वे अपने पद पर रहने के लायक नहीं हैं और अगर वे जानते हुए भी चुप हैं, तो फिर जनता उन को कभी क्षमा नहीं करेगी।

पृथक झारखंड राज्य की मांग का समर्थन करने वाली कांग्रेस पृथक तेलंगाना की मांग का किस मुंह से विरोध कर सकती है? अगर पृथक विदर्भ की मांग होती है, तो चव्हाण साहब किस आधार पर उसका प्रतिकार कर सकते हैं?

श्री क० ना० तिवारी (बेतिया) : यह सरासर गलत है कि बिहार कांग्रेस ने पृथक झारखण्ड की मांग का समर्थन किया है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इन पर्चों पर प्रेस का नाम दिया गया है। ये कांग्रेस की तरफ से छपे हुए पर्चे हैं। माननीय सदस्य कहें कि वह इस बारे में जांच करेंगे, लेकिन वह इन पर्चों के तथ्य से इन्कार नहीं कर सकते हैं।

आन्ध्र में जो कुछ हुआ, उस से हमारी आंखें खुल जानी चाहिए। आन्ध्र की घटनायें बड़ी हृदयविदारक हैं। एक प्रदेश में रहने वाले, एक भाषा को बोलने वाले और एक ही तरह का रहन-सहन अपनाने वाले जब एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं, जब मिट्टी का तेल छिड़क कर भाई-भाई को आग लगाता है, जब बहनों पर बलात्कार किया जाता है, तो राष्ट्रवाद रोता है, राष्ट्रीय एकात्मता सिर धुनती है और पिछले बीस सालों का नेतृत्व बेनकाब हो कर खड़ा हो जाता है।

प्रश्न यह है कि आन्ध्र के निर्माण के समय तेलंगाना के निवासियों को संरक्षण और आश्वासन दिये गये थे, उन का पालन क्यों नहीं किया गया। आन्ध्र में कांग्रेस की सरकार रही है। केन्द्र में भी कांग्रेस की

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

सरकार है। दोनों जगह राजनीतिक स्थिरता है। लेकिन यह राजनीतिक स्थिरता तेलंगाना की पिछड़ी हुई जनता के मन में विश्वास पैदा नहीं कर सकी। इस संसद ने एक कानून बनाया है जिस में तेलंगाना की जनता को नौकरियों के सम्बन्ध में एक आश्वासन दिया गया है। 1957 में यह कानून बना था और 1964 में इस कानून की संसद ने पुष्टि की। मगर केन्द्रीय सरकार ने यह देखने की तकलीफ नहीं की कि उस कानून का ईमानदारी से पालन किया जा रहा है या नहीं ?

सम्पूर्ण देश के विकास में आज क्षेत्रीय असंतुलन है। वह जन-असंतोष को जागृत कर रहा है। वह विघटन का कारण बन सकता है। प्रश्न यह है कि इस क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने के लिए योजनाबद्ध और प्रभावकारी प्रयास क्यों नहीं किए गए ? भारतीय जनसंघ पृथक तेलंगाना की मांग से सहमत नहीं है। हमारा आग्रह है कि 19 जनवरी, 1969 को आन्ध्र के मुख्य मन्त्री द्वारा आयोजित सर्वदलीय बैठक में जो निर्णय किए गए और जिन के अनुसार तेलंगाना के संरक्षण को 1974 तक बढ़ाने का फैसला किया गया उन निर्णयों को ईमानदारी के साथ लागू किया जाय। लेकिन कांग्रेस का नेतृत्व तेलंगाना के उपद्रवों की जिम्मेदारी से बच नहीं सकता।

क्षेत्रीय असंतुलन और भेदभाव की समस्या और भी जगह है। हाल ही में जम्मू काश्मीर राज्य सरकार द्वारा नियुक्त गजेन्द्र गडकर कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। इस रिपोर्ट से उन लोगों की आखें खुल जानी चाहिए जो इन शिकायतों को सुनने से इनकार करते थे कि जम्मू काश्मीर की सरकार जम्मू और लद्दाख के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है। क्या यह आश्चर्य और रोष की बात नहीं है कि श्रीनगर की तुलना में जम्मू में राशन कम दिया जाता है ? क्या जम्मू के लोगों की भूख कम है और श्रीनगर में निवास करने वालों की जठराग्नि प्रबल है ? एक ही राज्य के निवासी हैं। मगर राशन की मात्रा में भेद है और राशन की मात्रा में ही नहीं राशन की कीमत में भी अन्तर है। जम्मू में अनाज मंहगा बेचा जाता है, श्रीनगर में सस्ता। यह किस कसौटी पर खरा उतारा जा सकता है ? गजेन्द्र गडकर आयोग ने सिफारिश की हैकि यह भेदभाव समाप्त होना चाहिए। भेदभाव का आधार केवल क्षेत्रीय नहीं है, साम्प्रदायिक भी है।

83 अध्यापकों को श्रीनगर में साम्प्रदायिक आधार पर तरक्की देने से इनकार कर दिया गया। जो उनसे जूनियर थे उनको तरक्की दे दी गई। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने अपना निर्णय अध्यापकों के पक्ष में दिया। यह निर्णय 3 अप्रैल 1968 को दिया गया था लेकिन अब तक उस निर्णय को लागू नहीं किया गया है। कहा जाता है कि सुप्रीम कोर्ट का अधिकार क्षेत्र जम्मू काश्मीर में लागू होता है। लेकिन जम्मू काश्मीर की सरकार सुप्रीम कोर्ट के निर्णयों की धज्जियां उड़ा रही है। जिन अध्यापकों के साथ भेदभाव किया गया था उनको फिर से तरक्की देने के बजाय नये अध्यापकों को सारे नियमों की अवहेलना करते हुए तरक्की देने का काम जारी है। आखिर, जम्मू काश्मीर और लद्दाख की जनता इस भेदभाव को कब तक बर्दाश्त करेगी ? वह देशभक्त हैं, लेकिन देशभक्ति की इतनी मंहगी कीमत नहीं मांगी जानी चाहिए। यदि गजेन्द्र गडकर कमीशन की सिफारिशों को ईमानदारी से लागू नहीं किया तो सरकार को वहां भी जन-आन्दोलन के लिए तैयार रहना चाहिए। अभी तक हमने जनता को सब्र से काम लेने के लिए परामर्श दिया है। गजेन्द्र गडकर कमीशन ने सिफारिश की है कि लद्दाख के लिए, जम्मू के लिए अलग अलग विकास बोर्ड होना चाहिए। अलग अलग धनराशि दी जानी चाहिए। जम्मू में पृथक विश्व-

विद्यालय होना चाहिए। मेडिकल और इंजीनियरिंग कालेज की भी आवश्यकता है। जम्मू काश्मीर की सरकार इन सिफारिशों को ताक पर रखने की कोशिश कर रही है। केन्द्र सरकार समय रहते चेते, नहीं तो उसे नये संकट का सामना करना पड़ सकता है।

बम्बई में 10 से 14 फरवरी के बीच में जो कुछ हुआ है उस से हर भारतीय का सिर शर्म से झुक जाना चाहिए। महाराष्ट्र मैसूर के सीमा-विवाद को कुछ सिद्धांतों के आधार पर तय करने की आवश्यकता है। लेकिन किसी भी विवाद को सड़कों पर हल नहीं किया जा सकता। क्या अपने पक्ष में निर्णय कराने के लिए हिंसा, हत्या, लूटमार और अग्निकांड का उपयोग किया जायगा? मैं उपद्रव के दिनों में बम्बई में था और मैं ने यह अनुभव किया कि महाराष्ट्र सरकार पहले तो यह अनुमान नहीं लगा सकी कि यह उपद्रव इतना गम्भीर और व्यापक होगा, जब उपद्रव बढ़ गया तो उस का शासन-तंत्र पुलिस दृढ़ता और समझदारी, के साथ उस का सामना नहीं कर सकी। शायद महाराष्ट्र सरकार यह सोचती होगी कि दमन से आग और भड़केगी या महाराष्ट्र सरकार समझती होगी कि छोटा-मोटा उपद्रव हो जाय तो सीमा विवाद में उस के हाथ मजबूत करने का साधन बनेगा। बम्बई में, मैं ने अपनी आंखों देखा और गृह मंत्री चव्हाण उसका खण्डन करने का प्रयत्न न करें कि दूकानें लूटी जा रही थीं और पुलिस खड़ी थी। मेरे पास एक ऐसा उदाहरण है, मैं नाम लेने के लिए तैयार हूं, जनसंघ के कार्यकर्त्ता गए यह बताने के लिए कि दूकान लूटी जा रही है। पुलिस स्टेशन के आफिसर से कहा गया कि अमुक क्षेत्र में दूकान लूटी जा रही है, आप को कुछ प्रबन्ध करना चाहिए। पुलिस आफिसर ने कहा कि यहां शिकायत के लिए आने के बजाय तुम लूटने वालों में शामिल क्यों नहीं हो जाते? मैं थाने का नाम लेने के लिए तैयार हूं। जो हमारे कार्यकर्त्ता लूट मार रोकने के लिए गए उन को पुलिस के रोष का शिकार बनना पड़ा। मैं यह नहीं कहता कि महाराष्ट्र सरकार के इशारे पर यह हुआ। लेकिन कहीं-न-कहीं यह धारणा जरूर थी कि जब तक सड़कों पर सवाल नहीं लाया जायगा तब तक केन्द्रीय सरकार नहीं सुनेगी। संयुक्त महाराष्ट्र भी सड़कों पर सवाल ला कर बना था और अगर जो अधकचरे दिमाग हैं, भावना में बहने वाले वर्ग हैं उन में यह धारणा पैदा हो कि बेलगांव लेना है तो सड़कों पर सवाल लाना होगा तो इस के लिए उन को दोष नहीं दिया जा सकता, दोष इस सरकार को देना चाहिए।

सभापति महोदय, मैं नहीं समझता कि आज महाराष्ट्र और मैसूर के सीमा विवाद को हल करने का उचित समय है। हर एक दल को आज कसौटी पर कसा जा रहा है और कोई भी अखिल भारतीय दल इस सवाल पर अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकता। लेकिन मैं एक सुझाव देने के लिए तैयार हूं। मैं महाराष्ट्र और मैसूर के जनसंघ के प्रधानों से कहने के लिए तैयार हूं कि वह एक संयुक्त अपील निकालें कि सीमा विवाद का प्रश्न अगले तीन सालों के लिए कोल्ड स्टोरेज में रख दिया जाय। इस प्रश्न का निर्णय टाल दिया जाय। क्या गृह मंत्री चव्हाण और कांग्रेस के अध्यक्ष श्री निजलिंगप्पा इस तरह का निर्णय लेने के लिए तैयार हैं? मैं मानता हूं प्रश्न हल नहीं होगा। लेकिन प्रश्न को हल करने का न तो यह समय है और न यह तरीका है। अगर महाराष्ट्र की भावना को संतुष्ट करने के लिए कोई कदम उठाया जायगा तो उस की प्रतिक्रिया मैसूर में होगी और मैसूर के कांग्रेस वाले पीछे नहीं रहने वाले हैं। अन्य दलों को भी इस तरह का निर्णय करना चाहिए। यह मामला अभी तक लटकता रहा है। इस की जिम्मेदारी से केन्द्र सरकार नहीं बच सकती। लेकिन ऐसा वातावरण बनाना होगा जिस में कुछ सिद्धान्तों के

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

आधार पर निर्णय हो सके। अभी उन सिद्धान्तों का निर्णय बाकी है जिस से न केवल इस सीमा विवाद को बल्कि अन्य सीमा विवादों को भी ठीक तरह से हल किया जा सके।

सभापति जी, क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण में—हम अभी उस की चर्चा नहीं कर रहे हैं, मगर भाषण हो चुका है, जहां तक सरकार की नीतियों का प्रश्न है, वह उस को प्रतिबिम्बित करता है—उस भाषण में राजस्थान के भीषण अकाल की चर्चा तक नहीं है। राजस्थान में स्थायी सरकार है—यह सरकार पिछले 18 वर्षों से चल रही है, मगर राजस्थान पर अकाल की काली छाया मंडरा रही है, धरती प्यासी है, चार लाख से अधिक पशु मर गये हैं, सात-आठ-लाख लोग खुले आकाश में जीविका के लिए बीवी-बच्चों को लेकर काम कर रहे हैं। ऊपर जलता हुआ सूरज और नीचे तपती हुई और रात में शीतल होती हुई बालू—घर-बार छोड़ कर पड़े हुए हैं, सड़कें बना रहे हैं, ऐसी सड़कें जो कुछ महीनों के बाद ढूंढने से भी नहीं मिलेंगी।

राजस्थान में अकाल क्यों है? राजस्थान नहर के निर्माण के काम को प्राथमिकता क्यों नहीं दी गई? राजस्थान नहर विकास की दृष्टि से भी आवश्यक है और रक्षा की दृष्टि से भी आवश्यक, लेकिन आज भी उस नहर पर काम नहीं हो रहा है। सड़कें बनाने का काम तो एक अस्थायी काम है, उस में भी जो गोलमाल हो रहा है, उसकी चर्चा मैं इस समय नहीं करना चाहता। क्या राजस्थान में कुएं नहीं खोदे जा सकते? अगर बिहार में बोरिंग के लिए सेना को भेजा जा सकता था तो राजस्थान के लोगों को पानी देने के लिए सेना को बोरिंग का काम क्यों नहीं सौंपा जा सकता। राजस्थान की सरकार संकट की गम्भीरता को कम कर के दिखलाती है, लेकिन केन्द्र सरकार को अपनी आंखों से काम लेना चाहिए। एक-एक लोटा जल के लिए लोग 12-12 घण्टे बैठे रहते हैं। थोड़े दिनों में गर्मी पड़ने वाली है, जिन तालाबों में अभी गन्दा पानी है, वह सूख जायगा, कूएं जलविहीन हो जायेंगे, राजस्थान को एक भयंकर स्थिति का सामना करना पड़ेगा। यह ठीक है कि भूख से कोई मरा नहीं है, लेकिन जो लाल-ज्वार दी जा रही है, उस से लोग मरे हैं। राजस्थान के लोगों को ज्वार खाने की आदत नहीं है, उन्हें बाजरा चाहिए। जो ज्वार दी जा रही है, वह भी सड़ी हुई है, उसका वितरण दोषपूर्ण है और सब से बड़ी समस्या वहां पर जल की है। अगर समय रहते राजस्थान की परिस्थिति पर काबू पाने का प्रयत्न नहीं किया गया तो फिर राजस्थान में भी बिहार जैसा दृश्य दिखाई देगा। परन्तु, सभापति जी, पानी केवल प्रकृति में न हो, ऐसी बात नहीं है, पानी इस सरकार में भी नहीं है।

सभापति जी, विभिन्न प्रदेशों में गैर-कांग्रेसी सरकारें चल रही हैं, कुछ प्रदेशों में नई सरकारों का गठन होने वाला है। मैं केन्द्र को कहना चाहता हूं कि सरकारों को गिराने के खेल से बाज आये। एक दलीय सरकार के स्थान पर हम बहुदलीय सरकारों के युग में प्रवेश कर रहे हैं, लेकिन अगर प्रदेशों में बनी हुई गैर-कांग्रेसी सरकारों को तोड़ने के लिए केन्द्र राज्यपालों के पदों का दुरुपयोग करेगा, संविधान की अवहेलना करेगा, तो न लोकतन्त्र मजबूत होगा और न राजनीतिक क्षेत्रों में विकल्प उभरेगा। सभापति जी, यह कितने आश्चर्य की बात है कि जब श्री धर्मवीर का धर्म डोलता है और श्री चक्रवर्ती का चक्र चलता है तो पश्चिमी बंगाल और हरियाणा दोनों जगहों में कांग्रेस लाभ में रहती है। धर्मवीर का धर्म कभी भी हमारे पक्ष में नहीं आता, और चक्रवर्ती का चक्र कभी भी गैर-कांग्रेसी दलों के पक्ष में नहीं चलता। आज जो व्यक्ति राज्यपालों के पदों पर बैठे हुए हैं,

वे अपने पदों की गरिमा की रक्षा नहीं कर पा रहे हैं। हरियाणा में क्या हो रहा है ? मध्यावधि चुनाव में कांग्रेस को हरियाणा में 48 सीटें मिली थीं, जब कि विधान सभा की कुल संख्या 81 है। उन में से एक स्पीकर बन गया, एक कांग्रेसी सदस्य का चुनाव रद्द हो गया और 9 सदस्यों ने कांग्रेस से नाता तोड़ लिया, इस तरह से बच गये 37। ये 37 सदस्य किस तरह से बहुमत की सरकार बना सकते हैं, लेकिन फिर भी हरियाणा में कांग्रेस की सरकार चल रही है—

श्री रणधीर सिंह (रोहतक) : वहां पर 16 की अकसरियत है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : ये 16 कहां से आये ? जिन्होंने कांग्रेस के विरुद्ध चुनाव लड़ा था, जो विरोधी दल में शामिल हो गये थे, जो गैर-कांग्रेसी सरकार में मंत्री बन गये थे, हरियाणा में अपना बहुमत बनाये रखने के लिए कांग्रेस आज उन के चरण चूम रही है। दल-बदल की निन्दा करने वाले दल-बदल के आधार पर आज हरियाणा में सत्तारूढ़ है।

सभापति जी, 9 दिसम्बर को 41 विधायकों ने संयुक्त विधायक दल के रूप में राज्यपाल से भेंट की। ये 41 विधायक बहुमत में थे, उन्होंने राज्यपाल से कहा था कि हमारे साथ एक विधायक और है, मगर 41 हम आपके सामने उपस्थित हैं, फिर भी राज्यपाल ने वंशीलाल मंत्रिमंडल से त्यागपत्र देने के लिए नहीं कहा। राज्यपाल ने यह भी नहीं कहा कि विधान मंडलों के अध्यक्षों ने सिफारिश की है कि शक्ति का परीक्षण विधान सभा में होना चाहिए, इस लिए सात दिन के भीतर विधान सभा की बैठक बुलाओ। राज्यपाल ने उन्हें आदेश दिया कि जब विधान सभा की बैठक होगी, तब आप अपनी ताकत दिखलायें। विधान सभा की बैठक 28 जनवरी को हुई। राज्यपाल ने विधान सभा में जो भाषण दिया, उस में कहा गया था कि अनुदानों की मांगों पर विचार करने के लिए और कुछ अन्य लेजिस्लेटिव कार्यवाही करने के लिए बैठक हो रही है। विरोधी दल शक्ति परीक्षण करना चाहता था, लेकिन शक्ति परीक्षण से पहले ही विधान सभा के एक सदस्य श्री जोगिन्द्र सिंह को गायब कर दिया गया। श्री जोगिन्द्र सिंह ने विधान सभा में इस सम्बन्ध में अपना वक्तव्य भी दिया है। उन्होंने हरियाणा के मुख्य मंत्री पर आरोप लगाया है। उन्होंने कहा है कि मुझे हरियाणा के मुख्य मंत्री के घर पर बुलाया गया, पहले एक लाइसेंस नजर किया गया, फिर भी जब मैं कांग्रेस दल में शामिल नहीं हुआ तो मुझे राज्य के सी० आई० डी० के दो अफसरों के साथ गाड़ी में बैठा कर जयपुर और अजमेर भेज दिया गया।

15 hrs.

श्री रणधीर सिंह : सरासर झूठ है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति जी, श्री जोगिन्द्र सिंह को जयपुर में कहां ठहराया गया, अजमेर के किस होटल में उनके रहने की व्यवस्था की गई—यह भी बताया जा सकता है। जो गाड़ी उन को लेकर गई उस का नम्बर भी बताया जा सकता है और सी० आई० डी० के दो अफसर जो उन के साथ गए थे, जो समय समय पर मुख्य मंत्री से टेलीफोन पर सम्पर्क स्थापित करते थे, उन टेलीफोनों के नम्बर भी दिये जा सकते हैं। क्या गृह मंत्री जी सेन्ट्रल जांच ब्यूरो के द्वारा इस की जांच कराने के लिए तैयार हैं ? हरियाणा की सरकार कठघरे में है, उस पर इस की जांच का काम नहीं छोड़ा जा सकता। यह विधायक के अपहरण का मामला है, यह लोक तन्त्र की रक्षा का सवाल है। अगर श्री जोगिन्द्र सिंह झूठ कहते हैं तो उस झूठ का पर्दा फ़ाश किया जाना चाहिये। लेकिन जिस मुख्य मंत्री पर आरोप है, उस के कहने मात्र से जोगिन्द्र सिंह के

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

आरोप गलत साबित नहीं किये जा सकते। गृह मंत्री इस मामले की जांच कराने का वचन दें ताकि सच्चाई सामने आ सके।

श्री शिवनारायण (बस्ती) : कोर्ट में जाओ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : कांग्रेस के एक बुद्धिमान सदस्य कह रहे हैं कि अदालत में जाइये। क्या अदालत में जाने के लिए उनकी इजाजत की जरूरत है ? अदालत में जाने के लिए परामर्श किसी वकील से लिया जायेगा, आपसे नहीं।...(**व्यवधान**)... सभापति जी, आपको याद होगा कि इसी हरियाणा में दल-बदल के आधार पर गैर-कांग्रेसी सरकार को बर्खास्त कर दिया गया था। लेकिन क्या आज हरियाणा में दल-बदल नहीं हो रहा है? अब हरियाणा के राज्यपाल को क्यों सांप सूंघ गया है ? दल-बदल अगर उस समय बुरा था तो क्या आज वह बुरा नहीं है ? उस समय किसी सदस्य को उठाकर नहीं ले जाया गया था, कम से कम इस तरह का आरोप नहीं लगाया गया था।

एक माननीय सदस्य : मध्य प्रदेश में क्या हो रहा है ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: मध्य प्रदेश में कांग्रेस वाले सत्याग्रह कर रहे हैं, सरकार को बदलना चाहते हैं। लेकिन अगर हरियाणा में विरोधी दल वाले सत्याग्रह करें तो फिर गृहमन्त्री की प्रतिक्रिया क्या होगी ? मैं अब समाप्त कर रहा हूं। एक विषय मुझे और लेना है।

चुनाव के दिनों में प्रधान मन्त्री ने बड़ा व्यापक दौरा किया। उन्होंने हमें गालियां सुनाईं। हम औरतों की गालियों को बुरा नहीं मानते हैं, यह हमारी पुरानी परम्परा है। लेकिन हम इस देश के प्रधान मन्त्री से आशा करते थे कि वे चुनाव में मतदाताओं को शिक्षित करने का काम करेंगी और अपने पद की गरिमा के अनुसार थोड़ा सा ऊँचा उठकर बोलेंगी। लेकिन प्रश्न यह नहीं है। प्रश्न यह है कि प्रधान मन्त्री के दौरे का खर्चा किसने किया ? प्रधान मन्त्री जाती थीं तो उससे पहले बल्लियां खड़ी की जाती थीं... (**व्यवधान**)...बल्लियां खड़ी करने की क्या आवश्यकता थी ? कई जिलों से पुलिस बुलाई जाती थी। क्या प्रधान मन्त्री को जनता से डर लगता था ? यही नहीं, मेरठ के पास एक बारात को चार घण्टे के लिए सड़क पर रोक दिया गया। जिस बस पर वे लोग बैठे थे उसका मार्ग अवरुद्ध कर दिया गया इसलिए कि भारत की प्रधान मन्त्री आने वाली हैं और अब कोई दूल्हा नहीं जा सकता है। उस दिन वह शादी टालनी पड़ी। दुल्हन बैठी रही, बारात सजी रही और पुलिस चार घण्टे तक उस बारात की बस को रोके रही। यह एक गम्भीर मामला है, कोई साधारण बात नहीं है। इंग्लैंड की महारानी के लिए भी इतनी पुलिस का इन्तजाम नहीं होता है लेकिन भारत के लोकतन्त्र में पुलिस दबाव दिखाकर भीड़ एकत्र करने का प्रयत्न करती है।... (**व्यवधान**)... डा० राम सुभग सिंह कहते हैं कि प्रधान मंत्री का खर्च कांग्रेस करती है लेकिन जब बिहार की सरकार ने तीन लाख का बिल बनाकर कांग्रेस को दिया तो कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि यह कैसा बिल है, ऐसा लगता है कि बिहार की सरकार के पास पैसा नहीं है। प्रधान मंत्री अगर थोड़ी देर के लिए किसी डाक बंगले में रुकीं तो उस डाक बंगले की मरम्मत पर 30 हजार रुपया खर्च किया गया। फिजूलखर्ची की यह स्थिति है।

इससे भी महत्वपूर्ण एक और मामला है। समाचार-पत्रों के अनुसार प्रधान मन्त्री ने चुनाव में कांग्रेस के लिए लाखों रुपए इकट्ठे किए। यह रुपया प्रधान मन्त्री को किसने दिया ? मेरे पास 23 जनवरी का "हिन्दुस्तान टाइम्स" है। मैं उसका एक अंश

पढ़ना चाहता हूँ :

> "Shri Nijalingappa also discussed with Mrs. Gandhi the question of funds for the election. The Prime Minister has been able to secure contributions totalling more than Rs. 10 lakhs for the A.I.C.C. So far the AICC has collected nearly Rs. 20 lakhs. Mrs. Gandhi has reportedly assured Mr. Nijalingappa that she would get at least another Rs. 5 lakhs for the party."

इस समाचार का खंडन नहीं किया गया। कांग्रेस अध्यक्ष, श्री निजलिंगप्पा ने यह स्पष्ट नहीं किया कि प्रधान मन्त्री को यह धन किसने दिया। अगर यह धन कांग्रेस पार्टी के लिए था तो कांग्रेस अध्यक्ष को दिया जा सकता था, कांग्रेस के कोषाध्यक्ष को दिया जा सकता था। क्या यह गुप्तदान था? आखिर इसके देने वाले कौन हैं? उन्होंने वह धन प्रधान मन्त्री को क्यों दिया और उसके बदले में उन्होंने क्या मांगा। प्रधान मन्त्री इस संसद के प्रति जिम्मेदार हैं, इस देश की जनता के प्रति जिम्मेदार हैं जिनसे पैसा इकट्ठा किया गया है, उनके नामों को स्पष्ट किया जाये। प्रधान मंत्री को कांग्रेस के लिए धन एकत्र करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन प्रधान मन्त्री के बिना धन कौन देगा? धन देने वाले बदले में क्या चाहते हैं और बदले में क्या दिया गया है, यह तभी स्पष्ट हो सकता है जबकि प्रधान मंत्री ने जिनसे धन लिया है, उसके बारे में सारा विवरण इस सदन के सामने रखें। और मंत्रियों ने भी इसी प्रकार से धन इकट्ठा किया है। कांग्रेस के नेता लोकतन्त्र की स्वस्थ परम्पराओं को प्रारम्भ करने की बातें करते हैं। लेकिन पूंजीवाद राजनीति को दूषित कर रहा है। पूंजीवाद के द्वारा और शासनतन्त्र का दुरुपयोग करके लोकतन्त्र की गंगा को विकृत करने का यत्न किया जा रहा है।

यदि समय होता तो मैं कुछ विदेशी मामलों पर भी कहता कि किस तरह से प्रधान मन्त्री ने भारत को रूस का पिछलग्गू बना दिया है। बलगारिया के राष्ट्रपति भारत में आये थे, वे हमारे सम्मानित अतिथि थे और हम उनके साथ मित्रता के सम्बन्धों को दृढ़ करना चाहते हैं लेकिन हमारे आतिथ्य का अनादर करके उन्होंने यहां जेकोस्लोवेकिया के विरुद्ध भाषण दिया। उन्होंने जेकोस्लोवेकिया के ऊपर रूस और वारसा संधि देशों के हमले के औचित्य को ठहराया। आज जेकोस्लोवेकिया के नौजवान रूसी प्रभुत्व के विरुद्ध अग्नि स्नान कर रहे हैं, आत्माहुति दे रहे हैं। उन अग्नि स्नान करने वाले बलिदानी नवयुवकों पर, भारत की भूमि में बैठकर, बलगारिया के राष्ट्रपति ने, कीचड़ उछाला। क्या हम किसी अतिथि को अपने देश में इस बात की इजाजत देंगे? लेकिन जबसे प्रधान मन्त्री सोवियत क्रांति की 50वीं वर्षगांठ में गई तबसे लेकर आज तक उन पर रूस के दबाव का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। कांग्रेस अध्यक्ष अगर सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की कांग्रेस में जाते तो गलत नहीं होता। सोवियत क्रांति विश्व इतिहास की एक घटना है। लेकिन प्रधान मन्त्री के जाने की जरूरत नहीं थी। एक गलत औरत, गलत वक्त पर और गलत जगह पर गई। आज भारत के सम्मान को क्रेमलिन के कंगूरों पर सूली पर चढ़ाया जा रहा है। हम नहीं चाहते कि भारत रूस या अमरीका, किसी का भी पिछलग्गू बने। लेकिन प्रधान मन्त्री की पिछले साल भर की नीति भारत को रूस के कहने पर ले जाने की है। भारत की स्वाभिमानी सर्वप्रभुतासम्पन्न जनता इसके लिए जवाब चाहती है। यह सरकार जनता का विश्वास पहले ही खो चुकी है। यह सरकार जितनी जल्दी शासन से हट जाये, उतना ही अच्छा है। धन्यवाद।

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा (बाढ़) : सभापति महोदय, वाजपेयी जी के भाषण को

[श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा]

मैं बड़े गौर से सुन रही थी । मुझे ऐसा लग रहा था कि उनका वह निर्णय कि हम अविश्वास के प्रस्ताव पर अपना समर्थन नहीं देगें, उनके लिए भी अच्छा था । चूंकि बहुत सी बातें जो उन्होंने कहीं, राजस्थान के बारे में या कुछ और, अगर किसी दूसरे समय इसकी चर्चा करते तो हम हृदय से उसका समर्थन करते ।

परन्तु मुझे बड़ा अफसोस इस बात का है कि श्री वाजपेयी जी जो कि अपनी पार्टी के और अपने आपके आचरण के बारे में बड़ा गर्व अनुभव करते हैं, मैं मानती हूं कि कभी कभी वह अपनी पार्टी को और उनके आचरण के बारे में संकेत भी देते रहते हैं, उन्होंने बैठते बैठते एक ऐसे शब्द का इस्तेमाल किया जो श्री वाजपेयी जी के लिए शोभा नहीं देता । वह शब्द क्या था ? उन्होंने कहा कि एक गलत औरत गलत जगह पर और गलत काम के लिए गयी । आप किसी भी पार्टी की, किसी सरकार की नीति की आलोचना कर सकते हैं, प्रजातंत्र में इस बात के लिए संसद बनी हुई है, और आप अगर विरोध में जीत कर आये हैं तो जरूरी बात है कि जिस पार्टी की सरकार है उसकी आलोचना आप करें । परन्तु यह सब उनकी जबान से अच्छा नहीं मालूम होता । गलत औरत से मतलब क्या है उन का ? वह कह सकते थे कि प्रधान मंत्री एक गलत काम करने के लिए गयीं । परन्तु मैं उन से यही प्रार्थना करूंगी कि हम सब उन का आदर करते हैं, वह भी आदर करने के लिए गुंजायश रखें । गुस्से में कहा वह भी शोभा नहीं देता ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति जी, में स्पष्ट कर दूं । गलत औरत से मतलब इतना ही था कि अगर श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित उस अवसर पर जातीं तो ठीक होता । प्रधान मंत्री गलत औरत थीं ।

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा : हिन्दी भाषा की विकृतियां इतनी हद तक फैलायी जा सकती हैं मुझे इसका अन्दाज नहीं था । खैर में अब इस को छोड़ देती हूं ।

जो भाषण हुए हैं उन से शुरू करना चाहती हूँ । अविश्वास का प्रस्ताव लाने वाले जो लोग हैं मैं उन से पूछना चाहती हूँ कि जिस चुनाव की चर्चा वह कर रहे हैं उस चुनाव के बारे में, उस पार्टी के सदस्यों के बारे में उन के नेताओं ने क्या कहा था मैं जरा इस बात का हवाला देना चाहती हूँ । मधु लिमये जी पटने के लान में जिस समय चुनाव भाषण देने के लिए गये थे, जिस पार्टी के बारे में आज बहुत हर्षित हो कर के, गर्वित हो कर के इस बात का ऐलान कर रहे हैं कि वेस्ट बंगाल में कम्युनिस्ट पार्टी बहुत जोरों से जीती है इसलिये आज हमारी जो सत्ता है हमारे हाथ से छीन लेनी चाहिये, वही श्री मधु लिमये ने पटने के लान में जो कहा था मैं उसको दोहराना चाहती हूं । पटने के लान में सब लोगों के सामने उन्होंने कहा था कि कम्युनिस्ट पार्टी गद्दारों की पार्टी है, देश द्रोहियों की पार्टी है और उन को मत देना देशद्रोहियों को मत देना होगा । जिस पार्टी को उन्होंने देश द्रोही करार दिया उस पार्टी के जीतने पर हम यह कभी भी उम्मीद नहीं करते थे कि वह हमें इस बात का एहसास करायेंगे कि हमें सत्ता को छोड़ देना चाहिए क्योंकि वेस्ट बंगाल में कम्युनिस्ट पार्टी जीती है । मधु लिमये जी एक महीने के अन्दर इतना रंग बदल सकते हैं इस का मुझे विश्वास नहीं था ।

मैं और सब प्रान्तों के बारे में यह कहना चाहती हूँ, जिन लोगों ने अविश्वास का प्रस्ताव दिया है, मैं श्री रामामूर्ति की इस बात को समझ सकती हूं कि वेस्ट बंगाल में उन की पार्टी जीती है और वह अपनी पार्टी के लिए जो चाहें बोल सकते हैं, परन्तु वाकई दूसरी पार्टियों से पूछना चाहती हूं

कि अगर उनके कथनानुसार आज भी कांग्रेस को हर पार्टी के मुकाबले चौगुना बहुमत मिलने के बावजूद भी कांग्रेस को हट जाना चाहिए, तो मैं उन से पूछना चाहती हूँ कि उत्तर प्रदेश में और पंजाब में जिनकी जिनकी हार हुई है उन सब को भी यहां से हट जाना चाहिये। जनसंघ, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के नेताओं से मैं पूछना चाहती हूं, स्वतंत्र पार्टी के नेताओं से मैं पूछना चाहती हूं, कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं से यह पूछना चाहती हूँ, पश्चिम बंगाल हिन्दुस्तान नहीं है। हिन्दुस्तान में सारे प्रदेश हैं; एक आइने में सारे हिन्दुस्तान का नक्शा देखने के पहले यह समझ लीजिये कि उस नक्शे में आप की सूरत कैसी दिखाई पड़ रही है। सिर्फ बंगाल को उदाहरण मान कर हम से यह कहा जाय कि हम शासन छोड़ दें यह उचित नहीं होगा। जिस पार्टी को जनमत आज भी चौगुना हर पार्टी से ज्यादा मिला है वह इन के भरोसे पर सरकार छोड़ कर निकल जाय यह कहां की नीति है। हमारी एक संघीय शासन प्रणाली है। बिहार का जो नतीजा 1967 का था उस को मैं आप के सामने रखना चाहती हूं। 1967 में बिहार की जनता ने मत दे कर साफ कर दिया था कि कांग्रेस को विधान सभा के लिये 128 मत मिले और लोक सभा में सदस्यों को उस से कहीं ज्यादा मत मिले थे। तो हम जनता के मत से आये थे, इन की मेहरबानियों से नहीं आये थे। मैं यह भी जानना चाहती हूं कि जिस बंगाल का इतना ढोल पीटा जा रहा है, बंगाल की जनता अगर आज नहीं सम्भली है तो कल जरूर सम्भलेगी, कि उसका भला किसमें है। हमने वह दिन भी देखा है जब कांग्रेस के बारे में यह कहा जाता था कि लालटेन को भी अगर सामने खड़ा कर दिया जाय तो उसको भी बहुमत मिल जायगा। परन्तु आज वह बहुमत नहीं रहा और मैं उन लोगों से कहना चाहती हूं कि आप का भी नहीं रहेगा, बहुत जल्दी खत्म होगा। बड़ा गर्व आपको हो गया है। परन्तु ऐसे गर्व में रावण भी नहीं टिक सका, सीता नहीं टिक सकी और आप भी नहीं टिकेंगे। यह क्षुद्र नदी की तरह बहुत जल्दी समाप्त हो जायगा। तुलसीदास जी ने ठीक ही कहा है :—

छुद्र नदी भरि चल उतराई,
जस थोरे धन खल बौराई।

आपको बंगाल में सफलता मिली है, मैं मानती हूं कि वहां के जनमत ने इस बात का निर्णय लिया कि जिसको नौ महीने सरकार बनाने का मौका मिला था उसको और समय दे। वही जनमत समयानुसार अपना रास्ता भी ढूंढ लेगा। हिन्दुस्तान का जनमत हमेशा अपने लिये रास्ता ढूंढ लेता है, आपके कहने से वह रास्ता नहीं ढूंढेगा और न मेरे कहने से ढूंढेगा, वह अपने फायदे का रास्ता ढूंढेगा, जनमत पर हमें विश्वास है, उसने जो बंगाल में मत दिया है उसको भी हम प्रणाम करते हैं। परन्तु मैं यह भी कहना चाहती हूं कि तुलसी दास जी की उस उक्ति को याद रखिये कि थोड़ा सा धन मिल जाने पर अगर बौरायेगा तो जल्दी ही पतन होगा और फिर कहीं ठिकाना नहीं मिलेगा। आप यह न समझिये कि बंगाल हिन्दुस्तान का आइना है। वह बंगाल का आइना हो सकता है, लेकिन हिन्दुस्तान का नहीं क्योंकि मैं उदाहरण देना चाहती हूँ कि बिहार में राइट कम्युनिस्ट पार्टी के लोग खाते हैं आपका और वोट देते हैं मार्किसिस्ट पार्टी को। मार्किसिस्ट कम्युनिस्ट पार्टी की मैं इतनी तारीफ जरूर करूंगी कि जो वह कहती है यह करती है। परन्तु दक्षिण पंथी कम्युनिस्ट पार्टी कहती कुछ है और करती कुछ है। इनकी मैं चर्चा नहीं करना चाहती। यह जा रहे हैं इनको एहसास नहीं हो रहा है। आज वामपंथी कम्युनिस्ट पार्टी बंगाल में आयी है इनके कलेजे पर चढ़कर प्रजातन्त्र के तरीके पर दूसरी पार्टी आये यह हमारे लिये तो खतरा हो सकता है। लेकिन देश के लिये क्या खतरा हो सकता है। हमने

[श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा]

देश को एक संविधान दिया है। पार्टियां आयेंगी और जायेंगी, इसमें कोई शर्म हया और बेचैनी की बात नहीं है। एक पार्टी आयेगी और दूसरी बाहर जायेगी। और जो पार्टी बाहर जायेगी वह इस बात का प्रयत्न करेगी कि फिर वह आये। प्रजातंत्र में इस से बल मिलता है। परन्तु मैं उन लोगों से पूछना चाहती हूं, जो पीछे बहुत बड़े बड़े नारे लगाते हैं, कि आप का क्या हाल हुआ है। आज पश्चिमी बंगाल में मार्किसिस्ट पार्टी आयी है वह आप के कलेजे पर चढ़ कर आयी है, आपसे अलग होकर निकली और आपको दिखा दिया कि कितने गहरे पानी में आप हैं। उत्तर प्रदेश, पंजाब में जो हाल आप का हुआ है वह देखिये। बिहार में भी जो हाल आपका हुआ है वह भी देखिये। जहां जहां आप उम्मीदवार थे वहां वहां आप के उम्मीदवारों ने शायद ही कहीं पर अपनी सीट रखी है। यह आप के लिए उदाहरण हम से ज्यादा है। रामावतार शास्त्री जी, मैं आपके क्षेत्र की बात कर रही हूं। आप जिस क्षेत्र से इस बात का बीड़ा उठा कर गये थे कि हमारा उम्मीदवार आयेगा आपके उस निश्चय पर किस तरह से जनता ने पानी फेर दिया इस को आप मत भूलिए। इस लिए आप चुप रहिये।

अविश्वास का प्रस्ताव रखने वाले लोगों ने जिन मूल सिद्धांतों को रखा उस के बारे में माननीय वाजपेयी जी खुद जानते हैं कि वे गलत हैं और उसका विरोध होना चाहिये। यह बात माननीय वाजपेयी जी महसूस कर रहे थे कि उनके बोलने के लिये कोई बात नहीं है। मैं कभी नहीं कहूंगी कि वाजपेयी जी जो परचा लाये हैं वह गलत छपाकर लाये हैं। परन्तु हम और आम चुनाव में गये हैं, क्या हम इन्कार कर सकते हैं कि कैसे कैसे पर्चे छपते हैं जिन से कोई रिश्ता नहीं होता उम्मीदवार का। इलेक्शन पिटीशन्स इस बात के सबूत हैं, कई उम्मीदवारों ने कहा है कि इस से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। हमारा भी तजुर्बा है कि हमारे विरोधी दल अगर हमको बदनाम करना चाहते हैं तो हमारे नाम से पर्चे बटवाते हैं, छपवा कर के पर्चे बटवाते हैं।

उसको न हम और न आप अहमियत दें क्योंकि उनको अहमियत देकर हम अपनी राजनीतिक परम्पराओं को बिगाड़ेंगे और उनकी अवहेलना करेंगे। इसलिए मैं वाजपेयी जी से कहना चाहती हूं कि हमें किसी बात का फख्र नहीं हो सकता। हमने गलतियां कीं। मैं मानती हूं कि कांग्रेस ने गलतियां की हैं लेकिन हमें एक बात का फख्र जरूर है कि हमारी नसों में बहने वाले खून की एक बूंद में न तो साम्प्रदायिकता है, न जातीयता है और न ही वर्गवाद या क्षेत्रीयता है। उन संस्कारों में हम पैदा नहीं हुए हैं और उन संस्कारों को लेकर हम सोचते नहीं हैं। भले ही आज वह कमाई मेरी अपनी न हो या मेरे अपने साथियों की निजी न हो परन्तु जो संस्कारों की कमाई हमारे पूर्वज छोड़ गये है उन स्वस्थ संस्कारों और परम्पराओं के बीच में हम पले व बढ़े हैं। हम और दूसरे तरीक़े से नहीं सोचते यह बात आप भी जानते हैं। इसीलिए वाजपेयी जी, अभी दो दिन पहले आपने बिहार में अपना हाथ बढ़ाया था और कहा था कि कांग्रेस अगर हमसे सहयोग देने के लिए कहे तो हम सहयोग देने के लिए तैयार हैं...

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैंने नहीं कहा।

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा : उस वक्त तो कहा था अब हो सकता है कि उन्होंने अपनी उस राय को बदल दिया हो। लेकिन अभी कल या परसों की बात है कि आपने कहा कि कांग्रेस को बहुमत मिला है और इसलिए कांग्रेस सरकार बना सकती है और अगर वह हमसे इसके लिए सहयोग मांगती है, मदद की हमसे अपेक्षा रखती है तो हम

उसे मदद देने के लिए तैयार हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह मैंने नहीं कहा। इस तरह से जबरदस्ती मेरे मुंह में यह शब्द ठूंसे जायं तब तो बड़ी मुश्किल होगा।

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा : अख़बार में निकला था।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सदस्य महोदया अख़बार ठीक तौर से नहीं पढ़ती हैं इसीलिए ऐसा समझ रही हैं।

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा : वाजपेयी जी कह रहे हैं कि मैंने ठीक तौर से अख़बार नहीं पढ़ा तो बाद में जब उन्हें मौका मिले तो वह खुद ही बतला दें जोकि उन्होंने कहा था।

आपने अभी भी अपने भाषण में इस तरफ इशारा किया है कि एक दल की सरकार आज की वर्तमान परिस्थिति में सम्भव नहीं है। वह तो जब हमारे कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि हम जनसंघ और कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सरकार नहीं बनायेंगे तब से भले ही आपने अपने इरादे बदल दिये हों वह और बात है। लेकिन आज भी अपने भाषण में अपने एक वाक्य में यह इशारा दिया, नाम तो नहीं लिया लेकिन इशारा अवश्य दिया कि आज की राजनीतिक परिस्थिति में लोगों को मिलजुल कर सरकार बनाने के लिए बाधित होना पड़ेगा। अल्पमत की सरकार नहीं चलेगी। मैं मानती हूं कि बंगाल में अल्पमत की सरकार बनी। हमने परिस्थितियों के वश होकर कुछ ग़लत काम किये। हम आपकी तरह नहीं हैं कि अपनी ग़लतियों को न मानें। हम अपनी गलतियों को मान लेते हैं और गलती का मान लेना प्रजातंत्र में एक बहुत अच्छी चीज है। लेकिन इस बात को मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि अल्पमत की सरकार के बारे में नीति अगर परिवर्तित हुई है तो यह यहां पर इन लोगों के कहने से नहीं हुई है बल्कि स्वयं हमारी पार्टी के अन्दर यह बात उठी थी और हमारी पार्टी में ही इस बात की चर्चा हुई थी कि ऐसी नीति हमको नहीं बनानी चाहिए और हमने उस नीति को बदला। हम इस बात का दावा नहीं करते कि हम जनमत बनाते हैं मगर इस बात का दावा जरूर करते हैं कि अपनी पार्टी में खुले तौर से आजादी के साथ जो चाहें कहें। अपनी आलोचना स्वयं करने की हिम्मत हमारी पार्टी ही दिखलाती है। आपकी पार्टी में वह हिम्मत नहीं है। लेकिन जैसा मैंने अभी कहा हम स्वयं अपनी वहां आलोचना करके प्रजातांत्रिक पद्धति से अपनी नीतियों को बदल देते हैं।

मैं यह चाहती थी कि यह लोक सभा, यह संसद, इस तरह की संस्था बनती, जहां पर राष्ट्रीय स्तर की जो समस्याएं हैं, उनका राष्ट्रीय समाधान होता।

अभी हमारे राममूर्ति साहब ने शिवसेना के बारे में कहा लेकिन यह कैसे सोचा जा सकता है कि कांग्रेस शिवसेना को बढ़ावा देगी ? (**व्यवधान**) अब यह सारी दुनिया जानती है कि इस तरह की क्षेत्रीय भावनाएं और जो आन्दोलन आदि पैदा हो रहे हैं उनका फ़ायदा विरोधी दलों ने उठाया है हमने नहीं उठाया है। हमको उनसे नुकसान हुआ है। जाहिर है कि आज अगर शिवसेना बढ़ती है तो वहां कांग्रेसी शासन कमजोर होता है आप नहीं कमजोर होते हैं... (**व्यवधान**)।

मैं श्री मधु लिमये को कहना चाहूंगी कि जिंदगी भर उन्हें गलतफहमियां बनी रहेंगी क्योंकि वह ठीक तरीक़े से सोचते नहीं हैं। दूसरे की बात वह सुनते नहीं हैं बस अपनी ही कहे जाते हैं और ऐसी हालत में उनकी गलतफहमियां कभी दूर नहीं होंगी। मुझे तो कभी-कभी उन पर अफसोस

[श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा]

होता है कि भगवान ने इतनी प्रतिभा जो उन्हें प्रदान की उसका इस्तेमाल मधु लिमये साहब ठीक तरीक़े से नहीं करते हैं।

विरोधी दल वालों द्वारा श्री चह्वाण, नाइक और हमारे महाराष्ट्र के जो दूसरे नेता हैं उनके ऊपर यह इलजाम लगाया गया है कि वह शिव सेना को बढ़ावा दे रहे हैं। लेकिन मैं उनसे पूछना चाहूंगी कि शिव सेना की शक्ति ज्यादा बढ़ने से नुकसान किसको हो रहा है? हमारी संस्था को नुकसान हो रहा है। हमारी संस्था को इसलिए नुकसान हो रहा है कि आप जाकर वहां क्षेत्रीय और साम्प्रदायिक बातों के ऊपर नारे लगाते हैं लेकिन हम उन्हें संस्कारवश नहीं लगा सकते हैं। हमने इस तरह के साम्प्रदायिक व क्षेत्रीय भावनाओं को भड़काने वाले नारे कभी भी नहीं लगाये और आज भी जब हम बात करते हैं तो पूरे देश की बात हम करते हैं। चरणसिंह जो उत्तर प्रदेश में जीतकर आये वह इसलिए हुआ कि कांग्रेस ने जाट और अहीरों की बात नहीं कही। क्या श्री वाजपेयी इस बात से इंकार कर सकते हैं कि एक सम्प्रदाय उनसे इतना घबड़ाता क्यों है? मैं चाहती हूं कि मुसलमान जनसंघ को गले लगायें। आप उनके अन्दर अपने प्रति इतना विश्वास पैदा कीजिये कि वह आपको गले लगायें। मैं चाहती हूं कि राजनीतिक पार्टियां यहां बढ़ें। एक राष्ट्रीय और राजनीतिक दृष्टिकोण को लेकर अगर पार्टियां देश में बढ़ें तो वह कोई बुरी बात नहीं है। कांग्रेस बढ़े, आप बढ़ें, स्वस्थ राजनीतिक स्तर पर स्वस्थ संस्कारों को लेकर अगर हम सब बढ़ें तो वह एक अच्छी बात होगी और उस हालत में मैं आपको मुबारकबाद दूंगी कि आप बढ़े।

मैं वाजपेयी साहब से यह पूछना चाहूंगी कि मुसलमानों ने आपको विश्वास क्यों नहीं दिया? क्रिश्चियंस ने आपको वह विश्वास क्यों नहीं दिया। हमने उनसे नहीं कहा था कि वह जनसंघ को वोट न दें...

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आपने जनसंघ को वोट न देने के लिए उनसे कहा था।

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा : हमने ऐसा नहीं कहा था। हम इस तरह का वातावरण तैयार नहीं करते हैं। हमारी प्रधान मंत्री ने बार बार उनको यही कहा कि साम्प्रदायिक शक्तियों को आप नीचे करिये, साम्प्रदायिक शक्तियों को बढ़ने से रोकिये। यह आपके लिए चेतावनी ज़रूर थी लेकिन वह आपको अच्छी नहीं लगी। परन्तु वैसा होने में आपका फ़ायदा है और हम सभी का फ़ायदा है क्योंकि राष्ट्र अगर एक रहता है तो हम सबका फ़ायदा है। मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों के शिकार आप क्यों बनें, हम लोग क्यों न बनें? अगर लोग हम को वोट न दें तो हम समझ सकते हैं। एक पार्टी इतने दिनों तक शासन में रही और जनता अब उसको हटा कर दूसरे को चांस देना चाह सकती है। हमेशा दुनिया में एक तरीका रहा है। आज अमरीका में श्री निक्सन राष्ट्रपति के पद पर आ गये। जानसन चले गये। वैसे श्री जानसन ने अपने देश के अन्दर बहुत अच्छा काम किया था परन्तु एक नीति पर जानसन साहब की हार हुई और अमरीका में श्री निक्सन आये। इस के पहले श्री कैनेडी ने जो पहले रिपब्लिकन पार्टी की सरकार थी इनके हाथों से सरकार अपने हाथ में लेकर नेतृत्व किया। वैसे मैं किसी पार्टी पर इलजाम नहीं लगाना चाहती थी लेकिन श्री ज्योतिर्मय बसु ने जब इस बात को कहा है, कुछ चुनौती दी है तो मैं जरूर उस बात की चर्चा करना चाहती हूं और पूछना चाहती हूँ कि महाराष्ट्र में तो कांग्रेस की सरकार है परन्तु मद्रास में किस की सरकार है? वहां पर तो डी० एम० के० की सरकार है जिसे कि कम्युनिस्ट पार्टी का समर्थन प्राप्त है वहां तंजौर में जो कुछ हुआ उसके लिए कांग्रेस पार्टी जिम्मे-

दार नहीं कही जा सकती है उसकी जिम्मेदारी तो उन पर आती है। वहां पर 42 हरिजन जला कर राख कर दिये गये। वहां पर कांग्रेस पार्टी तो इसके लिए जिम्मेदार नहीं थी बल्कि आप व आपकी सरकार जिम्मेदार थी। मैं जानना चाहती हूँ कि वहां के किसानों और मजदूरों में दर और कीमत को लेकर झगड़ा था तो सन् 67 में आपकी सरकार थी और डी० एम० के० की सरकार को कम्युनिस्ट पार्टी का समर्थन प्राप्त था, लेकिन उसके बावजूद भी वहां पर जो यह 42 हरिजनों की हत्या हुई तो कांग्रेस तो उसके लिए जिम्मेदार नहीं थी बल्कि वह ही वहां पर थे। मैं दावे के साथ इस बात को कहना चाहती हूँ कि आज जो उनके द्वारा इस सरकार के ऊपर अविश्वास का प्रस्ताव लाया गया है तो डी० एम० के० गवर्नमेन्ट के ऊपर वह अविश्वास का प्रस्ताव क्यों नहीं लाते जिसके कि आफिस में रहते हुए हरिजनों की इस तरह से हत्या हुई। (**व्यवधान**)

SHRI G. VISWANATHAN (Wandiwash): In Tanjore, the Congress people have been responsible; those responsible have been arrested.

SHRI UMANATA (Pudukkottai): It is the Congress landlords of Tanjore who burnt the Harijans there. (*Interruption*)

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा : मैं एक दूसरी बात कहना चाहती हूँ। बंगाल में ठीक है कि जनमत ने यह फैसला किया कि नौ महीने जो सरकार बनी वही ठीक थी और उसके बारे में जनमत ने जो यह निर्णय लिया कि वह पार्टी ठीक थी मैं उस फैसले को मानती हूं। लेकिन इससे भी कौन इंकार कर सकता है कि जब वहां पर संयुक्त दल की सरकार थी तो वहां पर करीब-करीब 636 कारखाने बंद हो गये थे और उसका नतीजा यह कि एक लाख से ज्यादा आदमी बेकार हो गये। हमारे बिहार के काफी लोग बंगाल में काम करते हैं।

उनको मालूम होना चाहिए कि वहां के जो मजदूर हैं, जिन पर आज उनका कब्जा है, उन में से बहुत ज्यादा संख्या बिहारियों और उत्तर प्रदेश के लोगों की है। मैंने अपने इलाके में देखा कि कलकत्ते से लौट कर लोग आये हैं। उनके पास काम नहीं है। मैंने कहा : आप यहां कैसे आ गये। उन्होंने कहा कि कारखाने बन्द हो गये इस लिए चले आये हैं। मैंने अपनी आंखों से देखा है। मैं गई हूँ और उन से मिली हूँ। कलकत्ते से लौट कर जो लोग आये हैं··· (**व्यवधान**)···इससे कौन इन्कार कर सकता है। लोग कांग्रेस को गालिया दें यह उन को अच्छा लगता होगा, परन्तु असलियत सुनना भी क्यों अच्छा नहीं लगता। बात यह है··· (**व्यवधान**)···इतनी जल्दी बौखलाने का मतलब है कि अभी-अभी जो जमीन नीचे मिली है उसके बारे में उनको विश्वास नहीं है कि वह रहेगी, वर्ना अगर उनको यह एहसास होता कि उनकी ताकत वाकई बढ़ी है तो वह महासागर की तरह शान्त रहते, आज इस तरह से उछलते नहीं।

मैं दूसरी बात कहना चाहती हूँ। बंगाल में 1966 के मुकाबले में 1968 में 5 प्रतिशत रोजगारी में कमी हो गई। यानी अगर वहां की आबादी 5 करोड़ की है और 5 फीसदी रोजगार कम हो गये तो कितने लोगों को रोजगार नहीं मिला ? वहां कम से कम 25 लाख लोगों को रोजगार नहीं मिला जो कि मिल सकता था। 25 लाख वह नौजवान हैं जो रोजगार की आशा में वहां आंखें बिछाये हुए थे।

अन्त में मैं उड़ीसा सरकार के बारे में कुछ कहना चाहती हूँ। आज उस के बारे में हम यहां पर बहुत नहीं सुनते हैं क्योंकि उड़ीसा सरकार को समर्थन देने वाले यहां पर जो लोग हैं उन्होंने अविश्वास प्रस्ताव नही रक्खा है। मैं उन की चर्चा यहां करना जरूरी नहीं समझती थी, पर श्री दाण्डेकर ने

[श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा]

हम को बहुत नसीहत दी। जितने शब्द उन की डिक्शनरी में थे, कुछ अपनी डिक्शनरी से लेकर और कुछ और लोगों की डिक्शनरी से लेकर, उन को हमारे ऊपर बरसा दिया। लेकिन ऐसी बारिश है तो उसका कोई फायदा नहीं होता। चूंकि श्री दाण्डेकर ने हमें नसीहत दी कि हम कुछ करते नहीं, इस लिए मैं भी कुछ आंकड़े दूंगी उड़ीसा सरकार के बारे में, जो मेरे पास हैं। उड़ीसा सरकार के बारे में यह कहा गया है कि वहां पर करीब-करीब दो घरों में एक घर की आय 50 रुपये से कम है। यानी अगर किसी जगह दो घर हैं तो एक घर की, एक परिवार की आय 50 रुपये से कम है। यह आंकड़े जहां उनकी सरकार है मैं वहां के बारे में दे रही हूं।

एक माननीय सदस्य: वहां पर बीस साल आपकी सरकार रही है।

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा : बीस साल तक तो हम वहां रहे, लेकिन आप ने तो हमको छः महीनों में जन्नत दिखलाने का वादा किया था। हमने तो कोई ऐसा वादा किया नहीं। हम ने कभी बड़े-बड़े वादे नहीं किये, और जो वादे किये उनमें से कुछ पूरे किये और कुछ पूरे नहीं किये। लेकिन उनको बराबर कहते रहे हैं कि यह वादे हम पूरे नहीं कर सके हैं। इस की यह दिक्कतें हैं। यह आंकड़े मेरे बनाये हुए नहीं हैं। यह आंकड़े प्रकाशित आंकड़े हैं जिन को उड़ीसा की सरकार ने खुद मान्यता दी है कि दो घरों में एक घर की आय 50 रुपये से कम है। मैं दूसरा आंकड़ा रखना चाहती हूं, और वह यह कि (व्यवधान) 1966 से लेकर, 1967 तक जहां 1 लाख 67 हजार सरकारी अधिकारी काम कर रहे थे, अब वहां 1 लाख 83 हजार अधिकारी काम करने लगे हैं। यानी ये सारे जो लोग वहां सरकार में आ गये। अगर इसके मुकाबले में काम बढ़ता तो हमें कोई ऐतराज नहीं था, परन्तु काम कुछ भी नहीं बढ़ा।

मैं यही कहना चाहूंगी कि यह मौका नहीं है जहां मैं अपनी बात रख सकूं, परन्तु एक बात जरूर कहना चाहूंगी। कल बहुत लोगों ने अपने भाषण में कहा था कि क्षेत्रीय समस्यायें पैदा हो रही हैं। बंगाल में चाहे कुछ हुआ हो, लेकिन मार्क्सिस्ट पार्टी और प्रान्तों में नहीं बढ़ी। मैं समझती हूं कि बहुत प्रान्तों की समस्या क्षेत्रीय समस्या है, जिसकी वजह से दूसरे कुछ लोग आगे बढ़ें।

उत्तर प्रदेश में श्री चरणसिंह का आना, पंजाब में अकालियों का आना, तेलंगाना में जो हलचल हुई, शिव सेना की जो हलचलें हुई और जिस तरह से बरबादियां हुई, इन सब के नीचे समस्या क्या है? एक जमाना था जब श्रीनगर में हड़ताल हुई। कभी श्रीनगर में होती है, कभी कलकत्ते में होती है, कभी दिल्ली में होती है और कभी इलाहाबाद में होती है। बनारस में जो हालत हुई वह आप को मालूम है। वहां हम तो थे नहीं। थी सोशलिस्ट पार्टी, कम्यूनिस्ट पार्टी और जन संघ। एक विद्यार्थी ने दूसरे विद्यार्थी की जो धुलाई की है वह सब को मालूम है। हम तो हर जगह देख रहे हैं—

एक माननीय सदस्य: धुलाई में क्या हुआ?

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा : जो अपने कपड़े गन्दे हैं पहले उनकी धुलाई कीजिये, दूसरे की धुलाई बाद में कीजियेगा।

श्री स०मो० बनर्जी : गन्दे किस ने किये?

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा : यह आप जानें। जब हमारे साथ थे तब तो साफ थे, उधर चले गये तब न जाने क्या हो गया।

मैं यह कहना चाहती हूं कि क्षेत्रीय समस्यायें उन असन्तुष्ट नौजवानों की समस्यायें हैं, जिनको आज बेपनाही महसूस

हो रही है। आज वह जिस बेपनाही को महसूस कर रहे हैं उसका अन्दाजा आप हम, सब लगा सकते हैं। लाखों लोग पढ़-लिखकर निकलते हैं लेकिन उनको काम नहीं मिलता है। एक दिन मैं बैंक आफ बड़ोदा में अपना चेक भुनाने गई। वहां के एजेन्ट ने मुझ से बतलाया : तारकेश्वरी जी हमारे यहां आप जानती हैं कि एक क्लर्क की जगह खाली हुई है और उसके लिए 3 हजार इंजीनियरों की दरख्वास्तें आई हैं। समस्या यह है कि उनको रोजगार कैसे दिया जाये और रोजगार देने के लिये काम को कैसे बढ़ाया जाये।

श्री वाजपेयी आज जिस बात की चर्चा कर रहे हैं, मैं चाहती हूं कि पार्टी की तरफ से पहले इस बात की चर्चा हो कि आज देश में जो समस्यायें हैं उनको किस प्रकार से सुलझाया जाये। राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान राष्ट्रीय स्तर पर सभी पार्टियों की राय से और मेल जोल से हो। वह अपने सुझाव दें और हम अपने सुझाव दें और इस तरह से समस्याओं का समाधान करें, वर्ना आज इस देश में हालत यह होने वाली है कि :

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग से,
इस घर को आग लग गई घर के चिराग से।

आप नहीं जानते हैं कि शिव सेना की आग में, तेलंगाना की आग में, तामिलनाडु के अन्दर विद्यार्थियों की आग में, और मैं कहती हूं कि भाषा का भी आज जो आन्दोलन चल रहा है, उसके अन्दर क्या है। क्या यह नफरत है ? नहीं, यह नफरत नहीं है। आगे बढ़ने का रास्ता बन्द होने की सम्भावना है, इसलिये यह सब कुछ हो रहा है। इस लिये अगर शिव सेना को बन्द करना है, तो शिव सेना की जड़ें जहां से सींची जाती हैं उस समस्या को पहले उठाया जाये। जब जड़ में और बीज में जहर भरा हुआ है तब फुनगी काटने से कोई फायदा नहीं है। जिस तरह से आज देश में आग लग रही है उसकी ओर ध्यान देकर हम मिल-जुलकर उन समस्याओं का समाधान करें। हम कोशिश करें कि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के जैसे वातावरण में यहां के विश्वविद्यालय न पनपें। हम कोशिश करें कि हमारे बच्चे ट्रेनों और बसों को इस तरह से आग न लगायें। मगर एक तरफ हवा देना और दूसरी तरफ मरसिया पढ़ना विरोधी दलों को आ सकता है। तुलसीदास ने कहा था कि :

"हँसब, ठठाव, फुलाउब गालू"

तुलसीदास ने कहा कि एक तरफ हँसना और दूसरी तरफ गाल फुलाना दोनों चीजें सम्भव नहीं हैं। लेकिन हमारे विरोधी दलों के लोगों ने वह भी करके दिखला दिया। एक तरफ मरसिया पढ़ते हैं, राष्ट्रीयता की बातें करते हैं, तेलंगाना और शिव सेना के आन्दोलनों की आलोचनायें करते हैं। पर आज जहां एक साथ मिलकर काम करने की जरूरत होती है वहां अगर कोई काम होता रहता है तो घेराव करके, असन्तोष की आग लगा कर लोगों को भड़काने की कोशिश करते हैं।

श्री मधु लिमये : आप शेर जरूर पढ़ियेगा।

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा : मैं जरूर पढ़ूंगी, आप के लिए जरूर पढ़ूंगी ! चूंकि आप सुनना चाहते हैं इसलिए पढ़ूंगी। लेकिन आप के ऊपर असर नहीं होता मधु लिमये जी। हो जाता तो अच्छा होता। आज इस अविश्वास प्रस्ताव के समय मैं एक शेर पढ़ना चाहती हूं। आज मधु लिमये जी पर उसका असर भले ही न हो लेकिन देश की जनता हम और आप से यही कहना चाहती है कि :

बुलन्द बादों की हस्तियों पर,
हम जी के क्या करेंगे

[श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा]

हमें हमारी जमीन दे दो,
हम आस्मां ले के क्या करेंगे ?

श्री जार्ज फरनेंडीज (बम्बई दक्षिण) : जब इस अविश्वास के प्रस्ताव को यहां पेश किया गया तब यह कहा गया कि इसकी क्या आवश्यकता थी। यह जो तर्क दिया गया है इसको मैं समझ नहीं पाता हूं। आज हमारे सामने कई बातें हैं। उन में से एक तो यह है कि बम्बई में 58 लोगों की मृत्यु हो गई है पुलिस की गोली से और सरकारी आंकड़ों के अनुसार 25 करोड़ रुपये की सम्पत्ति की हानि हो गई है। उस शहर की 53 लाख आबादी में से अधिकांश लोग जो गरीब हैं, गैर मराठी लोग खास तौर पर हैं और आम जनता आम तौर पर है, इस वक्त अपनी जान के बारे में अपने माल मते के बारे में बड़ी चिन्तित है। ऐसे समय में अगर सरकार की गलत नीतियों को ले कर अविश्वास का प्रस्ताव पेश नहीं किया जाता तो और कौन-सा समय था जिस पर इसको पेश किया जा सकता था।

कल से इस बहस में कई मामले सदन के सामने और देश के सामने पेश हो चुके हैं बम्बई की घटनाओं को लेकर। सरकार की अथवा कांग्रेस पार्टी की और पुलिस की इसमें कितनी जिम्मेदारी है इस पर काफी बहस हुई है। मैं गृह मंत्री जी से निजी अनुभव से एक बात कहना चाहूंगा। नौ तारीख को हमारी एक मीटिंग चौपाटी में थी। उस मीटिंग में हमारे दल के नेता श्री मधु लिमये भाग ले रहे थे और उनको मैं वहां ले जाना चाहता था। लेकिन वह शहर के दूसरे कोने में उस वक्त रह रहे थे जहां से उनको मुझे मीटिंग में ले जाना था। हम अपने एक वकील मित्र की गाड़ी लेकर शहर दल अध्यक्ष श्री नाइक को साथ लेकर चले। हम एक पार्ट से निकले बांदरा जाने तब दलायल रोड से होकर मुझे आगे जाना था। बैकुला से लेकर आगे सड़क के दोनों तरफ बी. ई. एस. टी. की चौकियां दूध बेचने के लिए बनी हुई थीं। लोगों की मोटर गाड़ियां और बम्बई शहर की टैक्सियां जलाने का काम वहां चल रहा था। उस धांधली में से हमारी अकेलों की गाड़ी चली। दलाल रोड खत्म होकर जहां बैकुला रोड शुरू होती है वहां सड़क मोड़ लेती है। मोड़ के इस तरफ दस पंद्रह पुलिस अफसर खड़े थे और कई दूसरे पुलिस वाले भी वहां मौजूद थे। मैंने गाड़ी रोकी! पुलिस अफसर से पूछा कि क्या हम वहां से आगे और भी जा सकेंगे ? उन्होंने बड़े हंसते हुए मजाक करते हुए मुझ से कहा कि बड़े मजे से आगे जाइये, जहां तक जा सकते हो जाइये, आपकी मर्जी है। बड़े मजे से आगे बढ़िये। वहां से गाड़ी पचास कदम भी आगे नहीं बढ़ी थी कि सड़क पर बैरीकेड थे और सड़क के उस तरफ लोगों की भारी भीड़ थी और गाड़ियों का जलाने का काम चल रहा था, पत्थर बाजी वहां चल रही थी तत्काल हमें गाड़ी को घुमाना पड़ा और वहां से लौटना पड़ा। अगर हम ऐसा नहीं करते तो हमारी गाड़ी की भी वही हालत होती जो दूसरी गाड़ियों की हो रही थी। वहां से गाड़ी घुमा कर हम लोग पुलिस वालों के पास पहुंचे। वहां वापिस आकर फिर बड़े मजे में और मजाक में बात कही गई कि जाकर लौट आये हैं। यह बम्बई में चार दिन पहले पुलिस का बरताव था। जब इस सब के बारे में कांग्रेस के लोगों से और श्री एस. के. पाटिल से कहा गया तो उन्होंने कहा कि और क्या करना चाहिये था, पुलिस ने 58 लोगों को तो मार डाला है। लेकिन आप देखें कि एक भी गुंडा नहीं मरा है। कैसे लोग मरे हैं ? एक लड़की मारी गई है, अठारह साल की लड़की मारी गई जिसकी उस दिन सालगिरह थी। उसी दिन उसने अपनी सालगिरह मनाई थी वह अपने मकान

की तीसरी मंजिल पर खड़ी थी, गोली चली और उस गोली से वह लड़की मारी गई। हमेशा ऐसा ही हुआ करता है। पुलिस का हाथ उन लोगों के साथ रहता है जो इस किस्म की धांधली चलाते हैं लेकिन गरीब आदमी मारे जाते हैं। यही हालत बम्बई में भी बनी है।

शिव सेना कोई चीज नहीं है। एक बरस पहले शायद फरवरी या मार्च में आपने एक वाक्य कहा था :

"Shiv Sena of Bombay is being financed by big business in the country."

तब मैंने आपको लिख कर प्रश्न पूछा था कि आपके पास इंटैलीजेंस ब्यूरो है, जिस का इस्तेमाल आप हम जैसे लोगों के खिलाफ करते हैं, क्यों नहीं आप एक बार सी. वी. आई. या सी.आई.वी. का इस्तेमाल इस काम के लिए करते हैं कि वह पता लगाये कि कौन पूंजीपति इस मुल्क के हैं जो शिव सेना को पैसा देकर उसको पाल रहे हैं ? कौन लोग उसको पैसा देते हैं, इसका आप क्यों पता नहीं लगाते हैं ? यह पैसा क्या वे अपने खाते में से निकाल कर देते हैं या जो उनके तीन या चार नम्बर के एकांउट रहते हैं विदेशों में उनमें से देते हैं। कहां से यह पैसा आता है, इसका भी आप एक बार खुलासा करिये। मुझे पता नहीं गृह मन्त्री को आज तक इस काम को करने के लिए समय मिला है या नहीं मिला है।

शिव सेना के बारे में एक और बात मैं कहना चाहता हूं। इस बहस में जाने से कोई मतलब हल नहीं होगा कि किसका हाथ इसको बनाने के पीछे रहा है। लेकिन इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि शिव सेना का इस्तेमाल अक्तूबर 1966 से बम्बई शहर में तमाम गैर कांग्रेसी दलों के खिलाफ करने में आया है। अक्तूबर 30, 1966 को शिवाजी पार्क की मीटिंग में एक ही नारा चला था कि पाटिल के मुकाबले में जार्ज फरनेंडीज खड़ा है, यह जार्ज फरनेंडीज बम्बई का मराठी आदमी नहीं है, यह बाहर का है तभी से यह चीज चली आ रही है। मैं चव्हाण साहब को एक ऐसे पत्रकार के वाक्यों को पढ़ कर सुनाना चाहता हूं जिनके नाम आप भी जानते हैं और जिनसे आपकी व्यक्तिगत पहचान भी है और उनका नाम है श्री जी.एन. आचार्य। आचार्य जी का यह जो लेख है इसको उन्होंने भी पढ़ा होगा।

"It was not however, till the night of October 30, that the Sena impinged on the public mind. At a rally at Shivaji Park the venom and vitriol that was poured out was directed against non-Maharashtrians—including the Chief Justice of the Bombay High Court, who was then classified as a non-Maharashtrian.....But the principal target was Shri George Fernandes who, by then, had pitted himself against Shri S. K. Patil and was vigorously canvassing for his own election to Lok Sabha.

At the end of the meeting some of the more inflamed members of the crowd stoned Udipi hotels. The slogans they shouted were : "Madrashana Haklun Lava," (drive out the Madrasis) and "Idli Sambhar Bandh Kara" (stop Idli-Sambhar). Nothing more droll could be imagined by way of political slogans to inspire the rank and file of a new and rising party.

It soon become apparent however, that the Shiv Sena's principal concern in that election was to secure the defeat of Shri Krishna Menon. A plethora of claims and counter-claims, statements and contradictions have been made on this issue. But there is no doubt that the Sena's aid was requisitioned for the election of the late Shri S. G. Barve. Chief Thackaray has asserted that but for the Sena's campaign Shri Barve would not have been elected. From my own observation, I find it easy to accept this claim.

[श्री जार्ज फरनेन्डीज]

> After the death of Shri Barve, Shri S.K. Patil produced Smt. Tara Sapre as a Congress candidate, as a magician produces a rabbit out of his hat. She does not seem to have had any political interest ; and the only public work that she had ever done was on behalf of the RSS. Once again the Sena was summoned to the rescue, and it did a successful job."

पिछले पांच बरसों में शिव सेना का इस्तेमाल किस ने किया, उसका कोई और सबूत इस सदन को या प्रधान मंत्री या गृह मंत्री को मुझे देने की आवश्यकता है, मैं यह नहीं समझता हूं। मैं यह मानता हूं कि पिछले साल म्यूनिसिपल चुनावों में शिव सेना कांग्रेस के मुकाबले में खड़ी हुई। इसलिए अब कोई कांग्रेस के सदस्य कह सकते हैं कि शिव सेना के साथ हमारा कोई रिश्ता नहीं है। यह बात ठीक हो सकती है, लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि उन चुनावों के बाद कांग्रेस पार्टी की पहली मीटिंग में श्री एस० के० पाटिल ने शिव सेना के बारे में क्या कहा।

> ".....at the first Municipal Congress Party meeting (March 28, last year) after the recent election, Shri Patil hailed the Sena and told its leader that he need not call himself an opposition"

हमारे प्रजा समाजवादी दल के मित्रों ने उस वक्त शिव सेना के साथ अपना रिश्ता जोड़ा और वह रिश्ता अब भी कायम है। प्रजा समाजवादी दल के विचारों, नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में इस समय मैं कुछ नहीं कहना चाहता हूं। लेकिन श्री बाल ठाकरे की प्रजा समाजवादी दल और अन्य दलों के बारे में क्या राय है, जिसको उन्होंने 28 दिसम्बर, 1968 के करैन्ट के पहले पन्ने पर दी गई अपनी मुलाकात में व्यक्त किया, वह मैं श्री नाथ पाई और इस सदन को पढ़कर सुनाना चाहता हूं।

शिव सेना की ओर से कम्युनिस्टों के खिलाफ़ इस वक्त एक मोर्चा चलाया गया है। वामपन्थी और दक्षिण-पन्थी दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों के बारे में श्री बाल ठाकरे का कहना है :

> "Both are Rascals, both are Crooks"

इसके बाद उन्होंने जो कहा, वह श्री चह्वाण के लिए है।

> "While the Shiv Sena leader was confident of keeping Communists in check in Bombay, his suggestion for action at the national level was : 'Ban the Leftist parties'."
>
> **Current** asked if he would include the Samyukta Socialist Party and the Praja Socialist Party in this proposed ban, quipped Thackeray : 'I am not discussing those buffoons now'."

मेरे दल के बारे में श्री ठाकरे की क्या राय है, उससे मुझे कोई मतलब नहीं है, क्योंकि पिछले ढाई बरसों से मेरा दल और व्यक्तिगत तौर पर मैं किसी न किसी रूप में उनके जुल्म के शिकार बने हैं। पिछले म्यूनिसिपल चुनावों में मेरी सभा पर पत्थर फेंके गये और मुझे चोट लगी। उससे पहले और उसके बाद भी हम लोगों के खिलाफ़ आन्दोलन चलता रहा है। लेकिन श्री नाथ पाई को ज़रूर सोचना चाहिए कि बम्बई में जिनके नेतृत्व को उन्होंने माना है, वह श्री बाल ठाकरे और उनकी शिव सेना प्रजा समाजवादी दल को बेफ़ून की संज्ञा देते हैं।

15.59 hours.

[MR. DEPUTY SPEAKER *in the Chair*]

मुझे आज यह बात कहने में बहुत अफसोस होता है कि एक तरफ तो बम्बई शहर में इस प्रकार की प्रवृत्तियों के साथ गठजोड़ करके राजनीति चलाई जाती है और दूसरी तरफ़ श्रीनगर में नेशनल इनटेग्रेशन कौंसिल की बैठक बुलाकर एक बहुत बड़ा डिक्लेरेशन तैयार करके दुनिया के सामने पेश

किया जाता है। यह बात समझ में नहीं आती है। हमारे दल ने श्रीनगर के उस सम्मेलन में भाग लेने से इंकार किया और कहा कि इस तरह के नकली सम्मेलनों से देश की विभाजक प्रवृत्तियों को समाप्त नहीं किया जा सकता है, चाहे वे प्रवृत्तियां हिन्दुओं और मुसलमानों के दंगे कराने वाली हों, उत्तर और दक्षिण में वैमनस्य फैलाने वाली हों या एक ही सूबे के अलग-अलग इलाकों के बीच में झगड़े करवाने वाली हों; जब तक हम बुनियादी कारणों पर प्रहार करने के लिए तैयार नहीं होते हैं, इस समस्या को हल नहीं किया जा सकता है। सरकार चलाने वाले लोगों और इस मुल्क के अखबार चलाने वाले लोगों की तरफ से इस बात को लेकर हमारे दल की आलोचना की गई थी।

स्वतंत्र पार्टी के नेता दिखाई नहीं देते हैं। श्री पीलू मोडी सदन में हैं। मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि पिछले ठाई बरसों में बम्बई शहर में शिव सेना को बढ़ावा देने की ज़िम्मेदारी कांग्रेस के बाद अगर किसी ने उठाई है, तो वह स्वतंत्र पार्टी ने उठाई है।

16 hrs.

श्री पीलू मोडी : झूठ है।

श्री जार्ज फ़रनेन्डीज़ : इन सब मसलों पर बहस करने के लिए एक सैमिनार का आयोजन किया गया और श्री मधु मेहता, श्री बाल ठाकरे, श्री मधु दंडवते और मैं एक मंच पर खड़े हुए। स्वतंत्र पार्टी के नेता, श्री मधु मेहता, का पहला वाक्य यह था, जिसको मैं कभी भी नहीं भूल सकता हूं, कि अगर शिव सेना का मतलब बम्बई की झौंपड़ियों को खत्म करना हो, तो मैं भी शिव सैनिक हूं; बम्बई की सड़कों पर काम करके जो फेरी वाले आठ दस आने रोज़ कमा कर अपना गुज़ारा करते हैं, अगर शिव सेना का मतलब उन्हें हटा कर बम्बई की सड़कों को साफ़ करना हो, तो मैं शिव सैनिक हूं।

मैं इस प्रकार के लाखों उदाहरण दे सकता हूं। उनके दल के बम्बई शहर के जायंट सेक्रेटरी, श्री नाना चूड़ासामां ने अभी-अभी अमरीका से लौटने के बाद बम्बई में ऐलान किया कि मैं अमरीका में जहां गया, वहां लोग शिव सेना की बड़ी तारीफ़ कर रहे थे। बम्बई के सार्वजनिक मैदान में उन्होंने यह वाक्य कहा था।

इसलिये मुझे यह देख कर खेद होता है कि स्वतंत्र पार्टी और प्रजा समाजवादी दल आदि दलों के लोग सरकारी पार्टी के साथ श्रीनगर में बैठते हैं और वहां पर इस प्रकार की डिक्लेरेशन करते हैं :

> "by discouraging communal ill-will and regional animosities and weaning the misguided elements of the Society away from the paths of violence....."

और बम्बई में इस तरह के काम किये जाते हैं। इसलिए अब इस बारे में किसी के मन में शंका नहीं रहनी चाहिए कि शिव सेना को बढ़ावा किसने दिया है और अब तक उसको बनाने में किसने मदद दी है, जबकि सदन के सामने ये सुबूत मौजूद हैं।

आखिर यह बेलगांव और सीमा सम्बन्धी झगड़ा सरकारी पार्टी का ही पैदा किया हुआ है। कल कई माननीय सदस्यों ने श्री एम० एम० जोशी और श्री डांगे का नाम लेकर कहा कि संयुक्त महाराष्ट्र समिति बना कर उन्होंने इन प्रवृत्तियों को बढ़ावा दिया। लेकिन वे श्री जोशी और श्री डांगे का नाम क्यों लेते हैं? वे गांधीजी का नाम क्यों नहीं लेते हैं। भाषावार प्रान्तों की शुरूआत करने वाले श्री जोशी या श्री डांगे नहीं थे, बल्कि लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी थे। वे माननीय सदस्य अपने राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास और अपने दल के इतिहास को पढ़ें और उसके बाद हमारे दल के नेताओं और अन्य वामपन्थी नेताओं पर टीका-टिप्पणी करें।

श्री कमलनयन बजाज (वर्धा) : महात्मा गांधी प्रेम से भाषावार प्रान्तों की रचना चाहते थे, कटुता और वैमनस्य से नहीं ।

श्री जार्ज फ़रनेन्डीज़ : माननीय सदस्य इस पर न बोलें, वर्ना मुझे और ज्यादा कहना पड़ेगा ।

श्री कमलनयन बजाज : ज़रूर कहिये । मैं उससे डरता नहीं हूँ ।

श्री जार्ज फ़रनेन्डीज़ : माननीय सदस्य पहले जाकर रामकृष्ण बजाज को समझायें और फिर कुछ कहें ।

यह कहने से काम नहीं चलेगा कि सीमा समस्या है ही नहीं । सीमा समस्यायें हैं और उन्हें हल करना चाहिए । उसके लिए उचित रास्ता निकालना चाहिए । प्रधान मंत्री ने इस बारे में महाजन कमीशन जैसा बेमतलबी कमीशन बिठा कर एक बेमतलबी काम किया था । श्री बसन्तराव नायक बेलगांव और सीमा सम्बन्धी विवाद के बारे में मराठी जनमत को व्यक्त नहीं करते हैं । जो लोग उसको व्यक्त करते हैं, उनसे सरकार का कोई मतलब नहीं रहा है । प्रधान मंत्री ने श्री बसन्तराव नायक के साथ षड्यंत्र करके महाजन कमीशन बिठाया । हम लोगों ने उसी वक्त सरकार से कहा था कि इस बात का फैसला किया जाये कि महाजन कमीशन किस आधार और सिद्धान्त पर काम करेगा । लेकिन सरकार ने ऐसा करने से इन्कार किया और मसले को आगे बढ़ाते रहने और फैसले को टालते जाने की नीति अख्त्यार की । उसका नतीजा यह है कि बेलगांव की समस्या वैसी की वैसी पड़ी है । लेकिन अगर कोई यह कहे कि शिव सेना का इस्तेमाल कर के यह प्रश्न फैसले के रास्ते पर ले जाया जा रहा है, तो मैं उसको मानने के लिए तैयार नहीं हूँ । मुझे आज आशा है कि शिव सेना ने बम्बई शहर में जो कुछ भी धमार उठाया उसका यह नतीजा है कि बेलगांव की समस्या के हल करने के रास्ते में उन्होंने आज नई बाधाएं, नई परेशानियां खड़ी की हैं । तो ऐसी हालत में शिव सेना किसी भी एक सम्प्रदाय को लेकर किसी भी एक भाषावाद को लेकर अपने आन्दोलन को चलाने वाली संस्था नहीं है । शिव सेना के पीछे जो शक्तियां हैं वह शिव सेना का इस्तेमाल एक ही कार्य के लिए करती हैं कि बम्बई शहर का जो गरीब मजदूर है, बम्बई शहर के जो मजदूर संगठन है, बम्बई शहर की जो समाजवादी और वामपंथी शक्तियां हैं, इन शक्तियों को खत्म किया जाय । बम्बई में अगर आज गैर-मराठी आदमियों को भगा कर मराठी आदमियों को मकान देने का कोई नारा चलाए तो इससे ज्यादा झूठ और नहीं हो सकता है । बम्बई की आज 53 लाख आबादी है । हिन्दुस्तान के हर सौ आदमियों में से एक आदमी आज बम्बई शहर में रहता है । लेकिन चव्हाण साहब को इसकी जानकारी होनी चाहिए और श्रीमती नेहरू गांधी को इसकी जानकारी होनी चाहिए कि बम्बई शहर में 53 लाख लोगों में से आज 34 लाख लोग बे-घर हैं । जिस शहर में आधे से ज्यादा आबादी बे-घर हैं, उस शहर के लोगों को, वह मराठी हों या गैर-मराठी हों, मकान देने का काम आप की सरकार नहीं कर सकती है । उसी शहर में आज महाराष्ट्र की कांग्रेसी सरकार, आप के बसंतराव नायक की सरकार एक चौरस गज जमीन को 9 हजार रुपये में नीलाम करके दे रही है । इस तरह से कौन-सी सरकार वहां के गरीब मजदूरों को मकान दे सकेगी ? जहां जमीन का दाम 9 हजार रुपये एक वर्ग गज का हो वहां यह समस्या किस तरह से हल हो सकती है ? तो मकान की समस्या इस रास्ते से हल नहीं होगी । न बेकारी की समस्या इस तरह से हल हो सकती है । आज मराठी नवजवानों में बेकारी है जैसे हिन्दुस्तान के पूरे मुल्क में अलग-अलग सूबों में बेकारी

है। अगले महीने मैट्रिक की परीक्षाएँ हैं। 25 लाख नवजवान मैट्रिक की परीक्षा मे बैठेंगे। पांच लाख नवजवान कालेजों की परीक्षाओं में बैठेंगे। और यह पढ़े-लिखे 25 लाख नवजवान जून महीने में नौकरी के लिए आपके सामने आएँगे।

प्रधान मंत्री जी हिन्दुस्तान के कोने-कोने में चुनाव प्रचार में गईं और बेमतलब की बातें बिहार, उत्तर प्रदेश, बंगाल आदि में बोलकर आईं। नीतियों पर नहीं बोलीं। एक-एक दल के ऊपर व्यक्तिगत उनके चरित्रों पर आक्षेप उठा कर आईं। इसके सिवाय और कुछ नहीं बोलीं। बेकारी की समस्या है, पिछले साल 25 लाख नवजवान पढ़-लिखकर सड़कों पर आए हैं, इस साल फिर 25 लाख आएंगे। और यह तो आप जानते होंगे कि जब मुल्क आजाद हुआ तो हिन्दुस्तान में जिनको पढ़ना-लिखना नहीं आता था उनकी संख्या थी 22 करोड़ लेकिन 22 साल के आपके राज्य में उनकी संख्या 34 करोड़ हो गई है। इस मुल्क में अनपढ़ों की संख्या पिछले 22 सालों में 12 करोड़ से अधिक आपने बढ़ाई है जबकि पूर्व और पश्चिम पाकिस्तान की आबादी इस समय 11 करोड़ के अन्दर ही है। तो यह आपका देश है जिसको आपने बिगाड़ा है, जिसको बनाने का काम आप लोगों ने नहीं किया है। ... **(व्यवधान)**

उपाध्यक्ष महोदय, तो यह अगर कोई कहे कि बम्बई शहर में मराठी नवजवानों की बेकारी की समस्या वहां के गैर-मराठी लोगों को हटाकर हल होगी तो मैं यह नहीं मानने को तैयार हूँ कि शिव सेना की ऐसी घोषणाओं पर कोई विश्वास करता हो। शिव सेना का खुद इस पर विश्वास नहीं है कि मराठी नवजवानों की बेकारी की समस्या या मकानों की समस्या इस रास्ते से हल होने वाली है। असल में आन्दोलन दूसरे किस्म का है। यह आन्दोलन इसलिए है कि मजदूर आन्दोलन में फूट डालो ताकि पूंजीपतियों की मुनाफाखोरी और बढ़ जाय और बम्बई शहर में लड़ाकू जन-आन्दोलन, क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन मिट जाय। इसलिए यह तौर-तरीके चलाए हुए हैं और इनका मुकाबिला करना है। इनका मुकाबिला, मैं यह मानने को तैयार नहीं हूं कि इनका दल कर पायेगा या यह सरकार कर पायेगी। यह भी मैं मानने के लिए तैयार नहीं हूं क्योंकि शिव सेना बीमारी की जड़ नहीं है, बीमारी की जड़ कांग्रेस पार्टी है जो पिछले 22 सालों में इस किस्म की बीमारियों को देश में फैलाने का कार्य कर चुकी है। आप हो बीमारी की जड़ और इसलिए उस बीमारी को हटाने का काम आप लोगों से होगा नहीं। यह मामला कोई बम्बई तक सीमित मामला नहीं है। जिन आर्थिक बातों को मैंने आपके सामने उठाया, यह कोई बम्बई शहर तक ही सीमित नहीं है। अभी तेलंगाना की बात आ गई। तेलंगाना की बात में भी यही तो हमें दिखाई देता है। तेलंगाना के पहले, इसी हमारे महाराष्ट्र में विदर्भ की बात आ गई। आज भी मराठवाड़ा का प्रश्न है, कोंकण के विकास का प्रश्न है। लोगों को यहां पर अभी तक शायद पता नहीं होगा कि जैसे एक तरफ शिव सेना है, ऐसे ही दूसरी तरफ कोंकण सेना है जो कोंकण के विकास के बारे में बोलती है। और कहां आप लोगों ने कदम उठाए पिछले 22 वर्षों में इन समस्याओं को मिटाने के लिए? तो उपाध्यक्ष महोदय, जो एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त के बीच में विषमता है उसका एक ही आंकड़ा मैं आपके सामने रखना चाहूंगा जिसको हमारे योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री डी० आर० गाडगिल ने श्री मधु लिमये को एक पत्र के जरिए भेजा था। जब उनसे पूछा गया कि अलग-अलग सूबों में विकास के कार्यों में किस ढंग से पूंजी को आपने लगाया, फी व्यक्ति कितनी पूंजी अलग-अलग सूबों में लगाई गई तो उसके जवाब में उन्होंने जो आंकड़े

[श्री जार्ज फरनेन्डीज]

दिए वह मैं आपको पढ़कर सुनाऊँगा ।

बिहार में जो तीन पंच-वर्षीय योजनाएँ हुईं उनमें और 67-68 तक यानी तीन पंच-वर्षीय योजनाओं में और दो सालाना योजनाओं में, पिछले 22 सालों में फी व्यक्ति विकास के कार्य में जो पूंजी लगाई गई वह सिर्फ 168 रुपये है । उत्तर प्रदेश में 172 रुपये है । जबकि गुजरात में 313 रुपये, वेस्ट बंगाल में 234 रुपये, पंजाब में 366 रुपये, मैसूर में 268 रुपये, महाराष्ट्र में 264 रुपये और राजस्थान में भी काफी है, 242 रुपये है । इसी तरीके से केन्द्र से जो मदद दी गई उसके भी आंकड़े देखें तो यही देखने को मिलेगा कि एक तरफ पंजाब में केन्द्र से पैसे मिले हैं 231 रुपये फी व्यक्ति, बंगाल में 130 रुपये, राजस्थान में 185 रुपये, आसाम में 182 रुपये और बिहार में मिले हैं फी व्यक्ति 99 रुपये और उत्तर प्रदेश में फी व्यक्ति 102 । मैं इसलिए यह आंकड़े रख रहा हूं कि जड़ को हम लोग पकड़ें, बीमारी की जड़ कहां है, इसको पकड़ने का हम लोग प्रयास करें । अगर आज तेलंगाना के नवजवान और तेलंगाना के लोग इस किस्म का आन्दोलन करने को आगे बढ़ते हों कि हमारे इलाके का विकास नहीं हो रहा है, अगर विदर्भ के विद्यार्थी यह कहने को खड़े होते हों कि महाराष्ट्र में हमारा विकास नहीं हो रहा है, हमारा अलग सूबा बनाओ और उत्तर प्रदेश और बिहार की जनता परेशानी से मर रही हो, पूर्वी उत्तर प्रदेश और उत्तर बिहार की गरीबी को देखने का प्रयास करते हों तो इसके पीछे पिछले 22 सालों की इनकी गलत नीतियां हैं । यह गलत नीतियां इनका आधार हैं और इसलिए जब तक इन नीतियों को बदलने का कार्य नहीं होता हो, विकास के ऊपर लगने वाली पूंजी, हर सूबे में, उस सूबे की आबादी को लक्ष्य में रखकर न तय की जाती हो, जब तक यह चीजें न की जायें, तब तक मैं यह कतई मानने के लिए तैयार नहीं हूं कि इस किस्म की झंझटें आज देश से दूर हो पायेंगी । फिर वह किसी न किसी रूप में आगे बढ़ेगी और इस मुल्क के पूंजीपति लोग तथा यह कांग्रेस पार्टी जो कि उन्हीं लोगों की सरकार को चलाने वाली एक यंत्र है वह इस किस्म के आन्दोलन को बढ़ाने का काम करेगी क्योंकि भले ही कांग्रेस पार्टी की ओर से श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा ने यह कहा हो कि शिव सेना को आगे बढ़ने में कांग्रेस सहायता नहीं दे रही है, मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूं क्योंकि कांग्रेस पार्टी यह चाहती है कि कोई भी राष्ट्रीय पैमाने पर एक मजबूत गैर-कांग्रेसी दल और विशेषकर समाजवादी दल खड़ा न हो । इसके प्रयास में कांग्रेस पार्टी है । वह यह नहीं चाहती है । ये छोटे-छोटे दल बने, बम्बई में शिव सेना बनी, कभी उनको पीट सकते हैं, कभी उनको दोस्त बना सकते हैं । आसाम में लचित सेना बनी, कभी उनकी पिटाई हो सकती है, कभी उनको बगल में लेने का काम हो सकता है । इस तरह से इन छोटी-मोटी पार्टियों को प्रोत्साहन देने का काम यह कांग्रेस पार्टी करती है । चूंकि उन से, उपाध्यक्ष महोदय, इनको खतरा नहीं है, खतरा है राष्ट्रीय दलों से, राष्ट्रव्यापी दलों से जो इनके मुकाबले में विकल्प बनकर खड़े हो सकते हैं । इसलिये पूंजीपति अपने मुनाफे के स्वार्थ के लिये और कांग्रेस पार्टी अपनी सत्ता के स्वार्थ के लिये तौर-तरीकों को चला रहे हैं ।

जब हमने यहां पर अविश्वास प्रस्ताव का प्रश्न उठाया तो हमारे कई मित्रों ने कहा कि यह तो रिचुअल बन गया है, यह सदन रिचुअल है । आज सुबह ही, उपाध्यक्ष महोदय, आपने प्रश्नोत्तर काल में देखा—कच्चातीवू के बारे में प्रश्न था—कच्चातीवू हमारे मुल्क का है, इतना भी कहने के लिये यह सरकार तैयार नहीं है । क्या प्रधान मंत्री जी या विदेश मंत्री जी या इन में से कोई भी व्यक्ति यह कहने के लिये तैयार हैं कि कच्चातीवू

की धरती, भारत की धरती है ? इतना भी कहने के लिये तैयार नहीं हैं। हम सुबह भी इस बारे में बोले, गुस्से से बोले, अब खाना खाकर फिर लौट आये हैं और फिर बोल रहे हैं, लेकिन इन पर कोई असर नहीं हो रहा है। आज रिचुअल का मतलब क्या है—आज जो अविश्वास का प्रस्ताव आया है—किन परिस्थितियों में आया है—यह प्रस्ताव बम्बई की घटनाओं, तेलंगाना की घटनाओं और चार सूबों के चुनाव के बाद आया है। जैसा अंग्रेजी में कहा जाता है—

"order of the boot." जब जनता ने आप लोगों को दिया, उस बाहर के अविश्वास को इस सदन में व्यक्त करने के लिये इस अविश्वास के प्रस्ताव को पेश करना पड़ा है। किस सूबे में कितनी सीटें मिलीं या कितने वोट मिले—इसको लेकर खुशी मनाना हमारा उद्देश्य नहीं है—हम जानते हैं कि वोट पाने के लिये क्या-क्या तौर-तरीके इन्होंने अपनाये हैं—मुझे को पता चला है कि प्रधान मंत्री के सिर्फ बिहार के दौरे को लेकर—उन की सिर्फ दो मीटिंग्ज को लेकर कोई तीन लाख रुपये का बिल आया है, जिसको लेकर कांग्रेस अध्यक्ष ने जाहिरा बयान दिया है कि बिहार की सरकार पैसे के मामले में बहुत लाचार मालूम देती है जो हम से पैसा मांगती है। आप क्या समझते हैं—सरकारी तिजोरी क्या कोई आपके घर की चीज है, बिहार सरकार का इस तरह से अपमान करते हो। मुझे पता चला है कि पिछले चुनाव के सिलसिले में—तमाम जगहों से बिल आये या नहीं, मुझे मालूम नहीं—लेकिन बिहार की कुछ मीटिंग्ज को लेकर साढ़े तेरह लाख रुपये का बिल—जिसमें सिक्योरिटी पुलिस का खर्च शामिल नहीं है, बिहार सरकार ने भेजा था। प्रधान मंत्री जी को तो शायद पता भी नहीं होगा, क्योंकि वह तो दूसरे बड़े-बड़े प्रश्नों से परेशान रहती हैं, इन मीटिंग्ज के बारे में जानने के लिए उनके पास वक्त कहां है, वह तो दुनियां के अन्य मुल्कों में पुल बांधने में लगी हुई हैं, गंगा पर पुल बांधने के बारे में उनकी नजर कहां जा सकती है।

उपाध्यक्ष महोदय, इन चुनावों में हम भी बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब और बंगाल में गये। हम लोग एक अपेक्षा रखते थे कि कांग्रेस पार्टी की ओर से जहां जहां गैर कानूनी ढंग से हमारी बनाई हुई सरकारों को गिराने का काम हुआ है, कम से कम इस बार जनता के बीच में जाते हुए कुछ नये कार्यक्रमों का खुलासा किया जायेगा, कुछ नई नीतियां जनता के सामने पेश की जायंगी, उनको लेकर हम जनता के सामने बहस कर पायेंगे, लेकिन वह मौका भी हमको नहीं मिला, क्योंकि बहस के लिए कुछ था ही नहीं। अगर स्थानीय कांग्रेसी उम्मीदवार ने यह कह दिया कि यहां पर जनसंघ का जोर है तो वहां पर जनसंघ पर हल्ला बोल दिया और अगर स्थानीय उम्मीदवार ने कह दिया कि यहां पर संसोपा का जोर है तो वहां संसोपा पर हल्ला बोल दिया और कहा कि इनके एक नेता ने एक जमाने में मेरे पिता पर व्यक्तिगत आरोप लगाये थे और अब इनके बचे हुए लोग हमारे ऊपर व्यक्तिगत आरोप लगाते हैं, जैसे कोई पारिवारिक दुश्मनी है। कौनसी पारिवारिक दुश्मनी है, प्रधान मन्त्री जी, बतलाइये, कौनसे व्यक्तिगत आरोप हमने लगाये हैं ? अगर हम खड़े हो कर यह कहते हैं कि वक्स हाउसिंग मिनिस्ट्री की रिपोर्ट उठा कर देखिये, उसमें लिखा है कि इस समय हिन्दुस्तान में जिन लोगों के पास मकान नहीं हैं, उनको मकान देने के लिये साढ़े सात करोड़ मकानों की जरूरत है। आप जगन्नाथराव के मन्त्रालय की सालाना रिपोर्ट उठा कर देखिये—अगर इस बात को लेकर हम देश की जनता के सामने शिकायत करें कि जहां साढ़े सात करोड़ मकानों की जरूरत है, वहां प्रधान मन्त्री साढ़े सात करोड़ मकानों की बहस नहीं चलाना चाहती,

[श्री जार्ज फरनेन्डीज]

तीन मूर्ति चलें या नया मकान बनायें—इस बात पर वह बेचारी परेशान हैं—क्या आप कहेंगी कि यह निजी आरोप है ? इसमें क्या निजी बात आ गई, इसमें क्या पारिवारिक दुश्मनी है ।

उपाध्यक्ष महोदय, यह कहा गया कि संयुक्त समाजवादी दल की कोई नीति नहीं है, इस दल के पास कोई कार्यक्रम नहीं है । मैं आज प्रधान मंत्री को चुनौती देना चाहता हूं—हमारे कार्यक्रम को लेकर वह जहां चाहें हम बहस चलाने के लिये तैयार हैं, आप वक्त मुकर्रिर कीजिये, हम बहस चलाने के लिये तैयार हैं । आकाशबाणी के मंच को ले लीजिये, हिन्दुस्तान के अखबारों के मंच को ले लीजिये या किसी भी मंच को ले लीजिये—हम अपने दल के कार्यक्रमों और इस देश को बनाने के लिये अपनी योजनाओं पर बहस करने के लिये तैयार हैं ।

प्रधान मंत्री जी को एक शिकायत हो सकती है और वह दुरुस्त है कि फूलपुर की सीट हमारे एक नौजवान मित्र जनेश्वर मिश्र ने छीन ली है, जोकि आपके परिवार की सीट बनी हुई थी । यह पारिवारिक बात जरूर है । कांग्रेस पार्टी को अब कुछ सबक सीखना चाहिये, 22 साल के बाद आज देश में जो हालत पैदा हो रही है, उस पर अन्तर्मुखी होकर विचार करें । इस प्रजातन्त्र को बचाने के लिये जितनी हमारी जिम्मेदारी है, उतनी आपकी भी है, अन्तर्मुखी होकर अपनी गल्तियों को सुधारने का काम कीजिये । अगर ऐसा नहीं करेंगे, तो बम्बई के एक नामी पत्रकार श्री ए० डी० गोरवारा ने बम्बई की घटनाओं को लेकर कांग्रेस सरकार की कब्र पर लिखा जाने वाला जो वाक्य लिखा है, उसको पढ़कर सुनाता हूं :

> Poor-spirited and mean-minded men they were, and in their time, they permitted simple, decent folk to be vilely maltreated, oppressed and thrown to the wolves, uttering by pocritical, high-sounding sentiments all the while.

महाराष्ट्र सरकार की कब्र पर लिखने के लिये यह वाक्य श्री गोरवारा ने ओपीनियन के 11 फरवरी के अंक में लिखा है, यही वाक्य हिन्दुस्तान की कांग्रेस सरकार की कब्र पर लिखने की हालत पैदा हो जायगी ।

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI Y.B. CHAVAN) : Mr. Deputy-Speaker, Sir, this No-confidence motion is being discussed here for the last two days. I am intervening in this to put certain facts before the House. They do not like it to be called a routine motion. Maybe an accepted routine, but it has certainly become routine, because practically in every session we are discussing this. Of course, it is a legitimate routine. I do not deny that.

After having heard the speeches for the last six or eight hours, I find that two or three things were emphasised. The first was that what happened in Bombay was the result of the movement or disturbances started by the Shiv Sena.

I must say, at the outset, that I am ashamed of what happened in Bombay. But I am sorry that the analysis that some Members made about it—if it were true, certainly I won't mind and if some people are really responsible they should face the consequences—takes us astray from the real problem. I find that Shiv Sena is by its very character, by its very nature and ideology, a peculiarly Indian fascist movement. It is a fact. And, as every fascist movement takes advantage of gullibilities of other political parties—I hope I will be excused for using this term—they have very characteristically exploited those gullibilities of all political parties in Bombay including the Congress. I find that at the time of some by-election and during general elections the Shiv Sena people did push themselves in the Congress ranks and propagated for the Congress candidate. But that does not mean that they have anything to do with the Congress as such. They tried to win the sympathy of the Swatantra workers. It is a known fact and I do not think anybody can deny it. I can say that this had nothing to do with the national leadership of the Swatantra Party.

SHRI RANGA : It had nothing to do with them.

Y. B. CHAVAN : I concede that position. But it is a known fact that some known Swatantra workers in Bombay are openly associating themselves with Shiv Sena.

SHRI RANGA: All on their own.

SHRI Y. B. CHAVAN: I can see that. I know also that some of the leading businessmen of Bombay are openly holding brief for Shiv Sena because they have somehow convinced themselves that Shiv Sena is an instrument to fight communism. Some hon. Members may not agree with it, but I have always found that they have a very clever understanding of the problems, which problems to push and when.

Now they have taken the problem of the regional trouble between two States on the border issue. As is known, this is a sensitive issue both in Karnatak and Maharashtra. It is a very sensitive issue and now they have started taking advantage of this trouble. I may even go further and say that some of the political parties who are now complaining and protesting against Shiv Sena—I wish my prophesy comes untrue and I am wrong—if they think that this issue is something like a stick to use against the Congress and Government may possibly have a common front, a united front against Congress on the issue, with Bal Thackerey as their leader.

SHRI PILOO MODY : Except Swatantra.

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : शिव सेना की मदद के लिए कामन फ्रन्ट हम बनायेंगे ? आप इस बात को स्पष्ट कीजिये ।

SHRI Y. B. CHAVAN: If you have not understood what I said, I will certainly explain it further. I am saying that they have taken now such an issue that possibly they might tempt you all to come and join them for some sort of united action about the border issue.

SHRI PILOO MODY: Except Swatantra.

SHRI Y. B. CHAVAN: They have done that on other occasions. This is the main thing that we have all to guard against. It is no use blaming this party or that party because they have taken advantage of certain basic problems. There is the problem of unemployment. There is unemployment in every city. This is a basic issue today. Therefore, naturally the birth of the Shiv Sena was to exploit the regional feeling, and regional feeling is a reality practically all over the country. We saw what happened in Assam and Telengana. We are unfortunately witnessing what is happening in Maharashtra. So, really speaking, we will have to go rather deeper into this problem. One thing I will have to say here. Unless all political parties, all democratic political parties accept that these issues which are the inherent defects of Indian society historically, namely, the language problem, the communal problem, the regional problem, are not to be taken to the streets under any circumstances, there is no hope for us.

SHRI S. M. JOSHI: It should not be decided unilaterally by the government.

SHRI Y. B. CHAVAN: I do not want any problem to be taken to the roads or streets but if at least for these three problems we take such a decision it will take us a long way towards the solution of this problem. If we all agree on other problems also, well and good. But, for God's sake, at least these three problems let us not take to the streets.

SHRI RANGA: You yourself and your President are failing to do it; you have not implemented that report.

SHRI Y. B. CHAVAN: If that feeling gives him satisfaction, I do not want to come in the way.

SHRI RANGA: You appointed it.

SHRI Y. B. CHAVAN: Merely oversimplifying problems does not lead to solution. If you want to blame me, that is a different matter. It is not my own personal problem; it is the problem of a State. It is no use merely trying to criticise some responsible persons. I would certainly accept anything that is suggested by this hon. House. I can guarantee that. I can bind myself to that.

SHRI RANGA : Why don't you solve it as the Home Minister ?

SHRI Y. B. CHAVAN : Give us the solution. I am prepared to accept the solution given by this hon. House. I will stand by whatever solution it gives. Give us the solution.

SHRI BAL RAJ MADHOK: Why can't you devise some solution ?

SHRI Y. B. CHAVAN: Shri Ranga said that I should tackle the problem; so I said "give us the solution".

SHRI P. RAMAMURTI (Madurai) Don't give the mandate party-wise; then we can solve it.

श्री मधु लिमये : बहुमत आपका है लेकिन आप हम से कह रहे हैं ।

श्री यशवन्तराव चव्हाण : यह बहुमत से साल्व होने वाला नहीं है, सबको साथ लेकर होने वाला है । I wish it were a problem which can be solved by mere majority. It is not a question which can be solved by mere majority. It is a question which can be solved only by taking everybody with us, and that is the difficulty that this Government is also facing. I know I must speak for my government. It is rather a difficult problem, inherently difficult problem, because we have to see that we take the Mysore people and the Maharashtra people with us. We all know that every political party gets divided on this issue.

SHRI P. RAMAMURTI : Not my party.

SHRI Y. B. CHAVAN : All parties are divided on this issue.

SHRI E. K. NAYANAR (Palghat): Our party is not divided on this issue.

SHRI Y. B. CHAVAN : Which is your party ? I know why you are not divided on this issue. You have no strength either in Maharashtra or in Mysore.

SHRI P. RAMAMURTI : We have strength in Tamil Nadu, Andhra and Kerala. Still, we have never divided on the border issue. Both the units spoke with the same voice.

SHRI Y. B. CHAVAN: I am glad you are not prepared to bungle on State boundaries, but only on national boundaries.

SHRI UMANATH : Even on national boundaries we have not bungled. Ultimately you will see it, as time passes.

MR. DEPUTY-SPEAKER: It was a repartee.

SHRI UMANATH : I am also speaking in the same spirit. He said that on the national boudaries we have bungled. It took such a long time for them to understand that we have not bungled on the inter-state boundaries. It will not be long and they will understand that we have not bungled on the national boundaries either.

SHRI Y. B. CHAVAN: Of course, it is a pleasant diversion, but I am not prepared to pursue that matter. Let us pursue what we are facing.

So, my main point is that regional problems are very difficult problems. These are not problems of any particular party or particular regions. This is a problem on which the nation will have to sit up very quietly, have a little introspection, some self-criticism and try to find out a solution. It is no use somebody from that side getting up and saying "you are responsible" and I myself getting up and saying that it is the other side that is responsible.

SHRI PILOO MODY : But are you willing to listen to anyone ?

SHRI Y. B. CHAVAN : Yes, if it is a word of wisdom. I am listening all the time. What else was I doing ?

SHRI S. M. KRISHNA (Mandya): If it was a word of convenience.

SHRI Y. B. CHAVAN : Let me come

back to the facts about the Shiv Sena. I have something to do with the Maharashtra Pradesh Congress Committee. I think, I should own up any mistakes that the Maharashtra Pradesh Congress Committee has done because I have some share in the work of the Maharashtra Pradesh Congress Committee.

As far as the character of the Shiv Sena is concerned, I would like to say that the Maharashtra Pradesh Congress Committee published its assessment of the Shiv Sena a long time back, in 1967. We are on record. We have published a resolution. I would like to read the resolution for the information of the Members of this House. The meeting of the MPCC, which was held in Poona, had passed a resolution on 23rd August, 1967 which said :—

"The Executive Committee of the MPCC deplores the activities of Shiv Sena which has created a feeling of uneasiness among certain sections of the population in Greater Bombay specially those belonging to some of the southern States. It declares unequivocally that it believes in the right of every Indian irrespective of any caste or creed to reside in any part of the Republic of India and carry on the vocation he likes. It reaffirms its faith in the multi-cultural character of our people and pledges to do all it can to give the fullest opportunity of growth and development of all the linguistic groups which have settled in any part of Maharashtra and made it their home. It assures them that they are as much part of Maharashtra as Marathi-speaking people are and are entitled to the fullest protection of the State."

This is not something that is said now. They had incurred the wrath of Shiv Sena even then.

SHRI S.M. BANERJEE : There is no operative part in that.

SHRI Y. B. CHAVAN : It was an assessment of the Shiv Sena and it was the declaration of the faith of the MPCC in this matter. As a matter of fact, there cannot be any operative or inoperative part; the whole resolution is an operative one.

SHRI S. KANDAPPAN (Methur): The operative part is to attend their anniversary.

SHRI Y. B. CHAVAN : Please do not take it lightly. I would try to explain some of the things.

Yesterday Shri Ramamurti read some part of the speech that Shri Vasantrao Naik made. I had some talk with him yesterday and tried to find out what exactly the whole thing was. Possibly some of the extracts that have been quoted are taken a little out of context. As Chief Minister—he was also the Information Minister of the State—he attended some celebration about the folklore *Sammelan* or some such thing. In that this *Marmik* ceremony was there. It was at some time in 1966. Shiv Sena had not yet taken its new form. I may tell hon. Members that *Marmik* was a very popular cartoon paper, the only cartoon paper in Marathi. The editor, Bal Thackaray, was a likeable young man. Even in the days of the *Samyukta* Maharashtra movement of 1955-56 he was one of the popular cartoonists and possibly had all the associations with that movement. He happens to be the son of a very old respectable journalist of Maharashtra. His father is known as Prabodhankar Thackaray. There is some respectability about the man's family. Nobody thought at that time that this was going to take the ugly form of Shiv Sena and so on. On that occasion Shri Naik went and addressed the meeting. What he said at that time—what Shri Ramamurti has explained—was not a special thing. What he said was, "Blind men grind, dogs eat away." It is a very popular Marathi saying ; it is not something which is special. It is a very popular folk lore.

'आधल बलत कुत्त पीठ खातें'

श्री एस० एम० बनर्जी : अंधा बांटे रेवड़ी फिर फिर अपने को दे ।

श्री यशवन्तराव चव्हाण : हां, हां यही है ।

He attended that meeting. I have got

[Shri Y.B. Chavan]

a message from him. I have got some statement also from him.

I am, of course, reading the portion that is relevant. In that meeting, he said:

> "Poor south Indians, after all, are they not our own people? They have every right to live with us. Have they not contributed like others to the building of Bombay and building of this nation? They have every right to remain here."

He has also said these things. This is what the Chief Minister has said. Mr. Ramamurti quoted him in his speech. At the same time, he also said these things. If you take a little, something, out context, that is not fair. As the Chief Minister, he has naturally to go and deal with every section of the people. Even if they are misled people, he cannot say, "You are misled people, I do not want to come and meet you and talk to you." It is his duty to go and find out what their problems are, to go and understand their feelings and try to take them on the right path.

I had called a meeting of the Chief Ministers about the matter of Sena problem. We were discussing this problem. Our revered leader of Tamil Nadu, late Mr. Annadurai was there—he is on record—and he said:

> "Don't merely go and blame these people. Like all wise men, call them, talk to them, find their problems and try to remove their problems. I know they are misled people."

The Chief Minister is like a head of the family in a State. He has to go and try to understand the people. Only because he attended one function, if you are going to say he is responsible for the movement of Shiv Sena, I am afraid, you are trying to be unreasonable and unfair to him.

It was also said that the President of the M. P. C. C. went to the function. I had the occasion to explain the position in the other House. He did accept the challenge. He said, "I will love to go and meet them." He went to the meeting and told them—the speeches are published—in their own meeting, "Your problems may be true. But the methods that you are employing are wrong." He had the courage, the guts, to go and tell them in their own meeting about it. If you merely say that this type of association is meant to be supporting Shiv Sena, that is not fair.

Now, coming to what happened this month, I must say one thing that, whether right or wrong the Maharashtra Government could not anticipate what was likely to happen. May be, there are two reasons for it or at least one reason for it.

श्री रवि राय : असम में भी वही हुआ लच्छित सेना के बारे में ।

श्री यशवन्त राव चव्हाण : मैं मानता हूं ।

They might have felt that over-reacting at a wrong stage possibly might get things out of hand because it was not Shiv Sena they were tryiny to treat but it was the sensitive issue of the border dispute that they were trying to treat. That possibly may be the reason why they failed in the assessment of what would happen. That seems to be the fact. At least, this is what I felt. But the moment they saw that the things were taken an ugly turn and trying to be violent, I must say, they acted firmly. Naturally, when things spread in a city like Bombay, it becomes some what difficult to control immediately. So, this is about Shiv Sena. I would like hon. Members to understand the whole problem in its proper perspective and then come to any conclusion they like. But I would, certainly, say that those who are handling the situation would need some sympathetic understanding of their difficulties.

SHRI S. M. KRISHNA : What is your assessment of Shiv Sena?

SHRI Y. B. CHAVAN : As far as Shiv Sena problem is concerned, I think, everybody has learnt his lesson about this matter and, I do not think, Maharashtra Government also can afford to take a risk of making any mistake in the assessment of Shiv Sena.

I have no doubt and, personally, I had never any doubt about Shiv Sena. I am the only unfortunate person who gets kicks from Shiv Sena in Bombay and gets kicks in Parliament because of Shiv Sena. I do not mind it. Possibly I am trying to take a balanced view in this matter.....

SHRI UMANATH : You are hefty enough to bear that.

SHRI Y. B. CHAVAN: I think, I am. I do not mind, if that is the role that I have to play, if that is the price that I have to pay; if, by paying that price, I can solve it, I will not be sorry for it.

As far as Telengana is concerned.....

SHRI HEM BARUA (Mangaldai): You have not condemned the violent activities of Shiv Sena.

SHRI Y. B. CHAVAN : I have. I began by saying that I was ashamed of it. I said, it is a fascist organisation and I am ashamed of it.

About Telengana, these are some of the problems which are arising out of the reorganisation of States in 1956. I think, it is very State has its own regional problems. I think, it is very necessary in India. Andhra and practically in all the States, that those who are responsible for the political affairs of the State should not only be responsible for the administration of political affairs but they should always bear in mind the regional balances and imbalances.

Some misunderstanding arose between Telengana and the Andhra part; may be, there was some justification or there was no justification. But unfortunately, whenever such problems arise, the wrong people take hold of it. Sometimes rumours spread and it is the rumour part of it which did the damage to Andhra. The Chief Minister, when he saw that things were going bad, understood the implications of it and passed certain orders and at the same time called the leaders of all political parties and arrived at certain agreements. I am sure that those agreements will be implemented in the proper way.

As far as the employment problem is concerned, we have, in the other House, moved a Bill to extend the continuation of the relevant section in the Parent Act by a further period of five years. If the other House and this House would agree, we would be adding certain more amendments to it, so that the employment conditions may be made applicable to other corporations, etc. We can discuss this when it comes before the House. There also, unfortunately, there was some misunderstanding about it. Every one of us should wish well the Andhra people and the Andhra State and say things, utter things, in such a way that the people of Telengana and the people of Andhra remain in one State and keep their friendly relations.

I think, the two major problems which were mentioned in the speeches.....

SHRI S. M. BANERJEE : What about Central Government employees?

SHRI Y. B. CHAVAN : I thought, you had heard enough from me about this. I have nothing more to add to it.....

SHRI S. M. BANERJEE: The assurances have not been implemented.

SHRI Y. B. CHAVAN : About that, I have nothing to add.

SHRI M. L. SONDHI (New Delhi): You should take a balanced view.

SHRI Y. B. CHAVAN : I am glad that Mr. Sondhi is thinking of balanced view. About Central Government employees,

[Shri Y.B. Chavan]

we have said that we have taken certain positions in this matter. We have not taken any vindictive attitude in this matter. Wherever understanding was necessary, wherever sympathy was necessary, it has been shown. That is all that I can say about it.

About the other issues, I do not think that I should mention them, but I was very intrigued to listen about the analysis of the elections, particularly. This is the main point on which this no-confidence motion has been raised. First of all, let me congratulate the United Front on their very good success in Bengal. We do not mind it ; you have won it. But take it with a little courtesy. At least one can understand people who lose to lose possibly their balance, but people who win should not lose their balance. I am glad that they have won. We wish them all well. We wish that they remain together united.

SHRI PILOO MODY : Have you got some doubt about it ?

SHRI Y. B. CHAVAN : We also pray that they maintain the spirit of the Constitution and become one of the strengths of the Indian nation. This is all I can say.

But may I ask other political parties why they are rejoicing ? I cannot understand it.

AN HON. MEMBER : What about Dharma Vira ?

SHRI Y. B. CHAVAN : As a matter of fact, it is rather too early to make an analysis of the 1967 elections and the midterm elections. In the very larger canvas of Indian political life, it is rather too premature to come to any conclusion as yet in that respect.

I know the Congress Party is not what it was before...

AN HON. MEMBER : Declined. Admit it.

SHRI Y. B. CHAVAN : Sometimes it will decline ; sometimes it will come up again. It has now become the fashion for everybody to get up and ask 'what have you done for 22 years ?'' At least, we remained in power for 22 years (*Interruption*).

श्री रवि राय (पुरी) : 22 साल गद्दी पर बैठे रहे हैं, इतना ही किया, और कुछ नहीं किया ।

SHRI Y. B. CHAVAN : But it was not possible for my good friends to remain in power even for 22 months. So what is use of asking, 'What have you done ?'

SHRI PILOO MODY : As long as they are in power, they need not worry about what they have done.

Shri Y. B. CHAVAN: Speaking about other political parties, I do not know why Atal Bihari Vajpayeeji is so happy about the result.

हमने किसी के चरण नहीं छुए लेकिन चरण सिंह के चरण आपने अवश्य छुए हैं ।

I remember at that time in 1967, one of the leaders of the Jana Sangh took pride that they took away one of our important persons from the Congress Party. But after two years that same important person has whipped them out of their position.

सोचने की बात है ।

Sometimes our friends take statistical consolation in proving that we have got the same percentage of votes. At least, we have some statistical satisfaction. But what about statistical satisfaction for them ?

I do not understand the jobilation of the Right Communists. My hon. friend, Shri H. N. Mukerjee, was very eloquent about it. Whenever he speaks, we always listen to him with great respect. May I ask him what is the performance of his party in other States ? May I warn his party and other political parties in Bengal that after a couple of years possibly they will come to this hon. House and say, 'We are sorry we joined with the other political party'.

SHRI VASUDEVAN NAIR (Peerwade): Do not worry about that.

SHRI Y. B. CHAVAN: I never like to make political prophecies, but I would certainly like to make this political prophecy, that all those political parties who are today very joyful for having united with the Communists (Marxist) will after a couple of years find that they are prisoners of that 'United Front'. If this prophecy proves wrong, I will be happy, but my fear is that I am not going to be wrong in this matter.

SHRI SHEO NARAIN: You are correct.

SHRI Y. B. CHAVAN: My main point is this. They have won the elections there, but why no confidence in this Government ? If you have won the elections, please run that government. I do not see any relation between their victory in Bengal and no confidence in this Government.

SHRI S. M. BANERJEE: You toppled them.

SHRI MADHU LIMAYE: You dismissed them.

SHRI Y. B. CHAVAN: Certainly the political background of India is in the process of change. It is some sort of a transitional period. Every political party is trying to put its point of view before the people.

In this matter, whether political parties are wise or not, I am glad that the people of India are very wise. I have got great faith in the wisdom of the people of India. Parties may come and go; parties may prove wrong or right; ultimately it is the will of the people that is going to triumph in this country. We are very glad about it. We are a Government here because people are with us and as long as people are with us, we shall remain here. They may move any number of no-confidence motions, but that is not going to change the people.

SHRI NATH PAI (Rajapur) : I should like to begin by congratulating those of my colleagues who have raised the level of this debate. We were normally used to first class performance from this side of the House; for a change we got three really good speakers from the Government benches. I was deeply impressed by the performance of not only Mr. Ramamurti but also I must mention the very fine contribution made by Mr. Dandekar and Prof. Hiren Mukerjee and even Shri Fernandes inspite of his innuendos and insinuations. There were two very remarkable contributions from Mr. Venkatasubbiah and Shrimati Tarkeshwri Sinha. The Home Minister was of course in very good form and if we want him to fail in his performance, the best thing would be to leave him alone; I suggest this to my friends.

To start with I should like to mention one thing as a clarification on the moving of the no-confidence motion. Those who have moved it are a little agitated and annoyed with the stand which my party has taken. I do regard it as the most serious weapon in the armoury of Parliament and therefore it needs to be used with the greatest care and concentrated effort and preparation and utmost caution. I should like one day to make such an effort and then would I like to move such a motion so that not only will we get every Opposition vote; but if we make an effort properly, there are many *chupa* Charan Singhs who will also join us and the motion will be adopted (*Interruptions.*)

AN HON. MEMBER : He is living in a fool's paradise.

SHRI NATH PAI: They are there, ready and waiting in the Central Loby. It is therefore that we did not lend our support. We should like to make this clear. When attacking, attack properly, use your fullest possible strength, energy, resources and forces.

This particular debate has been carried on under the shadow of the outburst of violence in many parts of the country, particularly the shadow of what transpired in Bombay has dominated this debate. Before turning my attention to that, I should like to mention one or two things. First, about the elections. I am not going to delve into statistics because they could

[Shri Nath Pai]

be thoroughly misleading to those who use it and for those against whom they are employed.

The Prime Minister played upon one very persistent theme for want of anything better. Throughout her election tour, she said: if you want stability, vote for the Congress. Wherever she went, she exhorted her audience to do this. What was she offering : stability. I think she will sit and reflect and not take a complacent view of things. I know the retort will come: what about you ? We can go deeper into the decline of the democratic forces in this country. But there is this rejection of the only thing that they had to offer: stable Government. What does it signify ? The kind of barren stability which their party signifies has been the stability of stagnation, of frustration and of the falling of living standards. It is only this stability which they were capable of offering and it is this meaning of stability in the minds of our people that had been so categorically rejected.

This is something to pause and ponder about.

17 hrs.

Mr. Deputy-Speaker, there is another thing which I would like the Home Minister—he is no longer here—to consider. Last year we debated a motion moved by me in this House, saying that the office of the Governor of a State is not to be used as an agent of the party in power at the Centre, but as an instrument of the Constitution, for the upholding of that Constitution. When that debate came, Shri Dandeker goaded, guided and misled the Government and precipitated the downfall of the Government in West Bengal. I am absolutely sure, had the Government of India waited, it would have been different, and it becomes a tragedy when civil Servants are to be the main deciding factor in taking what is essentially a political decision. Mr. Dharma Vira may be a very brilliant man and may be a man of great integrity, but certainly such vital issues as to whether the fate of a Government should be decided on the floor of the House, in the Chamber of the Speaker or in the Governor's house ought not to have been decided by the advice and opinion of a member of the ICS. I am not very disrespectful of them. (*Interruption*)

SHRI MADHU LIMAYE: The Union Cabinet.

SHRI NATH PAI: I am coming to that. Otherwise, we were told—and what happened ? Mr Deputy-Speaker, I have also toured West Bengal. I have not persuaded the people of West Bengal to give up their noble tradition of patriotism, of fervent nationalism. Bengal has not forgotten that it is the cradle of the renaissance of India; Bengal has not forgotten that it was Bengal which gave the clarion call for slumbering India to rise from the thraldom of the foreign occupying power. All this throbs in the Bengali mind. It was not, therefore, so much as embracing this creed or that creed, right communism or left communism; it was a rejection of those policies which you tried to pursue; particularly, it was a vote against the Central intervention in the legitimate affairs of the people of West Bengal. The massive vote of protest by the people of West Bengal has been against this action. Will the Government try to drop that ? The major lesson to be drawn from that is that the fate of Government shall be decided by the representatives of the people, neither by the Union Government nor by the Governor, nor, as it happened in one case, by the speaker.

Mr Deputy-Speaker, while I was touring I discovered not something noble, something inspiring, but something deeply distressing. I was brought up on the belief that what holds India together, in spite of many pulls in the contrary direction, is that great cultural tradition, our heritage, our history, our culture. But now, I discovered suddenly to my dismay and shock, that what is holding us together are not those silken bonds of common culture, common heritage and common outlook on life but a common degree of backwardness, a common exploitation, the same kind of frustration, the same kind of demoralisation. From Kerala to West Bengal, what holds us together is that we

are all equally backward, equally poor, equally demoralised. And it is this negative explosive material that is the binding factor in the India of today.

Something, I think, the Prime Minister through the phalanx of policemen who guarded her meetings, was able to say; sometimes she might not have been able to say, because she makes some remarks with a strange sense of humour, as in Muzaffarpur where I followed her the next day. She said:

"कोई कोई यहां खड़े हैं और चुनाव लड़ रहे हैं"

imitating the fine style of her departed father.

"सुना है कि है कोई पी.एस.पी. है। पहले सुना था कि खत्म हो गई है, मगर कुछ खड़े हैं"

(*Interruption*) Yes, yes. I have got those papers with me. I think her history is terribly bad, but why should her geography be so bad also ? Well, I would not go deep into it, but in this manner the election campaign went on. That very candidate to whom you have given your massive support was defeated; we have been defeated also. Now is not the time for any remorse.

Now, the Government also should ponder over it: whether the so-called demonstration of fake strength against the Government employees has paid any good to anyone. Their families were maligned and victimisation was let loose. Let Mr. Chavan protest against it 20 times, but the fact remains that for asking for what is most legitimate even in the capitalist countries, the employees have been victimised in this country. And, the price had to be paid by that party in Bengal. There was the agony of the Government employee whom you condemed and ridiculed as Class III and Class IV, the man whom you summarily dismissed and took pride in it. He had his day when the voting came and for this also, you have been penalised. These are serious things to contemplate.

I would have liked to touch upon Foreign Affairs but I hope she is going to provide us with an opportunity for that. We are aware that she has technically divested herself of that portfolio, but I think she remains basically responsible for it and the source for inspiration for the policies or lack of them which we are seeing. There are one or two things I would like to say. I think she attended the Commonwealth Conference. She was representing the biggest member of the Commonwealth. I think many of you Sir, have seen the picture, which is an official photograph. What I am mentioning is a small matter, but it is a very significant matter, significant in showing the decline of the status, prestige and place of this country in the eyes of the world. Whatever may be our own estimate about her performance, we may or may not agree with the word used by Atal Behariji and he has rectified it promptly, but the fact remains that she represented the biggest democracy in the world. As it was, she happened to be the only lady present. But they know they could take India for granted and take her for granted. And, the normal courtesy known to the British was not extended to the Prime Minister of India. Shyly like a school girl about to receive her prize, she is standing behind the Queen of England. Her proper place ought to have been in the front row. This is not a small matter. I do not want a lecture on protocol that she was coming for the first time, that there were Heads of States and all that. We are not intersted in this rubbish. I have to draw the necessary meaning from this. This was a measure of the real standing of India and of the Prime Minister of India in the counsels of world. She has to take her humble position somewhere behind and no longer in the first row.

I do not want protocol explanations. I have seen England and she had been brought up there. One thing that marks the British is the unfailing degree of courtesy to ladies. She was the only lady present apart from the Queen and that courtesy ought to have been extended to her. But why was it not done? Please get out of that Commonwealth. If you want to stay, atleast have this gumption, courage

[Shri Nath Pai]

and vision that this nation's Prime Minister does not take a place in the back row. The Prime Minister of this nation presides at the Commonwealth meeting. This should be the approach. But we have fallen so low that anybody can kick us anywhere in the world. Of course, we will come with the explanation of protocol.

There is one small thing I would refer to before I come to Telengana and Bombay. We have an eminent scholar, statesman and patriot in the form of Dr. Zakir Hussain, as the President of India. I have nothing but the highest regard even when we opposed his election, for his service, scholarship and that very rare quality—the quality of a real gentleman, which he symbolises for us. But I do not understand his and his Government's hanging on to this pathetic emblem and symbol of an age that is dead—the President of India having a flag of his own on the Rashtrapati Bhavan. This is an archaic hangover from an age of monarchy, which we never had. We are so much aping the British. It is said, the Queen of England has her own standard when she goes to the Epsom. I have not gone there; it is very expensive. But now and then we read that the Queen has her own standard. But the Queen of England is not the elected head of the U. K. She is the hereditary monarch of the realm of the U. K. For the President of India, there should be only one flag as in any other Republic and democracy—the Ashoka Chakra and Tricolour. We raised the matter once, but we did not get any response. I do not mean any disrespect to the President of India. But these who are supposed to advise the President, should take into consideration that we do not want these Vestiges of the feudal age, the President of India having a flag of his own, different from the national flag. I have no objection about the vehicle, but about the old feudal atmosphere one feels a little disturbed. It is not good for the spirit in which we are living, for the truly republican spirit.

I have heard some mention about me but I will not allow that to prejudice what I have to submit. I have seen a statement here. That also does not worry me. What we are discussing, what is causing anguish and anxiety in the minds of many, not only my mind but the minds of many, is this atmosphere of violence in the country. We saw shocking demonstrations of this in Telengana in Andhra. We saw it in Monghyr where fire-arms, guns, knives and swords were used by men to fight. They were all Indians. We saw a gruesome demonstration of it in Tamilnadu—your party was not responsible. When this kind of violence grips our people we should try very seriously to take a proper perspective view of what is wrong.

This is a problem which is worrying other countries also, but the approach of the other countries where violence is threatening is not this superficial hand-to-mouth approach which the Government of India is specialising in. In the past two years, Mr. Deputy-Speaker, you are aware of the unprecedented scenes and outbreaks of violence in the United States of America on the legitimate issue of civil rights of the Negroes. The President of the United States apart from trying to do what he can for giving them the civil rights—perhaps it was inadequate—did something very sincere and in the long run he appointed a Commission for violence. They have produced a monumental report. I have no time to read from the pages of that. This report is a useful guide for all of us.

What is the genesis, what is the anatomy of violence? Why should people lose all sense of proportion? Why should one man fight another fellow-being? In Maharashtra it may have appeared to be the so-called Maharashtrians attacking some non-Maharashtrians. It is a lasting shame and nothing can be a more portend of danger to the unity of this country and in future an Indian for the retrieval of an alleged wrong will raise his hand against a fellow Indian. He can legitimately do that against the Government, against the authority, against the state, but surely not against a fellow Indian. The United States confronted and

challenged by the spectacle of violence has done something basic. There are pages which tell you how often the police have gone wrong, how there was no appraisal of the underlying roots. I am very glad in this matter both Shrimati Tarkeshwari Sinha from that side and practically every speaker who spoke have asked the Government not to persuade itself that what happened is now over, the trouble in Uttar Pradesh is over, the trouble in all other parts is over or the trouble in Bombay is over. There are a variety of reasons for it. When I say it let not distortion and misrepresentation be brought that their was a glorified justification of what transpired. We cannot do anything but condemnation of all this kind of things.

Will pontifical condemnation, I want to ask this House, help us. Have we not all these twenty years condmned outbursts of violence? Has it mitigated it, has it curtailed it, has it stopped it, has it led us to the path of sanity? Of course, condemnation is necessary. Let us not spare words when we go on with condemnation. Let us not take any shelter behind any kind of trying to hedge here and there. Let us be forthright, straightforward, honest and sincere and from the very heart.

My party's name was mentioned—not by anybody here. Even George was kind to explain to me what he meant. As a friend I asked him and he explained to me. Unfortunately I did not know that the riot was coming. Therefore, I could not have gone there in anticipation to play the role of a peace-maker. I returned from a tour of Panjab and when I heard about the riots I rushed.

George told of his experience. I think it was a common universal experience. In a car which was cosmopolitan, typical Bombay, a Parsee lady, a Gujarati gentleman, a Maharashtra Professor and one other gentleman, we were driving. It was night and we had hardly driven a furlong from the airport when the car suddenly came to a screeching halt and the driver said in Marathi: बाप रे हे पहा A few feet ahead of us there was a big barricade. Even before we could see what was happening, we saw a young man with a huge rock about to hurl. Professor said: थाम्बा, थाम्बा: "Please stop. What are you doing? We have Nath Pai with us." The young man asked. "Who is this Nath Pai" ? कुठले नाथ पाई ?

By that time I was out of the car and I replied to him:

"I do not know how many there are, but I am one. Now, what is happening" ? He put down his hand at that time and I saw a crowbar. I asked him why he was doing it. He said:

[*Quoted in Marathi*]

I refrained from condemning him because I wanted to know who were doing this and why. I am sorry, I have to quote verbatim what has transpired. I asked him: "why are you doing this? Why were you about to assault me and my colleagues?" The young man said "Our homes have been burnt and so many of our men have been shot by the police; we want to take revenge and we will not allow anybody to go."

I asked him: "how do you get your men who were killed by attacking people or burning their property?" Of course, he could not give any answer.

I met the Commissioner of police, the Inspector-General and the Chief Minister and told them "I think this is a challenge not only to the government, to the police but to everyone of us; so, it is not enough to issue a statement condemning the violence. We must go to the crowds; we must go to the people who are doing it and try to persuade them." I was told by the Commissioner of Bombay and his colleague that it is a very risky thing and "you must go escorted by the police and you must take some arms." I said "if I am going armed with all these people, then why should I go at all?" Then he said: "at least, take some people in mufti". I said "No, if the people have reached the conclusion that they will not allow us to speak to them, then we must realise that the time has come for us to retire from public life." So, I and my colleague went to meet the people. I addressed

[Shri Nath Pai]

twelve meetings. Now I will tell you what I have said to them and you tell me whether what I said is a crime. I asked: "you claim Bombay to be your capital; then how can you remain silent when it is being looted, when arson is being committed, when people are being harassed?"

I condemned them for doing all this. I think it is not a crime; it is not helping the forces of anarchy; it is not supporting the forces of violence or inviting violence at a time when the people of Bombay are being submitted to the language of the bullet or the rifle of the police. I do not want to go into it. Again, in an innuendo was dropped in the other House. Before I analyse them, let me state the position. As soon as this news came, the Chiarman of the PSP unequivocally and categorically condemned it and called upon the leaders of the Shiv Sena to define their position with regard to the violence, loot and arson that was being carried on in Bombay. Was it wrong? Our Bombay unit of the party did it and I did it through out. I would like the House to know why I am saying all this, because a certain leader of the Bombay Provincial Congress Committee—I do not know where he was hiding when Bombay was burnt—had the gumption and audacity to condemn me for saying that even when we fight goondaism we should not forget that the people who are dying are our people, fellow India's and if South Indian is injured, he is also of my flesh and my blood and I will try to stop it. Here is my speech and still I am attacked.

I do not understand this slogan 'lungiwalla and phatkewala'. Maharashtrians are phatkewalas. When the firing, was going, on, I could not appreciate this kind of thing, going into some comfortable office and issuing a statement condemning that act. I said: we need to go deeper into this and see that this does not happen in Calcutta, Coimbatore, Monghyr or in our Bombay.

What was the crime in saying that in this perspective ? What was wrong ? What was the shame that we had committed ? I want to say that the Party at the national level, at the State level and at the city level did it. I am accused, I know.

Much can be said. I do not want to twit George. I do not believe in that when there is a No-confidence Motion. That is ethics. Sometimes listening to myfriends I felt whether they were using their fine eloquence—you are a really charming personality, George—to draw an indictment against the Government or against some of their own colleagues. I was sometimes wondering about it. It is not fair. I will stop there, George. But it is very desirable that we resist the temptation of pointing an accusing finger at one of us when something goes wrong.

There has been a total failure of leadership in Bombay—failure at the level of administration, at the level of Government, at the level of police and at the level of political leadership. All these leaders ought to have got together, gone and faced the crowds and said, "You destroy us ; you face us ; everybody is going to remain in Bombay ; Bombay belongs not only to this group or to that group ; anybody in India has a claim on any part of this country ; Bombay, Culcutta, Madras and Trivandrum all belong to us." We said this and here are these pages. I do not want to take the time of the House by reading them.

But this temptation is very difficult to resist when some thing goes so wrong. The temptation is of pointing an accusing finger here and say, "I did the correct thing." We would not also claim that we were successful. We proved inadequate and this is the malady that we must go into. Why does this nation of Buddha, Asoka and Gandhi in the very year of Gandhi's centenary take so easily to violence ? Other nations are committed to violence. Why does it happen here ? How did it happen in Telangana ? I do not know how many of us here in this House are acquainted and familiar with the gruesome story of an Andhra setting himself against a fellow Andhra. Men have been buried alive; clothing taken away ; people stripped naked. There is no question of language or of region. There is something wrong deeper. I can give one reason and let them not take umbrage and offence against this. The leadership in this country stands discredited, theirs fundamentally but to a certain

extent ours, because our writ does not seem to run in this country. Let us be introspective in the hour of this kind of a catastrophe and tragedy. Let us be humble and honest and try to see what we can do. I would not like to take the time of the House in only exonerating the PSP. I hope, after this heartfelt anguish which I have expressed this temptation of dropping innuendoes in this fashion in the face of such a colossal tragedy will be resisted.

I did say one sentence. I do not know why the great BPCC President is annoyed with me. What was that sentence ? Please look at that sentence. It is not in Shri Thackaray's *Marmik* in which I never wrote as some friends have written. Look at these pictures. I am sorry to do this. The other tragic occasion was when Shri M. L. Sondhi brought here about what happened at Indraprasth. Every gun is pointed at a bulding, at the people standing there. I will pass it on. As somebody pointed out, the elements which did mischief are too subtle; they are so supple that they disappear before even you. But then the unfortunate boys and girls, schoolboys, get killed. I saw that with my own eyes. It was one of the most agonising tests that I had. Just before I reached Jhabawadi a schoolboy standing in the balcony had been shot. dead. He was not standing perhaps with the intent of committing stone-throwing. They do not know who does it. They get angry. They come and start this thing and this goes on in this fashion as I have seen. I said in this context that this Government had made habit of delaying solutions to burning problems; it is only when our people are driven to a paroxysm of wrath and resentment and anger that this Government is driven to action. There are these inter-State river problems ; there are these border problems. It was the bounden duty of the Government of India to make every sincere and serious effort to provide early solutions based on some acceptable democratic principles. All issues can be solved ; otherwise, let us declare—you and I--that we are incompetent and unworthy to rule this nation, you sitting there and we sitting here. Why are these issues kept on hanging till people give this kind of a demonstration ?

Then, Mr. Deputy-Speaker, Sir, our only reaction is that of a pathetic condemnation and that too very often not in a heroic manner but merely by issuing FATWA, by issuing statements. May I say about that unfortunate little thing which is being bandied against us by everybody ? Well, there was an age of adjustments in this country. We were accused because we were not adjusting with C. P. M., with C. P. I. and with Jana Sangh. Ultimately, our Party did accept it in order to prevent split of anti-Congress votes. We did come to adjustment of seats, that is, you fight where you are strong and leave others where they are strong. That was the general atmosphere in the country. This was done in Bombay. That was the relationship with Shiv Sena. It is being bandied against us. I do not want to be apologetic We are not happy. But I must say that in expressing our condemnation, in expressing our anguish, in expressing our deep sorrow and resentment at what happened in Bombay—I conclude by this appeal—let us avoid these things and I say let there be a comprehensive inquiry not only into firings but also into what went wrong in Bombay during those sad and unfortunate four days. Let us try to find out what happened in Bombay, not only under the aegis of the Supreme Court Judge but I demand a comprehensive Commission of Inquiry. Why ? Not only to fix the responsibility for what happened in Bombay but, more important, to learn the lessons for the future.

Too often, the only reaction has been : Look, there is violence and, then, use more violence on the part of the Government. So, we get into the vicious circle. Let us not pat ourselves on the back that the issues are solved and everything is all right till another explosion comes and take us by surprise. We then come with a spate of crocodile tears over the dead and over the violence.

In conclusion, I submit all of us will have, therefore, to make a very serious andeavour about it. What is at stake is the very delicate Sabric of the unity of the country and the faith of our people that they get justice. To preserve this is not the duty of one

[Shri Nath Pai]

party but, perhaps, of all of us. May I conclude with this appeal, after the warning from Tanjore, after the warning from Andhra Desh and after the warning from Bombay, that we shall resist any temptation and try to learn the lessons for the future so that the fair name of our country is not marred by the kind of holocaust that we witnessed in Bombay.

MR. DEPUTY SPEAKER: Now we are supposed to conclude the debate today. There is some time left for the Swatantra Party, the D. M. K. Party and a few minutes for the Communist Party. The B. A. C. decided yesterday that we should conclude the debate today, and tomorrow the Prime Minister will reply and the mover of the Motion, Mr. Ramamurti, will get his chance. So, we may sit a little longer and try to conclude the debates.

SHRI SURENDRANATH DWIVEDY: No, no. The B. A. C. did not advise that we will sit longer. The debate can continue tomorrow.

MR. DEPUTY SPEAKER: Let us sit a little longer.

SOME HON. MEMBERS : No, no.

श्री चन्द्रजीत यादव (आजमगढ़) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि माननीय नाथपाई जी ने अभी अविश्वास प्रस्ताव पर अपने विचार बड़ी भावना के साथ और अपने दिल की गहराइयों के साथ व्यक्त किये हैं और ऐसे प्रश्न के ऊपर जब देश में हिंसा की प्रवृत्ति का उदय हो रहा हो, देश में घृणा और नफरत का दरिया बहता हो और ऐसे राष्ट्रीय-मूल्य, जिन के लिये हम लोग प्रयास कर रहे हैं, परीक्षा की कसौटी पर हों, तो स्वाभाविक है कि ऐसे प्रश्नों पर हमको बड़ी गम्भीरता के साथ विचार करने की जरूरत है।

मैं यह समझता हूं कि जब देश के अन्दर क्षेत्र के प्रश्नों पर, भाषा के सवाल को लेकर और दूसरे ऐसे प्रश्नों को लेकर कुछ लोग एक दूसरे के विरुद्ध घृणा की भावना को पैदा कर रहे हों, राष्ट्रीय सम्पत्ति का विनाश हो रहा हो और ऐसे मूल्यों का नाश हो रहा हो जिनको हम देश के अन्दर सुदृढ़ करना चाहते हैं तो हर नागरिक को दुख होना चाहिये। ऐसे समय में देश की सर्वोच्च संस्था, प्रजातंत्र के इस मन्दिर में बैठ कर हमको ठण्डे दिल और गम्भीरता के साथ इन प्रश्नों पर विचार करना चाहिये। मेरा विरोधी दलों के नेताओं से सिर्फ इतना ही कहना है कि ऐसे अवसर पर जब हम विचार करना चाहते थे कि वे कौन से कारण हैं कि जिनके कारण हमारे देश में क्षेत्रीय सवालों को लेकर, भाषा के प्रश्नों को लेकर हमारे नागरिक आपस में एक दूसरे के खिलाफ लड़ रहे हैं। वे ऐसे कौन से कारण हैं जो हमारे राज्य और केन्द्रीय सरकार के सम्बन्धों को लेकर आज हमारे राजनीतिक जीवन में एक तनाव की स्थिति पैदा कर रहे हैं। वे ऐसे कौन से प्रश्न हैं जो हमारे देश के सामने, हमारे देश के राजनीतिक ढांचे में एक अस्थिरता और रिक्तता की भावना पैदा कर रहे हैं। ऐसे गम्भीर प्रश्नों पर हम अविश्वास प्रस्ताव के जरिये विचार नहीं कर सकते। मैं इस बात से सहमत हो सकता था कि इन प्रश्नों पर अगर हम राजनीति से ऊपर उठ कर, दलगत राजनीति के रंग से ऊपर उठ कर विचार करते और उसका एक हल निकालने की कोशिश करते तो ज्यादा मुनासिब था। माननीय नाथपाई जी ने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि हर दल, हर दल के नेता आत्मनिरीक्षण करें कि इन प्रश्नों में क्या मौलिक कमजोरी है, उसको ढूंढने की कोशिश करें और उसका निदान करने की कोशिश करें। मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या उसका हल यही है कि अविश्वास प्रस्ताव के द्वारा सरकार के ऊपर निराधार आरोप लगा कर तथा तमाम ऐसे प्रश्नों को उठा कर जिनका सम्बन्ध इन प्रश्नों से नहीं है, उन तमाम बुनियादी सवालों को उठाकर, क्या आप इन प्रश्नों पर विचार कर सकते हैं ? हमारे विरोधी दलों की एक

सब से बड़ी कमजोरी यह है कि विरोधी दल हर ऐसे प्रश्न को, राष्ट्रीय सवालों को सामने लाते हैं, लेकिन जब इन प्रश्नों पर विचार करने का अवसर आता है तो राजनीति की दलदल से, अपनी राजनीतिक भावनाओं से वे स्वयं ऊपर नहीं उठ पाते और इसलिये ऐसे प्रश्नों की महत्ता समाप्त हो जाती है ।

मैं इस बात को कहना चाहता हूं कि आज हमारे लिये यह अत्यन्त दुख की बात है कि आज शिव सेना जैसी शक्ति, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसी शक्ति, लचित सेना जैसी शक्ति हमारे देश के अन्दर धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, क्षेत्र के नाम पर, संकीर्णता के नाम पर ऐसे प्रश्नों को पैदा कर रही है जो हमारी राष्ट्रीय एकता को कमजोर करती है ! आज मुझे ताज्जुब हुआ, जब जनसंघ के नेता माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने इन प्रश्नों पर विचार करते समय सब से पहले यह सवाल उठाया कि कांग्रेस का नेतृत्व इस बात का जवाब दे कि पंजाब के अन्दर लक्ष्मणसिंह गिल कहां हैं जिनका समर्थन कांग्रेस पार्टी ने किया था ! वह घोष साहब कहां हैं, जिनका अनुमोदन कांग्रेस पार्टी ने बंगाल में किया था । मंडल साहब कहां हैं, जिनका अनुमोदन कांग्रेस पार्टी ने बिहार में किया था । मैं भी उन से पूछना चाहता हूँ—श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी इस बात का जवाब दें—उत्तर प्रदेश में जब उनकी सरकार बनी थी, उनकी पार्टी के वे मन्त्री कहां हैं—उनके मन्त्री ताज्रेश्वर प्रसाद कहां हैं, उनके मन्त्री वरमेश्वर पांडे कहां हैं, उनके मन्त्री गंगा भक्त सिंह कहां हैं ? ये सारे के सारे उत्तर प्रदेश के पिछले चुनाव में धराशायी हुए हैं, पराजित हुए हैं । इस प्रकार के प्रश्नों से समस्या का हल नहीं निकल सकता ।

आज, श्रीमान् अटल बिहारी वाजपेयी जी ने प्रधान मन्त्री जी पर कुछ आक्षेप लगाये, वे बड़े गुस्से में थे और इतने क्रोध में थे कि उन्होंने अपने मस्तिष्क का संतुलन खो दिया था । उन्होंने आरोप लगाया कि सरकारी कर्मचारियों के प्रयास से बड़ी बड़ी मीटिंगें की गईं । मैं वाजपेयी जी का गुस्सा और उनका असंतुलित होना समझ सकता हूं । उन्होंने यह भी कहा कि प्रधान मन्त्री जी ने इन चुनावों के बीच अपने भाषणों में जन-मानस को ऊपर उठाने की कोशिश नहीं की, बुनियादी सवालों को देश के सामने रखने की कोशिश नहीं की, आज जो राष्ट्रीय दिक्कतें और परेशानियां हैं, उन पर जनता को शिक्षित करने की कोशिश नहीं की ।

प्रधान मन्त्री का सबसे बड़ा चुनाव भाषणों का मुद्दा यह था कि देश के अन्दर जो शक्तियां राष्ट्रीय एकता को भंग कर रही हैं, धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, भाषा के नाम पर या क्षेत्रीयता के नाम पर संकीर्णता की भावना पैदा कर रही हैं, जनता को उन्होंने उससे सजग किया । प्रधान मंत्री जी ने इस बात को महसूस किया था कि उत्तर प्रदेश, बिहार और उत्तर भारत के तमाम हिन्दी बोलने वाले इलाकों में जनसंघ संकीर्णता की भावना का प्रचार कर रहा है । जिस प्रकार से जनसंघ साम्प्रदायिकता की भावना को बढ़ावा दे रहा है, राष्ट्रीय शक्तियों को तोड़ने की नीति चला रहा है जिससे कि हमारे राष्ट्रीय मूल्य, राष्ट्रीय नीतियां और राष्ट्रीय एकता खतरे में है, इसीलिए प्रधान मन्त्री ने जनसंघ के ऊपर इस बात का प्रहार किया था कि जनसंघ साम्प्रदायिक शक्ति है और इससे जनता को सावधान हो जाना चाहिए ।

आज जो वाजपेयी जी का गुस्सा है, उस गुस्से को हम समझ सकते हैं । उन्होंने एक सपना देखा था, एक सुनहरा सपना, उत्तर प्रदेश में अपनी सरकार बनाने का, बिहार में अपनी पार्टी को बहुमत प्राप्त कराने का, लेकिन प्रधान मन्त्री के चुनाव प्रचार मे जनसंघ और वाजपेयी जी का वह सुनहरा

[श्री चन्द्रजीत यादव]

सपना, वह ख्वाब का महल ध्वस्त हो गया, उत्तर प्रदेश में भी और बिहार में भी, इसीलिए वे आज इतने गुस्से में हैं, अपना सन्तुलन खो बैठे हैं और इस प्रकार के अनर्गल आरोप प्रधान मंत्री जी पर लगा रहे हैं।

मैं उनकी इस बात को समझ सकता हूं जो उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी ने शिव सेना की मदद की। हमारे गृह मन्त्री ने इस बात को स्वीकार किया कि अगर कांग्रेस पार्टी ने किसी भी अवसर पर शिव सेना की सहायता ली तो उसने गलती की और भूल की। हम समझते हैं कि वह भूल थी। हम इस प्रकार अवसरवादी शक्तियों को प्रश्रय और बढ़ावा देने को गलत समझते हैं और हम समझते हैं कि यह राष्ट्रीय हितों के अनुकूल नहीं है।...(**व्यवधान**)...

जनसंघ पार्टी अपने को राष्ट्रीयता का एकमात्र दावेदार समझती है लेकिन क्या मैं उनसे पूछ सकता हूं कि आपने बड़े गर्व के साथ पंजाब में अकाली दल के साथ जो सरकार बना ली है, वह आपके लिये शान की बात है ? एक ऐसी पार्टी जोकि राष्ट्रीयता को भंग कर रही है और होमलैण्ड की मांग करती है, उससे हाथ मिलाना और कुर्सी के मोह में उसके साथ सरकार बनाना कहां तक राष्ट्रीय हित में है ? मैं नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि आप स्वयं आत्मनिरीक्षण करें। एक तरफ तो आप गृह मन्त्री से यह शिकायत करते हैं कि आप कम्युनिस्ट पार्टी को बैन नहीं करते, क्योंकि वह देशद्रोही पार्टी है लेकिन दूसरी तरफ आप कम्युनिस्ट पार्टी के साथ बैठकर मंत्रिमंडल बनाते हैं। ...(**व्यवधान**)...

मैं आपसे कहना चाहता हूं कि इस प्रकार के प्रश्नों को उठाकर गलत आरोप लगाना तो आसान बात है लेकिन वास्तविकता यह है कि आज देश के सामने बड़े गम्भीर प्रश्न उपस्थित हैं। श्री जार्ज फरनेन्डीज़ ने कहा कि कांग्रेस समाजवादी शक्तियों का विनाश करने पर तुली हुई है, कांग्रेस अवसरवादी है लेकिन मैं उनको बतलाना चाहता हूं कि समाजवाद का नाम लेने वाली इसी प्रजा सोशलिस्ट पार्टी ने बम्बई में शिव सेना के साथ चुनाव में समझौता किया और उसी से आज आपको कष्ट हो रहा है, जबकि आप यह देखते हैं कि राष्ट्रीय सम्पत्ति आग में जल रही है। हमारे गृह मन्त्री कहते हैं कि यह फासिस्ट पार्टी है लेकिन उसी के साथ-साथ मिलकर आप समाजवाद की स्थापनाक रना चाहते हैं। मैं श्री जार्ज फरनेन्डीज़ से पूछना चाहता हूं कि वे इस बात के दावेदार हैं कि इस देश के अन्दर समाजवाद की स्थापना करना चाहते हैं लेकिन क्या यह वास्तविकता नहीं है कि संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी ने कांग्रेस के विरुद्ध इस बात का नारा दिया कि सारी पार्टियों को कांग्रेस के विरोध में मिलना चाहिए। जनसंघ जैसी पार्टी, जो एक राष्ट्र विरोधी पार्टी है, जो एक साम्प्रदायिक पार्टी है, जो राष्ट्रीय एकता के नाम पर राष्ट्रीय एकता को तोड़ती है, जो राष्ट्रीय जीवन में घुन का काम कर रही है, जिसका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आधारशिला पर निर्माण हुआ है, उस पार्टी से हाथ मिलाने वाली संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी है। सबसे पहले इसी पार्टी ने नारा दिया कि कांग्रेस को मत आने दो, जनसंघ भले ही सत्तारूढ़ हो जाये या अकाली दल आ जाये। वह शक्तियां जोकि देश को टुकड़ों में बांटना चाहती हैं, देश की एकता को तोड़ना चाहती हैं, भले ही वे शक्तियां पावर में आ जाएं। इसीलिए केवल यह कहने से और आरोप लगाने से काम नहीं चलेगा...(**व्यवधान**)...

SHRI KANWAR LAL GUPTA (Delhi Sadar) : Is he not a fellow-traveller?

MR. DEPUTY-SPEAKER: He has his

own opinion we are only concerned with whether what he is saying is relevant or irrelevant.

SHRI CHANDRAJEET YADAV: I do not want to listen to the murderer of Gandhiji (*Interruptions*).

SHRI KANWAR LAL GUPTA: Is he not a communist infiltrator?

SHRI JAGANNATH RAO JOSHI (Bhopal) : He has called the hon. Member 'murderer of Gandhiji'. It has gone on record. He should withdraw it.

MR. DEPUTY-SPEAKER: These are allegations bandied about.

SHRI KANWAR LAL GUPTA: He must withdraw his words.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I cautioned you not to interrupt him at his hour. Then the hon. Member says that he was a fellow traveller.

SHRI KANWARAL GUPTA: Is it unparliamentary ? If it is unparliamentary, I shall withdraw those words. What is bad in it? I can even say that the Prime Minister would like to call herself a fellow traveller.

SHRI JAGANNATH RAO JOSHI: Wild allegations will not be tolerated.

MR. DEPUTY-SPEAKER : I better leave it to his good sense. Let us hear him.

श्री कंवर लाल गुप्त : कोर्ट ने फैसला दिया है कि कौन गांधी जी के मर्डरर हैं। उपाध्यक्ष महोदय, आप उनको ये शब्द वापस करने के लिये कहिये।

श्री चन्द्रजीत यादव : उपाध्यक्ष महोदय, इस प्रकार के व्यक्तिगत आरोप अगर यह न लगाते तो मैं इस प्रकार की बात नहीं कहता । मैं संसदीय मर्यादा और इसकी गरिमा को रखना चाहता हूं इसीलिये मैं इस शब्द को वापस ले रहा हूं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह कह रहा था कि इस प्रकार से केवल आरोप और प्रत्यारोप लगाने से इन समस्याओं का हल निकलने वाला नहीं है । कितने छोटे स्तर पर आकर हम बात करते हैं । अभी माननीय फरनेन्डीज ने कहा कि प्रधान मंत्री देश की समस्याओं के बारे में नहीं, मजाक उड़ाते हुए उन्होंने कहा, इनको फिक्र इस बात की है कि दुनिया के देशों के अन्दर जो झगड़े हो रहे हैं उसका पुल बनाने की कोशिश करती हैं और गंगा के ऊपर पुल बनाने की चिन्ता प्रधान मंत्री जी को नहीं है। मैं उनको कैसे बताऊँ कि हिन्दुस्तान जैसे विशाल देश का प्रधान मंत्री अगर इस बात की चिन्ता करता है कि वियतनाम के अन्दर जो बमबाजी हो रही है जिसमें हजारों बहादुर लोग मारे जा रहे हैं अपनी आजादी की रक्षा करने के लिए हर प्रकार की प्राणाहुति दे रहे हैं और जिससे दुनिया की शांति भंग होने का अंदेशा है और अगर प्रधान मंत्री को इस बात की चिन्ता होती है कि वियतनाम की बमबाजी बन्द हो, फ़ौजें वापस जायें, वहां की जनता को अपने भाग्य का निर्णय करने का खुद अधिकार हो, तो क्या गलत है। अगर प्रधान मंत्री को इस बात की चिन्ता होती है कि इजराइल और अरब देशों के अन्दर जो झगड़ा है जिस से शांति भंग हो रही है और हिन्दुस्तान का प्रधान मंत्री उसमें पहल लेकर कोई हल निकालने की कोशिश करता है और देश की जनता की तरफ से उसके नेता के रूप में चिन्ता प्रकट करता है तो सिवाय इसके कि हम गर्व का अनुभव करें और कहें कि हमारे देश का प्रधान मंत्री आज दुनिया के अन्दर जो प्रश्नों का हल निकालने के लिये चिन्तित है, उसका प्रयास किया जा रहा है, उसकी बात सुनी जा रही है, हम मजाक उड़ायें और कहें कि गंगा के पुल की चिन्ता नहीं

[श्री चन्द्रजीत यादव]

यह इस बात का परिचायक है कि हमारे विरोधी दल में बैठे हुए बहुत से मित्र संकुचित दृष्टिकोण से चीजों को देखना चाहते हैं, तंग दायरे से ऊपर उठना नहीं चाहते हैं और इसीलिये कठिनाई हमारे देश के अन्दर पैदा होती है।

सब से बड़ा दुर्भाग्य इस देश का यह है कि प्रजातन्त्र के इस ढांचे के अन्दर जहां जाकर के जनता को हमें अपने मौलिक सिद्धान्तों के ऊपर शिक्षा देनी चाहिये, उन्हें शिक्षित करना चाहिये और उन कमजोरियों से जो हमारे राष्ट्र को कमजोर कर रही हैं, उनको सैद्धान्तिक प्रश्नों के ऊपर लड़ना चाहिये, उसका मुकाबला करना चाहिये, हम यह नहीं करते हैं।

17.45 hrs.

[Shri Vasudevan Nayar *in the Chair*]

हम सभी इस बात के शिकार हो जाते हैं कि अपनी पार्टी के दलगत स्वार्थ में आकर गलत काम कर बैठते हैं। कहीं भाषा और कहीं किसी प्रदेश के स्वार्थ में ऐसे प्रश्न उठते हैं जो कि हमारे राष्ट्र की एकता को कमजोर करते हैं।

अभी श्री जार्ज फरनेन्डीज ने एक प्रश्न उठाया और आरोप लगाया कि भारत सरकार बिहार में कम खर्चा करती है, भारत सरकार उत्तर प्रदेश में कम खर्चा करती है और भारत सरकार कुछ प्रदेशों के साथ इंसाफ़ नहीं करती। भारत सरकार कुछ प्रदेशों के प्रति पक्षपातपूर्ण नीति अपनाती है। यही जेहनियत है जिसमें एक प्रदेश को दूसरी जाति के खिलाफ़ इस तरीके से भड़काया जाता है, एक जाति को दूसरी जाति के खिलाफ़ खड़ा किया जाता है, एक धर्म को दूसरे धर्म के खिलाफ़ खड़ा किया जाता है और एक भाषा और दूसरी भाषा वालों के बीच में भड़काव पैदा करके लड़ाई पैदा की जाती है। यह जेहनियत है जोकि हमारे विरोधी दल के बहुत से लोग भड़का कर पैदा करते हैं। उनकी अपनी गलत नीतियों के कारण विशाल दृष्टिकोण नहीं होता है और वह ऐसे प्रश्नों को उभाड़ कर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। जाहिर है कि ऐसे तमाम प्रश्नों का नतीजा हमेशा बुरा होता है। इसलिए मैं सभी राजनीतिक पार्टियों के नेताओं से अपील करना चाहूंगा कि जो प्रश्न हमारे देश के सामने हैं और जिन पर हम सबको चिन्ता हो रही है और जिनका कि हल निकालने की हम कोशिश करते हैं उन तमाम प्रश्नों के ऊपर हमें ठंडे दिल से विचार करना चाहिए।

श्री वाजपेयी ने एक अच्छी बात कही। उन्होंने कहा कि इन प्रश्नों का हल सड़कों पर नहीं होगा। मैं भी उनसे इस बात में सहमत हूं कि इन प्रश्नों का हल प्रजातांत्रिक ढंग से ढूँढने का प्रयत्न करना चाहिए। उन का हल प्रजातांत्रिक व्यवस्था के अन्दर हमें करना होगा, सड़कों के ऊपर उन प्रश्नों का हल नहीं हो सकता है।

राजस्थान के अन्दर जो अकाल पड़ा हुआ है, लोग मर रहे हैं उसकी तरफ चिन्ता नहीं हो रही है। अब राजस्थान जोकि संकटग्रस्त है और वैसे जो और प्रश्न हैं उन सभी प्रश्नों के ऊपर हम सब लोग एक साथ बैठ कर संजीदगी से विचार करें और उनका हल तलाश करें। खाली इस तरह से आरोप लगाने से और उपदेश देने से काम नहीं चलेगा।

क्या इस देश के अन्दर जब बंगाल में बाढ़ से जनता पीड़ित हो रही थी और जब उसको अनाज, कपड़ा और जीवन की रोजमर्रा की आवश्यक सामग्री भेजने के लिए कोशिश हो रही थी, उस जमाने में रेलवे कर्मचारियों को उभाड़ करके हड़ताल कराना और फलस्वरूप एक ऐसी व्यवस्था पैदा करना जिसके कारण बंगाल के पीड़ित लोगों की सहायता न की जा सकी, उचित

कार्य था ? लेकिन यह कार्य मेरे उधर के भाइयों ने किया था। मेरा कहना है कि केवल उपदेश से काम नहीं चलता है। जब ऐसे प्रश्न आयें तो उपदेशात्मक भाषाओं में ही फंस कर न रहा जाय बल्कि जरूरत है कि ऐसे सवालों पर सारे राजनीतिक दल संजीदगी से देशहित को सामने रखते हुए विचार करें और उनका हल तलाश करें। आज हमको संजीदा तरीके से इस बारे में गौर करना चाहिए और हमको अपने आन्दोलनों के बारे में, अपने राजनीतिक प्रचार के बारे में एक कोड आफ कंडक्ट बनाना चाहिए। मैं इस संसद के जरिए सारी राजनीतिक पार्टियों के नेताओं को इसके लिए आवाहन करना चाहता हूँ। अगर हमने सही दृष्टिकोण न अपनाया और दलगत स्वार्थ के चक्कर में पड़ कर एक पार्टी के द्वारा दूसरी पार्टी पर आरोप लगाते रहे और एक दूसरे के खिलाफ दलगत प्रचार किया और पार्टी विशेष के फेर में पड़े रहे और राष्ट्रहित को अपनी आँखों से ओझल किया तो हम देश को हानि पहुँचायेंगे। इस तरह के दृष्टिकोण से सम्पूर्ण देश को नुकसान पहुँचेगा। आज जरूरत इस बात की है कि तमाम राजनीतिक दल मिलकर बैठें और विचार करें और एक तरीके का कोड ऑफ़ कंडक्ट बनायें कि कैसे चुनावों के अन्दर जाना है और कैसे प्रचार करना है और कैसे इन समस्याओं पर काबू पाना है जोकि आज हमारे सामने बड़ी भारी चुनौती के रूप में सामने आयी हैं। हमें देखना है कि उनका हल कैसे निकल सकता है। इसके ऊपर हम एक कोड ऑफ़ कंडक्ट बनायें और उन तमाम प्रश्नों का हल निकालने की कोशिश करें।

आखिर में मैं यह कहना चाहता हूँ कि यह बात सही है कि हमारे देश के अन्दर जो परिस्थिति पैदा हुई है, जो प्रश्न खड़े हुए हैं वह सारे प्रश्न ऐसे हैं जिसमें कि दो राय नहीं हो सकतीं कि आज देश के अन्दर क्षेत्रीय असन्तुलन है। कुछ ऐसे प्रदेश हैं, जनता के कुछ ऐसे वर्ग हैं जिनकी कि इन पिछले 20 वर्षों के अन्दर आर्थिक प्रगति दूसरों के मुकाबले कम हुई है और इसको लेकर आज उनके अन्दर एक असन्तोष की भावना पैदा हो रही है। आज ऐसे लोग हैं जिनका कि आर्थिक, सामाजिक रीति से इस देश के अन्दर शोषण हो रहा है और आज वह यह महसूस करते हैं कि उनका राजनीतिक शोषण भी हो रहा है और उस कारण उनके अन्दर असन्तोष पैदा हो रहा है और वह गलत दिशा में भी जा सकते हैं यह हम सभी के लिए चिन्ता का विषय होना चाहिए और हम सभी को बैठकर सोचना पड़ेगा और हमें उनका हल निकालना है।

आज हम सभी इस बात को महसूस करते हैं कि क्षेत्रीय भाषाओं और क्षेत्रीय नारों को देने वाली पार्टियां बढ़ रही हैं, जिससे हमारे राष्ट्र और राष्ट्रीय स्वरूप को, प्रजातान्त्रिक स्वरूप को खतरा पैदा हो रहा है। आज जरूरत इस बात की है कि हम इस सवाल पर विचार करने के लिए बैठें और सोचें कि जो उनकी कमजोरियां हैं, जो शिकायतें हैं, जो परेशानियां हैं, उनको हम कैसे हल कर सकते हैं। आज यह प्रश्न पैदा हो गया है कि राज्यों के अन्दर विभिन्न विरोधी दलों की जो सरकारें बन रही हैं, उनके केन्द्रीय सरकार के साथ किस प्रकार के सम्बन्ध होने चाहिए। मैं आज कहना चाहता हूँ कि डी. एम. के. के. हमारे स्वर्गीय मुख्य मन्त्री श्री अन्नादोराई साहब ने इस बात के लिये प्रयास किया था और एक हल निकालने की कोशिश की थी प्रधान मंत्री ने इसकी सराहना भी की थी कि इस संकट के समय उन्होंने दलगत राजनीति से ऊपर उठकर इन प्रश्नों को हल करने की कोशिश की थी। आज जब विभिन्न पार्टियों की सरकारें बन रही हैं जब विभिन्न पार्टियों के लोग पावर

[श्री चन्द्रजीत यादव]

में आ रहे हैं और आज जिम्मेदारी लेने जा रहे हैं, तब सबके लिये थोड़ा बहुत सोचने की जरूरत है कि इन समस्याओं का बैठकर हल निकाला जाये।

इन शब्दों के साथ मैं तमाम विरोधी पार्टियों से प्रार्थना करूंगा जो इस बात से सहमत थीं कि यह अविश्वास प्रस्ताव लाने का अवसर नहीं है और चूंकि इससे इस की महत्ता कम होती है इसलिये उन्होंने इससे अपने को अलग रक्खा, कि वह समस्याओं को हल करने के लिए आगे आयें। साथ ही उन लोगों से मैं कहना चाहूंगा, जिन्होंने नो-कांफिडेन्स पर अपने विचार प्रकट किये हैं कि उनके विचार सदन के सामने आ गये हैं, इसलिये वह अपना अविश्वास प्रस्ताव वापिस लें और इन प्रश्नों के बारे में सारे सदन की, मुख्यत: कांग्रेस पार्टी की, जो कि शासन में है, प्रमुख जिम्मेदारी है कि सरकारी पार्टी और जो भी विरोधी दल के लोग बैठे हैं वह सब मिलकर इस प्रश्न पर विचार करें।

SHRIMATI GAYATRI DEVI (Jaipur) : Sir, before I speak on this no-Confidence Motion, I would like to answer an accusation of the previous speaker against the opposition parties that they are destroying Government property, railways, etc., and trying to topple the Congress Government. I would like to point out that in 1967, after the general elections, the verdict of the people of Rajasthan was absolutely against the Congress and the Majority of members elected to the Assembly belonged to the opposition parties. It was the Congress Government which resorted to firing, killed a school boy and others and this led to the imposition of President's rule and buying over of opposition members by Congress Ministers. That is why I would like hon. Members opposite to remember that people living in glass houses should not throw stones at others.

There has been enough said about violence in this very violent debate. It is obvious that in democratic countries, egged on by politicians, masses and mobs would turn violent and when mass hysteria takes place, people are not responsible for their actions. Therefore, I would urge on the Home Ministry to impress upon other ministries that whenever there are complaints from the people, they should be looked into immediately and in every dispute, the parties should be given a very unbiassed hearing.

17.53 hrs.

[MR. DEPUTY SPEAKER *in the chair.*]

I myself today would like to express my lack of confidence in this Government for other reasons. It has been in power for 22 years and yet it has failed to do anything for the people of India. Today there is poverty, starvation, unemployment and insecurity from the lack of confidence in Government officials, because from the lowest to the highest, they do not perform their duties impartially, without money passing hands. All this has instilled in the people of India a sense of futilty and frustration and an attitude of "what can one do with a Government like this ?" is rampant throughout the country. It has been often said but it cannot be said often enough to penetrate the rhinoceroa skins that sit before us, that the sole purpose of the Congress Governments in the Centre and in the States is to keep themselves in power and all other considerations are secondary. The Government machinery in every department is geared up to the sole purpose of keeping you people in your seats.

Educational institutions, sports institutions and, I am sorry to say, even the Election Commission are all involved in this process. Even though they have nothing to do with politics, to keep themselves going they have been involved in this process. Nobody is happy with this Government. The over-thirtys may tolerate it but the under.thirtys will not tolerate it but the under-thirtys will not tolerate it. Therefore, it was clever of the Prime Minister to have started a Youth Wing under the Education Ministry. But I can assure you that if their advice is sought and taken the Congress will have to change its face completely.

In whatever sphere it may be, people have lost confidence in this Government. The recent mid-term elections are a proof

of what I am saying. The Prime Minister had record meetings in all the four states playing on the sentiments of the people who had suffered, as she said, under the SVD Government and other governments. The Prime Minister told them repeatedly that the Congress only could give them a stable government. We are tired of reading this in the headlines. She has nothing else to say. The impressive crowds that attended the meetings made the Congress think that they were sitting on an easy wicket until the results came in and then they found that they were clean bowled. I myself was very surprised at the results in Bengal. I come from Bengal, as you know, and I have a lot of knowledge about Bengal. During the U.F. Government's rule I myself saw that the people suffered a lot. The prices of food rose up. There was no security. There was a tremendous amount of insecurity, gheraos this, that and the other. That is why I said that I was myself surprised at the results of Bengal. But Shri Nath Pai has explained that even that sort of Government they preferred to Congress. Is not that a lesson to you ? Can't you ever learn? It is impossible. How is it that you do not understand things? Anyhow, the people preferred them to you.

Then, you talk, for the first time about intimidation of voters. It is for the first time that you had to contest in places where there were no Congress Governments. All the time we have been in the Opposition and we have always been fighting elections in places where the Congress were running Governments. In those places all the government machinery is used for getting votes, extra ballot papers are shoved into ballot boxes; a blind man enters the booth and says that he would like to vote for the Star and the 'bel-ki-jori' is stamped. (*Interruption.*) Our election agents are not allowed inside the booths. This time the boot was on the other leg. What you thought the people they are now playingback on you. It was so amusing to read that you had such an experience.

One of the leaders of the Jan Sangh Party objected to extracts of the Prime Minister's election speeches being broadcast on the All India Radio. It is another example of government machinery being used by the ruling party.

What about the Ministers who were absent from their offices? Any government servant has to take leave when he absents himself on private work. Then how is it that the Ministers absented themselves without leave, taking full advantage of the amenities allowed to them in their positions for weeks on end while they canvassed for the Congress Party? I would like to know how much of government work and development work must have been held up due to their absence and how much money the public exchequer must have spent on their tours—another example of party before the country.

18.00 hrs.

Just now the Home Minister told us that the Chief Minister was a kind of father to his state. well, papa Sukhadia, was ordered to take charge of the Congress election campaign in Punjab. Therefore, the famine-stricken people of Rajasthan have not had a glimpse of him and he has not been able to control the graft and corruption in the relief camps of Rajasthan in Jodhpur, Jaisalmer and Barmer. When the Chief Minister of Rajasthan has been going round big industrialists in Calcutta we thought he was collecting money for the Chief Minister's Famine Relief Fund. Now when we see the condition of the relief camps we know where all that money has gone.

Now I would like to tell you something which is absolutely shocking. With his constant absence from the state, he has not been able to control effectively the maladministration of the relief camps that the government of Rajasthan running in Jodhpur, Barmer, and other famine relief camps. Corruption is rampant in these camps—fake muster rolls are prepared and labour is employed on partisan basis. Thousands of cattle have died because the Government of Rajasthan did not act in time. But how could they, when they were busy buying, bribing cajoling and blackmailing opposition members, specially from the Swatantra party? Why from the Swatantra? Because

[Shrimati Gayatri Devi]
they are very much frightened of that party in Rajasthan. They are trying to demoralise the weeker member of our party so that they will succumb to bribery or corruption of the ministers. Of course, we will answer that challenge in 1972. Now what I would like to tell you is this. In the normal course of events blackmailing, bribing etc. are looked on as crimes, but the Congress Party condones it so that it will get a majority to form the Government. What kind of government and people are you? Just to get a majority in the Assembly you condone even blackmailing, bribery and corruption!

Then I come to another extraordinary situation in this country. You talk so much of national integration. You say that you are so proud of the fact that foodgrain production has reached a record figure and that the restriction on the movement of foodgrains has been relaxed. But if there is a surplus of grains in this country then why are the food zones not abolished, why should the people of Gujarat starve and the workers on the relief works in Rajasthan exist on two kilos of wheat and six kilows of PL 480 milo per month which even the American cattle would not touch but here our people are having to eat it. Why should it happen if there is surplus in this year, when this is one country and one nation, when we talk of national integration, why it is that on the subject of food we should be divided?

After all, food is the substance of existance and the Government makes zones and discriminations between region and region. Why not abolish the food zones? It appears that vested interests who profiteer will not allow the scrapping of food zones. This so-called socialistic benevolent government of ours, with all its boast of surplus food, has not been able to fulfil the basic responsibility of a government of feeding, clothing or sheltering the citizens of India.

You have talked so long about removing the slum in the cities. What have you done? Built mansions for yourselves and are living in them. Don't you? In all your town planning what do you do? Near the government offices and buildings come the Ministers, and officers houses and they have their own private cars to drive in. The workers and labourers live right on the edge of the city without any public conveyance to bring them to work.

SHRI PILOO MODI (Godhra): Send them to Karol Bagh.

SHRIMATI GAYATRI DEVI: That is what I want to impeach this government for.

But I am still on the subject of Rajasthan. What about the Rajasthan Canal Project? It is the largest irrigation complex in the world and the longest forgotten. It goes forward at the rate of one inch a day perhaps. If completed, it would solve many defence, economic and agricultural problems in the Indian sub-continent. When Shri Krishnamachari was Finance Minister, he had promised to take over the commitments of the Rajasthan Canal but with the change of the Finance Minister, the Centre dropped the project. Surely, a commitment by one Finance Minister should be honoured by his successor, as in the case of gold control. This unprecedented famine in Rajasthan is an excuse and an opportunity for the Centre to take over the building of the Rajasthan Canal. As I said, it will change the whole face of India.

If the Government of India could be so generous to give money to Uttar Pradesh and Bihar non-Congress governments why should not they give it to the Congress government of Rajasthan?

SHRI RANGA (Shikakakulam): They have no faith in that government.

SHRIMATI GAYATARI DEVI: Exactly. That was what I was just going to point out. In Bihar and UP the Opposition governments utilised that money beautifully for putting in wells and energising those wells, but in Rajasthan 59 tubewells in the Jaisalmer area have been put in and only three of them are functioning.

Before I conclude I must say that

this government of ours is for ever constituting expensive and powerful committees to advise them on different matters of national importance but they never take their recommendations into consideration because it does not suit them or their fellow travellers. One is the report of the Administrative Reforms Commission. We would like to know whether this was taken into consideration and whether this has affected the formation of the Cabinet or not. Also, the report of the IAC which cost such a lot has been shelved because the recommendations did not suit some fellow travellers. That was scrapped too and one of our biggest foreign exchange earners, tourism, has been affected.

I would also like to have one second to add something. I do not understand this government of ours. One reason why we have no confidence in this government is that we do not quite clearly understand its policies. For instance, in foreign affairs we are always supposed to be non-aligned; we do not take sides and yet we express sympathy with the people of Vietnam. We too feel very sorry for the people of Vietnam but what about the Czechoslovaks? What about their struggle to throw off the imperialistic yoke that is strangling them ? For them we do not have a word of sympathy.

In conclusion I would like to say that this government, which has done nothing for us at home or abroad, should go before this violence in the country throws them out. Therefore, please go before it is too late.

SHRI EBRAHIM SULAIMAN SAIT (Kozhikode) : Mr. Deputy-Speaker, Sir, I am highly grateful to you for giving me this opportunity of participating in this debate on the No-Confidence Motion that is before the House.

Sir, while we are discussing the No-Confidence Motion in the House, a large part of the country has expressed lack of confidence in the Congress raj. Recently, four major States in the country had mini-general elections and out of 200 million people that went to polls, 80 million people rejected the Congress Government. This has been done because of wrong policies and because of the failure of the Congress Government to give economic prosperity and also security and protection to the people of this country, particularly, the minorities, after 22 years of Congress rule.

The Congress Ministers and the Congress leaders talk very much about secular and democratic ideals. They claim to be the propagators of secularism and democracy. They shout from house tops that they are the custodians of the secular and democratic Constitution of this country. But I feel that there will be no parallel in the history of any country as to the manner in which these so-called custodians of secularism and democracy are shattering the very character of secular and democratic Constitution day and night in his country. They have failed to provide the bare necessities of life to the masses, to the poor people, to the working class within their means, clothing, shelter and food, to the people of this country.

This Government has been encouraging regional and communal movements like Shiv Sena, R. S. S. and so many other such movements. Today, the minorities feel, and rightly so, that they do not have protection of their life, property and honour in this country. Not only this. The Congress Government are taking some steps which make minorities feel that there is interference not only in their culture but even in their religious beliefs. Much is being talked about the uniform civil code. This is very much an interference in the Muslim religion. A Public Trust Bill is under consideration which will deprive the minorities the right to manage their own institutions like Wakfs. This is against articles 36 and 37 of the Constitution. Further, this Government has failed to promote balanced development of the country in different parts of the country, and the planning for last 17 years has miserably failed.

Sir, coming to the aggression of regional movements, I would like to point out that much has been said about the recent activities of Shiv Sena in Bombay where we witnessed the black week of violence, killing, looting and arson, early this month It has done incalculable havoc to millions of people and pushed back the social and

[Shri Ebrahim Suleman Sait]

economic life of the country. During these riots of Bombay against non-Maharashtrians, and particularly, against people from Kerala and Tamilnad the property worth Rs. 25 crores has been destroyed, 57 people have been killed, 500 people have been injured and more than 4000 people have been arrested.

This is the havoc that this movement has done. Today, Mr. Chavan says that the Congress has not been behind it. Today, we feel ashamed of it. This is really something that is being done after the action has been committed. Mr. Chavan says that while Mr. Naik took part in their functions, they did not think that the Shiv Sena will develop into such a militant and aggressive organisation. There is an Urdu couplet of Ghalib which says:

کی میرے قتل کے بعد اس نے جفا سے توبہ
ہائے اس زود پشیماں کا پشیماں ہونا

की मेरे कत्ल के बाद उसने जफा से तौबा,
हाय उस जूद पशेमां का पशेमां होना ॥

Sir, I have to point out that there has been an open incitement of violence by Shri Bal Thackeray, the leader of the movement. Articles have been written in their organ 'Marmik' inciting the people to violence. Speechs have been made saying that the border dispute is going to be settled in the streets of Bombay.

They say that no such development would take place. But I must remind them that this is not the first time that such horrible events have taken place in Bombay when non-Maharashtrians are subjected to all sorts of atrocities. Even in August 1967 such atrocities were committed against non-Maharashtrians and particularly against the people of Kerala and Madras in Bombay. If I remember right, Mr. Kunte pointed out in this House in March 1968 about these developments in Maharashtra. Then the Home Minister said that he guaranteed that nothing would happen to the life and property of non-Maharashtrians and that complete protection would be given to them. But what has happened today? The Government has completely failed in its duty of giving protection to non-Maharashtrians who are equally Indians like the Maharashtrians in Maharashtra State. As has been pointed out, even the police has failed in its duty. The administration failed in its duty, and all these things have been done to see that these poor people are made to lose even their bare livelihood. The hotel-keepers, particularly from South India and among them particularly Muslims, have been attacked; the howkers have been attacked; the petty shop-keepers have been attacked; and all these people have been made to lose their bare livelihood. Government should really understand the danger and not just come and give excuses at this juncture when everything has been done, when havoc has been committed.

When minorities form some organisations according to the Constitution in order to protect their rights and to defend themselves against atrocities, they call them as communal organisations and talk of banning such organisations. But when organisations like Shiv Sena and RSS exist, which actually work against the interest of the country nobody talks of banning them and neither the Government takes any action or thinks in that line. Why such a discrimination is made, I fail to understand.

The Congress Government does not seem to have any value for human life as far as we Indians are concerned. The Congress has been rejected by the people after their 20 years of rule because they have failed. They say that they alone can form stable governments. This myth has been exploded today. Where is the stability if they cannot give security, if they cannot give peace, if they cannot give happiness and economic prosperity, to the people? After 15 years of planning, we see only regional imbalances. We see today that the Congress has been rejected by the people of West Bengal, Punjab and other States.

The Congress President, Shri Nijalingappa, had the audacity to go to Kerala last month and say that President's rule in Kerala is round the corner. The Kerala Government is a stable Government; the parties are working very well and they

want to improve the conditions of the people. Still the Congress President says that because of insecurity, because of absence of law and order, President's rule should be imposed in Kerala. What about the law and order situation in the other States which are under Congress rule like Andhra and Maharashtra? Is there law and order in those places today? Why can't the President take over the reins of administration in those States? Therefore, they should not talk such things.

While I refer to the regional aggression, I would also like to say a few words about communal aggression also. Even today communal aggression by the militant organisations is going on in this country. Recently we had communal riots in Cuttack and also at Indore. After all these things, the Prime Minister comes out during elections and says that the Jan Sangh is responsible for all these communal riots in the country. I am very happy that she has come to realise this after 20 years of rule.

But I ask: have the Government done anything in all these 22 years to check the progress and development of the Jan Sangh? They have done nothing. Therefore, I say they have failed in their duty of giving protection to minorities.

One more point, Sir, and I have finished. This is about the National Integration Council. They said that the Jan Sangh is responsible for all these communal riots, for all this devastation, for all these Muslim killings. But what did they do? They invite their leader, Shri Vajpayee, and give an assurance that nothing will be said against them in the National Integration Council and completely let down the Muslim leadership, whether it is the Majlise Mushawarat or the Jamait-i-Islami or the Muslim League. Thus they have passed an ex-parte decree in the National Integration Council.

Sir, You know what things are happening here in Delhi? In the Niyamuddin area, mosques have been demolished by the Delhi Administration. Graveyards have been desecrated and bull-dozers have been run over them. All this is done in the name of secularism and democracy. This is what Delhi Administration is doing in the capital city itself right under the nose of the Congress Central Government. Nobody is there to protest or to put a stop to these criminal acts. When Mufti Ziaul Huque Sahib, President of the Jamaitul-Ulema protested against these desecrations and demanded justice he was arrested and put behind bars.

This is the sort of democracy prevailing under Congress rule. This is the secularism that they want to practice. If this is their democracy, if this is their secularism, we do not want to be in that. We want real democracy and real secularism. From our experience, we have found that this Congress Government is not able to usher in such a democracy and and such a secularism as will bring about happiness and prosperity to the people. As such, they should go and make way for people who will bring about real democracy and happiness to the people.

SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI (Bhubaneswar) : Shri Atal Bihari Vajpayee was very emotional in his speech today. Usually, he is not emotional. But some body told me that when a party gets defeated and completely routed at the hustings, its spokesmen become a more emotional in their speeches. This has been confirmed in the case of Shri Vajpayee. Generally when he speaks, he does so with his head and heart, but today I found he has spoken with his heart because the Jan Sangh has lost its head.

It is perhaps the Jan Sangh which has been the most badly-mauled in all the States in the mid-term elections. A little while ago, the spokesman of Swatantra was telling us that the Congress is afraid of Swatantra. I do not know whether it is so. But one thing is certain that the people are afraid of Swatantra. If we analyse the poll results, we find that the 200 million voters who went to the polls, were so much afraid of Swatantra that only 9 have been returned on the Swatantra ticket.

AN HON. MEMBER : Eight.

SHRI BADRUDDUJA : None in Bengal.

SHRI S.M. BANERJEE : None in Bengal and one in U.P.

SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI : The second round of elections just over has many important lessons to impart to the democratic forces in the country. It requires cool and calm consideration and introspection. There is nothing to grow hysterical over the results on the part of any one party in any part of the country. If one has any humility and any sense of responsibitity, then one should frankly admit that the poll results have indicated almost all the all-India political parties. The poll results have humbled the arrogant assertions of some of the feudal and reactionary communal parties that they provide the alternative to the Congress. The enlightened electorate, 200 million strong, have exercised their votes judiciously and have brought down and cut the reactionary and feudal forces to their rightful sizes.

After the mid-term poll, various political parties have analysed the results.

Here is an interesting analysis. People in U.P. have rejected the extremism of both the right and the left. On the one hand the Jan Sangh and on the other the Communist, SSP and PSP all have suffered miserably. Therefore, the SSP leader Shri Rajnarain has openly accused the BKD leader of playing on caste sentiments and exploiting the power of money to wreck the progressive socialist forces. Today Shri Vajpayee was asking the Congress where it got its funds. I think he should first publish his accounts and say how much money he got and from which sources. Some months ago the SSP was hailing Shri Charan Singh as a great new savant. What is the analysis of the PSP about the U.P. results ? Here is a statement of Mr. Bhasin : "The failure of the SVD Government to deliver the goods and the non-interference by the Centre in U.P. affairs were also partly responsible for the Congress performance in the mid-term elections." Let us take the case of Punjab. The communists had been eliminated from the Sikh peasant bases as a result of Akali-Jan Sangh alliances. In Bihar everybody had been chastised. Are not these things to be studied and analysed seriously ? After the blind anti-Congressism of 1967 a new sense of realism has dawned upon the leadership of the major political parties who were thinking of providing alternatives to Congress unitedly or separately. Therefore, for the first time in the history of Lok Sabha, after 1967, the Jan Sangh, PSP, Swatantra and DMK had decided in their wisdom not to extend support to this motion. But may I humbly ask this question ? Is the CPM strengthening the unity of the Progressive, socialist and democratic forces of the country ? Are its efforts and utterances directed towards that end ? Do they realise that by owning up for themselves what is a united victory of thirteen parties, how much incalculable harm they have done during this short period of eleven days ?

The Prime Minister declared in 1967 and she has done so again now : "The Union Government had always heeded to the verdict of the people and would continue to co-operate with non-Congress State Governments. We are already having non-Congress Governments in some States and we are co-operating with them." But what is the response from the other side for this extended hand of co-operation ? In a big rally after the mid-term victory the CPM leader Mr. Das Gupta says in Calcutta : "We have adopted the path of Parliamentary democracy in order to strengthen the democratic struggle, but we firmly believe that we would not be able to reach our goal through parliamentary democracy. Our goal is socialism and for that is required the bloody revolution. We want to reach the state of clash between the Centre and the State through the path of parliamentary democracy to such a level that would spark off the bloody revolution." Another speaker Mr. K. G. Bose said : "If any of the constituent parties took an attempt to disrupt the unity of the United Front the people of West Bengal would whip it up to set in order."

SHRI P. RAMAMURTI: (Madhurai) May I just inform the hon. Member that no rally has been held after the election? The first rally is going to be held only on the 23rd.

SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI: I am very happy to be told so. But I shall send the cutting to him. He will express his regret to them I am very glad that Shri Ramamurti has told me so now. I shall send the cutting to him. Now, a further elucidation of this point has been published in *People's Democracy*, which is an article by Shri Namboodripad. He has said:

> "The dictum of Mao Tse-tung that power flows from the barrel of a gun was in its essentials correct and should be accepted by every Marxist Leninist.

AN HON. MEMBER : It is correct.

SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI: The quotation is correct. That is what I say. He has said that "in assessing the character of the ruling party *vis a vis* the other parties, the CPI, "that is, the Rightists, "had first said that the Congress should be included in the forces of democracy and progress and that they would have no truck with communal parties and then swing into the other extreme of coalition at all costs." He has further stated that it was open to the Rightist to admit their mistake and 'come closer' to us." I do not know whether the Rightists have admitted their so-called mistakes by now before the CPM.

I am quite sure that when the heat of the elections dies out the brave and highly political-conscious people of Bengal will think whether they have voted for shedding the blood of their brothers or for more and cheap food, more housing a cleaner Calcutta and for building a happy and prosperous Bengal about which the great poet Tagore said, 'I refuse to die in this beautiful land'.

Now, Sir, what is the difference between the theory of violent bloody class revolution of the CPI Marxists and the racial violence pursued by Shiv Sena. As Mr. Nath Pai has said, let us decide that all political parties today should eschew this sort of politics of ours and that we shall try to do our best to see that whatever efforts we are making, all our efforts should be directed towards safeguarding the democratic struggle and for achieving the minimum economic needs of our people. While stability is an essential need today, stability does not mean that we shall have to be static; stability means that we shall have to build millions of near houses for the people, and we shall have millions of schools for our children; it means that we shall have to give two square meals a day for the hungry masses in this country. Therefore, this is the great challenge before us.

Sir, therefore, I feel that the time has come when we shall have to think seriously, (*Interruption*) why do they get so much worried? I do not understand it. Therefore, the time has come when we must be serious of thinking of devising ways and means as to how the Centre and the States can function in a manner in which the people's verdict is honoured, and at the same time, the democratic set-up that we have built up is nurtured with will and hope.

SHRI S. KANDAPPAN (Mettur): Sir, it should be said to the credit of the Congressmen who spoke before me that they have made the DMK feel that we have to support the no-confidence motion. There is no substance whatsoever in the arguments that they have advanced, and it is not even keeping with the seriousness of the problem when they have taken up the challenge that is thrown by the opposition. Even the reply of the Home Minister is very much disappointing to me. For example, on the question of Shiv Sena, I actually expected from him some kind of a concrete proposal that he has got in mind, as to how he is going to check the pernicious actvities of this organisation in Bombay. There is no use comparting it with other organisations elsewhere and putting forward the excuse of total deterioration in the general law and order situation throughout the country. Here is an organisation which is a challenge to the citizens of this country about their citizenship itself. After 22 years of freedom, I do not know whether I should call myself an Indian or a Tamilian first. I know

[Shri S. Kandappan]

the invariable answer of this House would be, we are Indians first. If so, I am unable to appreciate the theory of the sons of the soil which is bandied about and supported by some responsible Congressmen also. Once you say that the State belongs to the sons of that State, naturally ugly manifestations of Shiv Sena will appear throughout the country. If the citizenship is of the Indian nation and not that of the State, Government cannot show any quarter to such an organisation.

The Home Minister has got the cheek to say that he cannot do anything legally to ban the organisation. If he cannot do so with the present laws, let him bring forward suitable legislation and with the support of this House, let him ban it. I take pride in the fact that even when the DMK was demanding secession it was on the issue of language, keeping up our cultural heritage intact without being polluted, on the issue of our State not being neglected by the Centre and getting the economic benefits due to us. But even then not even an ordinary member of the DMK took it into his head to attack the shop of any non-Tamilian. There was a time when there was picketing before the shops run by outsiders, but that was long before DMK came into being ; it was at the time of DK. But even at that time, it did not degenerate into hooliganism. My leader opposed it and after we formed into a separate group in September, 1949, even though we had that slogan of secession, it was for the whole people of Tamil Nadu. It never occurred to us to create any sort of difficulty for the settlers from outside—from the north, east or west. Now such an attempt is being made in a State, particularly at the spot which is considered to be the economic nerve centre of India.

This has not suddenly erupted. Two years back this attack was started. What was the Government doing ? As my colleague pointed out yesterday, the Home Minister gave a guarantee to me on the floor of this House. A guarantee is some what stronger then an assurance. If I take an article from a shop with a guarantee, if it is defective, he has to take it back. I do not know what I can expect from the Home Minister. After that guarantee, I thought some positive thinking on the part of the Home Minister would be there. But unfortunately there was no indication in his reply as what he is going to do in future. After 22 years of freedom, if we still feel complacent about the activities of such an organisation, there is no meaning in allowing this Government to remain in power. But unfortunately the opposition being what it is now, you are able to continue in power. As Shri Nath Pai and others have pointed out, I hope a time will come when the opposition parties will rise up to the challenge and see that you are replaced.

I would like to say a word about the feeling that is there in Tamilnadu. Our Chief Minister Shri Karunanidhi wrote a letter sometime back to the Prime Minister, the Home Minister and to the Chief Minister of Maharashtra. I do not know whether he got a reply. But that is indicative of the mood that prevails in Tamilnadu. Thanks to the soberness that was shown by our leadership, there is no counter revolution or a counter-movement so far started in Tamilnadu. I am afraid, if things are allowed to continue like this in spite of our best efforts it would be difficult for us to keep things under control. There are many people in Bombay who write to their relatives in Tamilnadu telling them as to what they are going through. If a counter-movement sparks off in Tamilnadu I am afraid it will spread. Nobody would like that. We are doing our best not to give any room for such a kind of feeling. Unless the Centre co-operates, unless the Government does something about it, how can this be controlled.

Some hon. Member of the Congress Party mentioned that after the DMK Party took over the Government in Tamilnadu there was a burning incident when 42 persons belonging to Harijan community were burnt in a hut. That is a shameful, gruesome incident. I am happy that the Member referred to it. That is very much relevant to the no-confidnce motion that we are pesently debating. I cannot enter into the details

because that matter is *Sub judice* and it is before the court. Still I can say one thing that all the people arrested in connection with that belong to the Congress Party and many of them are holding very important portfolios.

SHRI R.S. ARUMUGAM (Tenkasi) : It is completely false.

SHRI S. KANDAPPAN : It is true that most of them are Congress landlords.

SHRI R. S. ARUMUGAM : Under the DMK Government many things are happening and the police do not take any action.

MR. DEPUTY-SPEAKER : As the matter is *sub judice* I would request hon. Members to be very cautious about it.

SHRI S. KANDAPPAN : They are holding important portfolios. Soon after the arrests of some responsible senior Congressmen interviewed them in the Jail. I do not know if the hon. Member would let me mention the names. Shri Karuthiruman interviewed them in the Jail. In spite of what Shri Arumugam is saying I am driving at a different point. It is for the court to decide about the particular incident. Here there is a relevance because the mood of the Congress throughout the country where they are not in power is being more emphasised and it comes to more light if you think in terms of what the Congressmen are feeling in a State where they cannot even remotely hope of coming to power before 1972. I am really sorry to say that when it is pointed out to the Congress that they have erred on certain things, there were defections and wrong-doings on their part they simply retort by asking "are you doing well ; why do you blame us ?" That does not exonerate the Congress.

If some body points a finger at me and says that I am dishonest, if I retort that he is also dishonest that does not exonerate me. So, that should not be the way of behaviour of a party with which Gandhiji was associated, especially in the Gandhi Centenary year. After the 1967 elections the whole complexion of the Indian politics has shown a very definite shift ; there is no doubt about it. And the 1969 election has confirmed it again. That being the position, is it not the duty of a responsible party like the Congress—I take it that it is a responsible part—to see that while it is indulging in its scramble for power, it does not do away with democracy altogether ?

I will give a concrete example. In Parliament there are members belonging to various groups coming from different States. There are occasions when members coming from the same State, even though they belong to Congress and other parties, demand that there should be more allocation to that State. Even when a United Front Government is ruling in West Bengal, Congress Members of Parliament from West Bengal would not say that allocations should not be made to that State. Everybody will put the economic interest of his State first and then the party interest and that is but natural. But in my State I find that Congressmen have stooped to such a level that they think that if a sound economy is maintained and the DMK government is helped with finance that is legally or legitimately due to them in the form of loans and grants from the Centre, then the DMK administration will get such a good name that it will be a very difficult thing for the Congress to stage a comeback. So, responsible Congressmen in my State have openly requested the Centre not to give our State any money.

Here I am going to quote *The Indian Express*, dated 6th November, 1968. At the time of the Goa Congress, when the prohibition question was being discussed, a member of our State Legislature, Shri Vinayakam—I think he is the Deputy Leader there—spoke on that resolution. There was a demand that we should be given a little compensation because we have incurred some loss of revenue on enforcing prohibition. There was wide support from various groups to this demand but Shri Desai was reluctant. A Congressman from my State spoke on that occasion.

SHRI P. RAMAMURTI : He is a

[Shri P. Ramamurti]

licensee of a liquor shop.

SHRI S. KANDAPPAN : *The Indian Express* says :

> "Stating that the DMK Chief Minister has undone all the good things achieved by Mr. Kamraj and Mr. Bhaktavatsalam in regard to prohibition, he turned to Mr. Desai to plead not to give any money to DMK Government to compensate for the loss incurred by it through prohibition."

So, he was prepared to have even a crushing economy of the State to topple the government. What they want is only power. Such a shameless act has never happened in any other State. The report further says :

> "The Madras Government have already raised sales tax and taken other steps to recover the loss. Any decision to compensate that government for the losses, Mr Vinayakam said, would be a stab in our back."

This shows the intensity of their power-hunger, after being in power for twenty years. This is the only danger to democracy and this is the only trend that the party in power should try to arrest. If they are not able to set an example, if they are not able to show courage and restrain their over-enthusiastic members I am afraid we cannot save democracy and our country is doomed.

In this light, I have a suspicion in my mind. Of course, it has to go through court. There are six reserved parliamentary constituencies in Tamil Nadu of which five are controlled by us ; only one has gone to them.

So, I can understand why Congressmen stoop to so low a level. I can very well appreciate that. With our magnanimity and with our approach we never thought that Congress would stoop to such a level to come back to power. But now we have understood that with our experience in Tanjore and we know what steps to take. As far as that is concerned. I should like to emphasize only that.

As far as the No-confidence Motion is concerned, after the Home Minister's reply we feel very much convinced and we are of the firm opinion that this Government has no business to rule this country any more.

SHRIMATI ILA PALCHOUDHURI (Krishnagar) : Mr. Deputy-Speaker, Sir, I have been listening carefully to this debate on the No-confidence Motion and have heard a lot of very fiery speeches and the reasons why there should be no confidence in the Government because the Congress is very bad and so on and so forth. I come from a State where the Congress has not come into power.

SHRI VASUDEVAN NAIR : Routed.

SHRIMATI ILA PALCHOUDHURI : It has not been routed. It has got 55 seats and the percentage of votes for it has been more than what it was last time. But that does not matter. Even if we have lost the seats, I would say that democracy has worked. Sometimes some party comes in and some parties do not. There is no shame in that.

But what I would like to bring to the notice of the House is this. It is often alleged that the Congress toppled the previous ministry. The Congress never meant to topple any United Front ministry. What was the position ? When Dr. P. C. Ghosh went out, 17 members of the Legislature went out with him. They went and told the Governor that they would not support the Ajoy Mukherjee Ministry. What does the Governor do ? He asks them to go to the Assembly and show their majority. They do not do that ; they stick to accusing the Congress of power-mongering. They try to stick on without majority in the Legislative Assembly and would not face the Assembly. So, Congress being the largest single party was then asked to form the government with Dr. P. C. Ghosh. Then the Communists launched agitation after agitation. What does the Governor do ? On page 5 of the report submitted to the Rashtrapati

you will find that the Governor says so himself—these are not my words—Sir,

> "Shri Ajoy Kumar Mukherjee and Shri Jyoty Basu urged that I should recommend to you President's rule because if the president's rule could be introduced even for a day they would withdraw the agitation."

What would you say to that ? Would you say that the Congress toppled the Government? No, Sir.

SHRI UMANATH: It was already quoted yesterday by some Member.

SHRIMATI ILA PALCHOUDHURI: May be, it was quoted but I quote it again.

But one illuminating point about this is that while the Assembly was on for the short time thereafter, it was the Communist party that kept on saying constantly that is was an illegal Assembly.

SHRI S. M. BANERJEE: It was the illegitimate child of democracy.

SHRIMATI ILA PALCHOUDHURI: But from that illegitimate child of democracy they went on signing and taking their salaries and allowances.

SHRI S. M. BANERJEE: That was the only legitimate part of it.

SHRIMATI ILA PALCHOUDHURI: Legitimate parties will certainly have their allowances but you considered that as illegitimate and you should certainly not have taken the money from that Assembly. Anyway enough of that.

The hon. lady Member opposite who preceded me has made some very sweeping allegations. The Swatantra Party and the Jana Sangh have no face to show in West Bengal nor have the parties of Shri Humayun Kabir and his brother, Shri Jehangir Kabir. Both Humayun and Jehangir have gone back to the pages of history.

SHRI S. M. BANERJEE : Moghul Dynasty.

SHRI ILA PALCHOUDHURI: The Moghul Dynasty has gone back where it belongs to, to the pages of history. They have no other place. But the hon. lady Member said that the Congress in these 22 years.....(*Interruption*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: The hon. Member should conclude now.

SHRIMATI ILA PALCHOUDHURI : Give me a little more time, sir.

MR. DEPUTY-SPEAKER : You cannot get more than two minutes. The hon. Member may try to conclude now. Be brief.

SHRIMATI ILA PALCHOUDHURI I just want to make one or two points.

The hon. lady Member opposite said that the people have got no confidence in the Congress and that it has not done anything in the last 22 years. May I just put to the House one criterion which without doubt shows confidence? Are not the public debts a mark of confidence? In 1951, the amount of internal debts given by the people to the Congress Government was to the tune of Rs.2022.30 crores and the amount of external debts that was available to India was Rs. 32.03 crores and, in 1968, the internal debt was to the extent of Rs. 6555.72 crores and the external debt was Rs. 5400.78 crores. That does not show that the people of the country and the world have lost confidence in the Congress. That does not show that the external world has lost confidence in India or in the Congress Government.

There is one other thing that I would like to point out and that is about the utilisation of external assistance. The utilisation of external assistance has been to the tune of Rs. 6725.12 crores which shows that there has not been, as Mr. Dandeker said, an absolute stagnation everywhere and that there has been no sort of activity in industry. The Swatantra Party does not exist in

[Shrimati Ila Palchaudhury]

Bengal and in many other states, and in Orissa it is not feeling very well.

Lastly, I just want to contradict one thing that was said by Mr. Dandekar which hurts all Indians because we stand behind the Prime Minister and for the Prime Minister of India. He said that the image of our Prime Minister has been spoilt and that the British press have given some very bad press reportings. I do not know which ill-informed and prejudiced press it is that he quoted. But let me quote from the British journalists who came here, Mrs. Jegar, Mr. Frank Moraes and Mr. Maxwell. What have they to say about our Prime Minister? I quote them. The lady journalist, Mrs. Jegar, says:

> "It was only given to her to bear the strains of long and arduous journeys of such campigns which showed her to be a woman of tremendous endurance and courage."

Her image to the world has been projected as some thing illuminating. She says that if she writes a book about India, it will be the most illuminating one.

Then, this is what Mr. Frank Moraes says about our Prime Minister. I quote:

"She has an independent mind and is exetrmely observant and sensitive."

And Mr. Maxwell dwelt on Mrs. Gandhi's "sensitivity to the suffering of the people and their problems."

The ill-informed and prejudiced press may say anything. But the British press and the B.B.C. have, actually, everything to say that is good about our Prime Minister and about India.

As there is no time at my disposal, in conclusion, all that I have say is that I vehemently oppose the No-Confidence Motion because what they have said does not have any ground and I hope it will be thrown out lock, stock and barrel as it deserves. The Congress may have lost in West Beangal but I may assure the House that the Congress will come to power again without any doubt whatsoever.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri M. N. Reddy; just 5 minutes.

SHRI M. N. REDDY: (Nizamabad) I have been patiently waiting till this time. Telangana is put as the second point of the No-Confidence Motion. I come from that area. If you just give 5 minutes only, I would rather stage a walkout. I will have at last 10 minutes. I have heard all the speeches and you have allowed 30 to 40 minutes. When it comes to us, you allow only 5 minutes. Kindly allow me 10 minutes.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I will consider that. There is no question of argument here. So far as the Independents are concerned, they have exhausted the time. Because you come from that area, I thought, I will give you some time. Please try to be very brief.

19 hrs.

SHRI M. N. REDDY: At the outset I would like to submit that it is not a proper exercise of Parliamentary privilege to submit such motions. It makes a mockery of the Parliamentary procedure. I say this for two reasons. When the entire Opposition has not joined in submitting the no-confidence motion, Parliamentary procedure and conventions require that such a motion should not be presented. Another reason is this. But for the three Independents, the motion would have been lost even at the outset, thereby giving a wrong impression to the people that there are not even 50 Opposition members in the House. So, such opportunities should be used with the greatest care.

Two things have been referred to in the motion—Shiv Sena incidents and Telengana agitation. First of all I would like to ask whether we have any right to criticise and take account of the violent activities all over India when we ourselves are not setting better standards in this Parliament. I say this because I was very much pained to hear specially two observations from two leaders on either side: one was from Shri Randhir

Singh comparing the Opposition with cats and rats; this is the level of the debate the other was Mr. Vajpayee's reference to the Prime Minister which I did not like; I have a great respect for him. (*Interruptions*) Unless we avoid using violent language, there is no use criticising the violent activities in the country. We have to set better standards for the country..... (*Interruptions*)

SHRI M. L. SONDHI (New Delhi): I object to his linking Mr. Vajpayee who is one of India's distinguished Parliamentarians with Mr. Randhir Singh, a precious commodity that the Congress Party has got.

SHRI M. N. REDDY: About Telengana, unfortunately, the Telengana agitation has been clubbed with the violent activities of Shiv Sena. The Telengana agitation is in no way comparable with the violent incidents that happened in Bombay recently. Most of the members, inclubing some of the members from the Andhra region, did not understand the agitation and the aftermath of it. I would only submit that the agitation was very peaceful. No person died. Some harrowing tales were narrated; they are all untrue. If Mr. Ranga were here he would have vouched for, and confirmed what I have said.

I come from Nizamabad. It is a part of Telengana. In this district there are more than one lakh Andhras settled down permanently during the last 15 or 20 years, and not a single soul left Nizamabad during this agitation. Not only that, we have even an MLA and the District Congress President who are Andhras. The agitation was never directed against the people of Andhra, whether they are living in one district or another. It was only against the Government for not implementing the safeguards. It was actually organized by the students. I do not want to go into the merits of the agitation and all that, but I would like to say that no violent things occurred there. A section of the Press that was mostly prejudiced gave a distorted version and thereby aggravated the situation. There was not a single death. There was only one death during those activities and that too of a surveyor of some department in Nalgonda and it was reported that it was due to factions among themselves. Two or three persons died due to police firing, but not a single person died in the Telengana agitation. I want to make this very clear. It is absolutely wrong to exaggerate violence through Parliament. That does not help. On the contrary we should not give much publicity to such things. Here, it is entirely unfounded. I would like to tell you how the Telengana people were blamed. Many of the members do not know what actually happened. On 8th January the agitation started, and the Chief Minister took very prompt action inasmuch as he convened an all-party meeting and took a very sensible decision. That was on 19th January. After that, after the all-party accord which was signed by all party members, on 23rd January the students called off the agitation.

On 25 January, another section of students, a negligible section, which was asking for a separate Telengana, also called off the agitation. So then there was no ogitation at all; everything was officially called off. But on 27 January, three or four days after the calling off of the agitation all over Telengana, an agitation was started in the Andhra region saying that the properties of the Andhra people in the Telengana area should be protected, an agitation which was really unjustified, unwarranted and uncalled for. Instead of strengthening the hands of the administration and the Chief Minister they unnecessarily started that agitation, with the result that the military and the CRP had to be called out on the 29th January. In this situation, all the anti-social elements jumped into the fray and naturally did what was expected of them. But actually, there was no violence to persons. There are not many Andhras in any district there except in Nizamabad, and in the twin cities of Hyderabad. There was no violence. Throughout it was a peaceful agitation as far as the students were concerned. Later, the army was called out to protect properties from the anti-social elements.

Regarding the safeguards in 1956, when the States reorganisation was effected, the Fazl Ali Commission itself reported (in page 107 of their Report) that having regard to the backwardness, educational and economic, and the typically feudal atmosphere and environment in Telengana, it is better that it be kept for about five years after which period in the next election they could be asked to opt for merger and all that. They also said this about the safeguards:

> "We have carefully gone into the details of arrangements which may be made on these lines. It seems to us, however, that neither guarantees on the lines of the Shri Bagh Pact nor constitutional devices such as the Scottish evolution in the UK will prove workable or meet the requirements of Telengana during the period of transition. Anything short of supervision by the Central Government over the measures intended to meet the special needs of Telengana will be found ineffective."

These were the prophetic words of the Commission, that unless the Central Government took the responsibility of implementing the safeguards, they would be ineffective and useless. But the Central Government have not taken that responsibility on themselves, nor have seen that those safeguards were really implemented and all that.

A decision has recently been taken in regard to employment. There is a Central Act, Public Employment (Requirements as to residence) Act, 1957. This is applicable not only to Telengana in Andhra but also to Himachal Pradesh, part of Punjab and many other centrally-administered territories. On the lines of this Act, in Andhra Pradesh a separate Act was passed to be in force for five years giving rights to the Telengana people in the matter of employment. But that was not implemented. That is the grievance. With the result it was extended by another five years, and the extension period is expiring on 21 March this year. People thought that it might not be further extended. Again it was recommended for extension by another five years. That Bill is pending in the Rajya Sabha and it will come up soon in this House. The Home Minister has given an assurance about that.

The second point is regarding economic development. It was agreed under the gentlemen's agreement reached in 1956 prior to the formation of Andhra Pradesh that one-third of the funds from the entire budget in proportion to population would be spent in Telengana. Appropriations were accordingly made, but at the end of the financial year, it was found that somehow the whole of it could not be spent, with the result that there were Telengana surpluses eccumulating to several crores. According to the Chief Minister's own estimate, they were of the order of Rs. 30 crores, as mentioned in the Governor's Address to the another Assembly last November.

But a leader from the Telangana region said that the amount was about Rs. 70 crores and so an independent authority is now compiling the accounts. Such safeguards were given but they were not implemented. There is a propaganda that there has been a tremendous amount of violence and a great agitation in which the property & lives of the Andhra people were lost; that impression was created in many places and even among some Members here. I want to disabuse them of such an impression. No such thing happened; in fact the Telangana people did not ask for, or, at any rate a large section of these people are not asking for a separate Telangana. A few persons have asked for it and even they are no more asking for it. So, it should be treated with the sympathy it deserves. The State Government is not in a position to implement all the assurances at the moment; the Central Government should strengthen the hands of the Chief Minister and the State Government and provide funds which could be adjusted or set off against future grants; the funds should immediately be provided to the State Government so that they can implement the schemes and thereby create confidence among the people and the resentment could be brought down. Andhra was the first of the linguistic State

to be formed. Whatever emotional integration was there was affected adversely by this agitation and counter-agitation in Andhra Pradesh and the clock had been set back in the matter of emotional integration. If the Central and the State Governments and the leader of public opinion sincerely work for the integration and for the removel of these imbalances, creating thereby confidence in the minds of the people, it would not be difficult to solve the problem and lead towards national integration which is very dear to all of us. Therefore, I appeal to the Central Government not to be a disinterested spectator but seriously ponder over the situation and extend assistance in time so that the State Government could take steps to create confidence. So far as the services are concerned, the Chief Minister passed a very good order on 21 Jaunary but unfortunately that is being challenged in the Supreme Court and the orders had been stayed and we do not know when it will be decided upon. If financial assistance could be given the Chief Minister and the Government will be in a position to implement immediately some schemes of economic development. As I said earlier, distorted and exaggerated reports and rumours have caused this impression. Not a single person died. They are comparing this stuation to Bombay incidents and other places. I was a little pained when they tried to compare this movement with the Shiva Sena agitation and that is why I took this opportunity to explain the position in some detail.

SHRI KARTIK ORAON (Lohardage): It is rather unfortunate that Members become restless when there is no motion of no-confidence. Perhaps the Opposition is sick; if they are cured of their sickness they will be restless. I am reminded of an incident. When Panditji visited a mental hospital at Ranchi and somebody told a mental patient that Panditji had come, he said; *chal, chal sab bolte hain apneko Pandiji*. That shows the man was sick and he did not understand what he was doing; and he always thought that the other was wrong. For their failure to gain the confidence of the people members of opposition always bring in motions of no confidence; t what they had been doing.

As a matter of fact, the Opposition in the real sense has not been able to capture the imagination of the masses, and therefore, it has not been able to establish itself in an absolute majority at any place. They perhaps think that merely by combining a number of parties they will be able to establish their stand. But the strength lies in an individual party establishing an absolute majority. That, none of the parties has been able to establish except Congress.

These political parties are something like co-wives. They cannot get on together, but they want to form a Government. That is the reason why these Governments have been toppling; but they have been trying to throw the blame on the Congress or the Congress Governments.

SHRI S. M. BANERJEE: We cannot marry more than one woman. Has he got two wives ? (*Interruption*)

SARI KARTIK ORAON: You have got many wives. Please try to understand things and face the facts. Do not try to argue. Face the facts. That is your failure; that is because of your failure.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please address the Chair.

SHRI KARTIK ORAON: That is the reason why, as I explained, all these Governments have been toppling. Let the people of this country understand why these Governments are falling. These opposition Governments are living by exploiting the poor masses. They are not doing any thing. And they say that the Congress Government has been doing this, that and the other. Only that person makes a mistake who does some work; some people make mistakes and throw the blame on the others! The Congress Governments have been doing well, but the people have not got the eyes to see: what can you do ?

SARI S.M. BANERJEE: You are taxing the Prime Minister.

R' RI KARTIK ORAON: The point is the

F MR. DEPUTY-SPEAKER: Please conclude.

SHRI KARTIK ORAON: Some of the political parties are showing trends of blowing up. That is the sign of a fall. For instance, take Lachit Sena and the Shiv Sena and other such things. I cannot understand why the Prime Minister or the Home Minister should be made answerable or responsible for the action or omission of any parties or for any communal outburst or for the action and omission of any Chief Minister. Certainly, it would have been a very good thing for the DMK—which is in Opposition here—in Madras to bring in a no-confidence motion for the failure of their Chief Minister in Madras to settle the matter with the Maharashtra Government. That would be the right procedure; not here.

These are social evils; Lachit Sena and Shiv Sena and any Sena for that matter; they are social evils. Try to go anywhere in Bihar. There are a number of projects located there. But we do not have any Sena there. Not that we are not suffering. The point is this social evil has to be removed by having a cool, caculated mind, and not by having these inflammatory speeches. We do not pour a litre of petrol into the fire to quench the fire. But that is what the opposition have been doing. That is the excuse for speaking in this House. I say that there is no room for any no-confidence motion. You do not have the confidence of the people, and, at the same time, all the political parties are not combined. They are not united. Therefore, there is no question of any no-confidence motion arising.

I should like to say, is you bring about charges which you cannot establish, what is the use? What are you doing? You commit public mischief, and here you are committing a parliamentary mischief. That is what you are doing. If you are the Commander-in-Chief Sir and if some parties bring about charges which cannot be established, you can court-martial them.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The hon. Member's time is up.

SHRI KARTIK ORAON: Finally, this no-confidence motion is not only unfounded and baseless but it is quite out of place.

19.20 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Thursday February 20, 1969/Phalguna 1890 (Saka).

Printed at Navin Press, 6, Faiz Bazar, Delhi-6.